स्व. पं. केशव प्रसाद मिश्र

पंडित केशव प्रसाद मिश्र का नाम कलकत्ते के हिन्दी साहित्य-सेवियों में बड़े आदर के साथ लिया जाता है। आप साहित्यानुरागी, समाजसेवी एवं राष्ट्रभक्त थे। पंडित दुर्गा प्रसाद मिश्र के भतीजे के रूप में इन्हें तत्कालीन साहित्यकार जानते थे। किशोरावस्था से ही इन्होंने सामाजिक कार्यों में रुचि ली और अनेक सामाजिक कार्य किये, जिससे लोगों के मन में इनके व्यक्तित्व के प्रति आदर का भाव बन गया।

दुर्गाप्रसादजी के यहाँ गोष्ठी में भाग लेनेवाले विद्वानों, राजनीतिज्ञों एवम् समाज-सुधारकों के सानिध्य में रहने के फलस्वरूप केशवप्रसाद जी के व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास हुआ। सम्पादन के क्षेत्र में इनके व्यक्तित्व पर एक साथ ही इनके चाचा पंडित दुर्गाप्रसाद मिश्र तथा बाबू बालमुकुन्द गुप्त का सम्मिलित प्रभाव पड़ा। इनके लेखों में पांडित्य और सामाजिक चेतना दोनों ही स्वर मुखरित हुए हैं। कलकत्ते के बड़ाबाजार अंचल में इन्होंने अपने कई मित्रों के साथ मिल कर 'बड़ाबाजार लाइब्रेरी' की सन् १९०० में स्थापना की। इस संस्थान की ओर से उस समय सामाजिक और साहित्यिक कार्यक्रमों की रूपरेखा निर्धारित की जाती थी। इनकी सेवा-भावना से प्रभावित होकर इन्हें पुस्तकालय का प्रथम मन्त्री बनाया गया। इनकी सेवा-भावना का उत्कृष्ट उदाहरण बालमुकुन्द गुप्त की निम्नलिखित पंक्तियों में है – 'पंडित केशवप्रसाद मिश्र एक सेवा - परायण स्वदेशानुरागी युवक थे। पहिली बार जब कलकत्ता में प्लेग महामारी उग्र रूप धारण कर जन-संहार कर रही थी, तब प्लेग की विजिलेन्स कमेटी के सेक्रेटरी बन कर पंडित केशवप्रसादजी मिश्र ने बड़ाबाजार निवासियों की सेवा की थी। कोई घर एवं रोगी उनकी संभाल से नहीं छूटा था। उस सेवा की सराहना कलकत्ता कारपोरेशन के तत्कालीन चेयरमैन श्री पी० एस० ग्रीचर और बंगाल के छोटे लाट सर उडबर्न तक ने मुक्त कण्ठ से की।' पंडित केशवप्रसाद मिश्र का देहान्त २२ फरवरी सन् १९०२ ई० को हुआ। ●

स्व. लल्लू लाल

लल्लू लाल आगरा के निवासी गुजराती ब्राह्मण थे। इनका जन्म सं० १८२० वि० में और मृत्यु सम्वत् १८८२ वि० में हुई। इनका कार्यक्षेत्र कलकत्ता रहा। ये फोर्ट विलियम कालेज में नौकरी करते थे और कुछ पुस्तकें इन्होंने वहाँ के प्रशासन के सुझाव पर लिखीं। उनकी भाषा पर ब्रजभाषा का प्रभाव देखा जा सकता है।

'सिंहासन बत्तीसी', 'बैताल पचीसी', 'शकुन्तला नाटक', 'माधोनल', 'माधवविलास' 'सभा-विलास' और 'प्रेमसागर' आदि इनकी कृतियाँ हैं। इनकी 'बिहारी सतसई' की टीका 'लालचन्द्रिका' के नाम से प्रसिद्ध है। इन्होंने स्वयं 'संस्कृत प्रेस' खोला जहाँ न केवल इनकी अपनी पुस्तकें छपती थीं, बल्कि रामायण, महाभारत आदि पुरानी पोथियाँ भी छपती थीं। वे आधुनिक हिन्दी गद्य के जन्मदाताओं में से हैं। ●

स्व. पं. अम्बिका प्रसाद बाजपेयी

बीसवीं सदी का आरम्भ तिलक युग था, जिसकी मूल चेतना को जाग्रत करनेवाले हिन्दी पत्रों में 'भारत मित्र', 'मारवाड़ी बन्धु' और 'नृसिंह' प्रमुख थे। पंडित अम्बिका प्रसाद बाजपेयी की राजनीतिक मासिक पत्रिका

बड़ाबाजार के कार्यकर्ता –

'नृसिंह' का प्रकाशन नवम्बर १९०७ ई० में हुआ था। आरंभ में इस पत्र को पण्डित गोविन्दनारायण मिश्र एवं पंडित दुर्गाप्रसाद मिश्र का सक्रिय सहयोग प्राप्त था। 'नृसिंह' के चौथे अंक में पण्डित बाजपेयी ने स्वाधीनता की आवश्यकता पर जोर दिया था और लिखा था कि स्वराज्य के अभाव में ही इस देश से ४५ करोड़ रुपये प्रति वर्ष इंगलैण्ड चले जाते हैं।

पण्डित अम्बिका प्रसाद बाजपेयी और पंडित लक्ष्मीनारायण गर्दे तिलक युग के पत्रकार थे, जिनकी स्पष्ट रूप से सक्रियता गांधी युग के विभिन्न पत्रों में दिखायी पड़ी। हिन्दी पत्रकारिता के बारे में पं० अम्बिका प्रसाद बाजपेयी के संस्मरण एवं निबन्ध 'विशाल भारत' ने प्रकाशित किये। कलकत्ता से तेजस्वी साप्ताहिक 'भारत मित्र' का दैनिक संस्करण सन् १९१२ में प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक पं० बाजपेयी के अनुरोध पर पंडित बाबूराव विष्णु पराड़कर ने भी इस पत्र को सहयोग दिया। पराड़करजी की गिरफ्तारी के बाद लक्ष्मीनारायण गर्दे बाजपेयी जी के सहयोगी के रूप में भारत मित्र के सम्पादकीय विभाग में आ गये। बाजपेयी जी भारत मित्र में 'महासमर की गति' शीर्षक टिप्पणी लिखा करते थे। १९१३ में इन्होंने विश्व युद्ध की आशंका प्रकट की थी और वह सही सिद्ध हुई। निःसन्देह इनके अथक परिश्रम से 'भारत मित्र' का आधार सुदृढ़ हो गया था।

४ अगस्त १९२० को आपने 'स्वतन्त्र' नामक दैनिक पत्र प्रकाशित किया जो विशेष अवसरों पर विशेषांक भी प्रकाशित करता था। 'स्वतन्त्र' साहित्यिक गतिविधियों एवं भाषा के प्रति बड़ा सचेत था। ●

स्व. यशोदानन्दन अखौरी

बड़ाबाजार लाइब्रेरी की स्थापना संवत् १९५७ (सन् १९०० ई०) में हुई थी। कलकत्ते में उसके पहिले हिन्दी भाषा-भाषियों की कोई भी साहित्यिक संस्था नहीं थी। यशोदानन्दन अखौरी बड़ाबाजार लाइब्रेरी के प्रथम पुस्तकाध्यक्ष थे। बाद में पुस्तकालय के प्रति अपनी निष्ठा एवं लगन के कारण कालक्रम से आप उसके सभापति हुए। इन्होंने संस्मरणात्मक निबन्ध 'बाबू बालमुकुन्दजी गुप्त के कतिपय अनुकरणीय गुण' शीर्षक से लिखा था। इसी संस्मरण में प्रसंगवश उल्लेख किया गया है कि बड़ाबाजार लाइब्रेरी की स्थापना के पूर्व जहाँ एक भी संस्था नहीं थी, वहाँ तत्पश्चात् अनेक संस्थाएँ स्थापित की गयीं – जैसे, पिंजरापोल सोसायटी, मारवाड़ी एसोसियेशन, श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय। धीरे-धीरे बड़ाबाजार की जनता में जागृति आयी।

सन् १९०८ में पण्डित सखाराम ने विभक्तियों का प्रश्न उठाया था, जिस पर हिन्दी पत्रों में बड़ी चर्चा चली। इसी के फलस्वरूप 'हिन्दी साहित्य परिषद' की स्थापना हुई थी। परिषद की स्थापना के पत्र पर जिन नौ हिन्दी हितैषियों के हस्ताक्षर थे, उनमें बाबू यशोदानन्दन अखौरी भी शामिल थे।

यशोदानन्दन अखौरी और उमापति दत्त शर्मा की देख-रेख में 'एक लिपि विस्तार परिषद' के मुख पत्र के रूप में 'देवनागर' का प्रकाशन सन् १९०७ ई० में हुआ था। स्वरूप और उद्देश्य की दृष्टि से भारतीय पत्रकारिता में 'देवनागर' का अप्रतिम स्थान है। ●



स्व. पं. माधव शुक्ल

पंडित माधव शुक्ल का जन्म सन् १८८१ ई० में हुआ था। इनके पिता पण्डित रामचन्द्र शुक्ल थे। आप बड़े मेधावी और जीवट वाले थे। आप में कार्य करने की अद्भुत क्षमता और निष्ठा थी। उस समय देश में राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और जातीय चेतना शिखर पर थी। लाल, बाल, पाल का जमाना जोरों पर था। इलाहाबाद में जब आन्दोलन की आग भड़की, तब शुक्लजी किसी से पीछे क्यों रहें? वे भी एक टोली का अलग नेतृत्व कर रहे थे।

पंडित माधव शुक्ल किशोरावस्था में ही साहित्य में महारत हासिल कर चुके थे। आप इलाहाबाद बैंक में नौकरी करते थे। इलाहाबाद से बाद में कलकत्ता आ गये। यहाँ तब वंग भंग आन्दोलन चरम सीमा पर था।

सन् १९१३ में कलकत्ते में 'हिन्दी नाट्य परिषद' की स्थापना हुई जिसके वे जनक थे। पद और पैसे से अधिक महत्व वे प्रतिष्ठा और कर्मनिष्ठा को देते थे। शुक्लजी हिन्दी के पक्के हिमायती और कठोर साधक थे। कविता, नाटक, अभिनय सभी में वे सिद्धहस्त थे। 'भामाशाह की राजभक्ति' का मंचन हो रहा था, उसमें वे 'प्रताप' की भूमिका में थे। 'झाँसी की रानी' नाटक खेला जा रहा था, उसमें कविता पाठ कर रहे थे और जब 'चन्द्रगुप्त' नाटक खेला जा रहा था, तब सेल्यूकस की भूमिका अदा कर रहे थे और वह भी बड़ी खूबी के साथ।

तत्कालीन सरकार जब ऐसे साहित्य पर जो जनान्दोलन को बल प्रदान करे, प्रतिबंध लगा रही थी तब उसमें शुक्लजी की भी रचनायें जब्त कर ली गयीं। सरकार इन पर कड़ी निगरानी रखने लगी, तब भी ये माने नहीं। शुक्लजी ने नाम बदल कर लिखना शुरू किया। वे अपनी सशक्त और निर्भीक रचनाएँ छद्म नाम से ही लिखते रहे। उनकी रचनाओं में—क्या कविता, क्या नाटक सब में देश-प्रेम की आग थी। उनका व्यक्तित्व विराट था। अपने समय के नौजवानों में स्वतन्त्रता संग्राम का अलख जगाने के लिए वे चिरस्मरणीय रहेंगे। ●

स्व. सेठ कन्हैयालाल पोद्दार

सुप्रसिद्ध सेठ 'ताराचन्द घनश्यामदास' के वंशधर सेठ जयनारायण पोद्दार के ज्येष्ठ पुत्र सेठ कन्हैयालाल पोद्दार का स्थान दिग्गज साहित्य विशारदों में था। आप अलंकार शास्त्र के मर्मज्ञ थे। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने एक समय आपकी अतुलनीय प्रशंसा की थी।

आप का जन्म संवत् १९३५ में हुआ। आप बुद्धिमान एवं कुशाग्र थे, पर साथ ही विनम्र एवं सज्जन थे। हिन्दी कविता की ओर आप की रुचि आरम्भ से ही थी। आपने संस्कृत के कई काव्य-ग्रंथों व धर्म-ग्रंथों का अध्ययन किया। लक्ष्मीवन्त के घर सरस्वती का भक्त होना आप की विशेषता रही है। आपने संवत् १९४७ में 'भर्तृहरि शतक' का अनुवाद किया। 'महाकवि भारवि' शीर्षक आप का विद्वतापूर्ण लेख 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित हुआ। 'अलंकार

प्रकाश' नामक ग्रन्थ आपने लिखा जो हिन्दी में अलंकार विषयक उत्कृष्ट ग्रन्थ माना जाता है। आप द्वारा रचित 'काव्य कल्पद्रुम' उत्तमा, मध्यमा तथा आगरा विश्वविद्यालय के एम. ए. कोर्स में रही है। संस्कृत श्लोकों का समश्लोकी हिन्दी अनुवाद करने में आप बड़े पटु रहे। आपने 'हिन्दी मेघदूत विमर्श' नामक ग्रन्थ की रचना कर 'मेघदूत' का समश्लोकी पद्यानुवाद व गद्यानुवाद किया, जिसका हिन्दी समाज में आज भी आदर है। आपने 'संस्कृत साहित्य का इतिहास' ग्रन्थ की भी रचना की।

आपने समय निकाल कर समय-समय पर 'प्रेम सरोवर', 'कोकिल बम्बई-तट', आदि कई मनोहारी पद्यों की रचना की। ●



स्व. पं. गांगेय नरोत्तम शास्त्री

संत कवि कबीर ने ठीक ही कहा है –

जाको राखे सांइयां मारि न सकि है कोय।
बाल न बांका करि सके जो जग बैरी होय॥

स्व० पंडित गांगेय नरोत्तम शास्त्री जम्मू के मूल निवासी थे। बाद में काशी के प्रवासी हो गये। जब ये दो वर्ष के थे तभी नौका दुर्घटना में इनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया। गंगा की लहरों ने इन्हें किनारे लगा दिया और तत्कालीन मूर्धन्य विद्वान महामहोपाध्याय पं० शिवकुमार शास्त्री द्वारा इन्हें गांगेय की संज्ञा मिली। प्रबल मेधावी होने के नाते शास्त्रीजी विद्या-विकास के पथ पर त्वरित गति से आगे बढ़े। पंडित मदनमोहन मालवीय ने इनके आकर्षक व्यक्तित्व और पाण्डित्य से प्रभावित होकर इन्हें काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में अध्यापक नियुक्त किया था। आचार्य कृपलानी के साथ सन् १९२० ई० में असहयोग आन्दोलन में भाग लेकर इन्होंने विश्वविद्यालय से त्याग पत्र दे दिया। राष्ट्रीयता और स्वाधीनता की रक्षा के लिए संस्कृत के विद्यार्थियों ने 'संस्कृत छात्र समिति' का गठन किया जिसके आप अध्यक्ष थे। व्याकरणाचार्य के छठे खण्ड की परीक्षा का स्वयं बहिष्कार कर आपने असहयोगी छात्रों का नेतृत्व किया। इनकी विद्वता और तेजस्विता का सम्मान कर डॉ० भगवानदास ने असहयोगी विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए प्रतिष्ठित काशी विद्यापीठ में संस्कृत-हिन्दी के अध्यापक के रूप में इनकी नियुक्ति की।

सन् १९२२ ई० में शास्त्रीजी कलकत्ता आये। यहाँ के प्रसिद्ध वस्त्र-व्यवसायी पंडित विनायक मिश्र के घराने में १९२३ ई० में श्रीमती रूपेश्वरी देवी के साथ इनका विवाह हुआ। तदुपरान्त ये स्थायी रूप से कलकत्ते में ही बस गये। शास्त्रीजी सरस कवि, प्रखर वक्ता, धर्म और संस्कृति के प्रति निष्ठावान देश-भक्त थे। कलकत्ते में हिन्दी भाषा और साहित्य के उन्नयन के लिये आप निरन्तर, प्रयत्नशील रहे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग एवं काशी नागरी प्रचारिणी सभा के आप वरिष्ठ कार्यकर्त्ता थे। आप ही के अनुरोध से सन् १९३१ ई० में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का बीसवां अधिवेशन हुआ था। उक्त अधिवेशन में आयोजित अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के आप स्वागताध्यक्ष थे। सन् १९३७ ई० में मद्रास में अनुष्ठित हिन्दी साहित्य सम्मेलन के तहत आयोजित

कवि सम्मेलन के आप अध्यक्ष बनाये गये थे। बंग प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कर्णधारों में आप भी एक थे। सम्मेलन के प्रचार-प्रसार में आप की अग्रणी भूमिका रही। 'बजरंग परिषद' के संरक्षक एवं सभापति के रूप में आपने कलकत्ता में हिन्दी नाटकों के नियमित मंचन को प्रोत्साहित किया था। संस्कृत काव्य रचना एवं धारा प्रवाह वक्तृता के लिए आप विख्यात थे। बंगला और उर्दू साहित्य का भी आप को अच्छा ज्ञान था। आपने संस्कृत और हिन्दी में अनेक ग्रंथों की रचना की जिनमें 'अरुण तरंगिनी' एवं 'मालिनी-मंदिर' का ही प्रकाशन हो पाया, बाकी अप्रकाशित हैं।

सनातन धर्म की गरिमा की रक्षा के लिए शास्त्रीजी सदैव तत्पर रहे। स्वाधीनता के बाद स्वामी करपात्रीजी द्वारा छेड़े गोवध बंदी आन्दोलन में भाग लेकर आप भी बंदी बना लिए गये थे। डॉ० श्यामाप्रसाद मुखर्जी से आप का घनिष्ठ परिचय था। २६ अक्टूबर १९५५ ई० को कलकत्ते में आप का स्वर्गवास हो गया। अद्भुत कार्य क्षमता, धर्म के प्रति निष्ठा, देशप्रेम तथा हिन्दी के हिमायती के रूप में आप सदैव याद किये जायेंगे। ●



स्व. पं. गोविन्द नारायण मिश्र

आचार्य गोविन्द नारायण मिश्र भारतीय परम्परा के महिमामय प्रतीक थे। आपका जन्म २९ अक्टूबर १८५९ (कार्त्तिक शुक्ला ३) को हुआ। आप हिन्दी, संस्कृत एवं प्राकृत के विद्वान तो थे ही, बंगला, गुजराती, मराठी एवं अन्य भाषाओं पर भी आपका अच्छा अधिकार था। अपने प्रकाण्ड पांडित्य के कारण इन्हें उस काल का भाषा का मर्मज्ञ एवं साहित्य और व्याकरण का आचार्य स्वीकार किया गया। भाषा की प्रकृति, स्वरूप एवं व्याकरण के सम्बन्ध में 'हित-वार्ता' में प्रकाशित इनके निबन्ध विशिष्ट ज्ञान के प्रतीक हैं। उस युग में भाषा का प्रचार हिन्दी सेवा का प्रमुख अंग माना जाता था। इसी दृष्टि से इन्होंने 'हितवार्ता' नामक पत्र प्रारम्भ किया। भाषा-प्रचार की दृष्टि से वे स्वयं दुकानों एवं गद्दियों पर जाकर समाचार पढ़ कर भी सुनाया करते थे। सम्वत् १९५८-५९ में पं० सदानन्द मिश्र के साथ मिल कर उन्होंने 'सार सुधानिधि' साप्ताहिक भी निकाला, जिसके वे सहायक सम्पादक थे। सरस्वती, उचित वक्ता, धर्म दिवाकर एवं माधुरी आदि अनेक पत्र-पत्रिकाओं में वे प्राय: 'एक वृद्ध साहित्यसेवी' के नाम से लिखते थे, किन्तु इनके अधिकांश लेख अब लुप्त हैं। 'श्री गोविन्द निबन्धावली' में इनके लेख एवं द्वितीय हिन्दी-साहित्य सम्मेलन का इनका अध्यक्षीय भाषण संग्रहित है। बालकों के लिए वैज्ञानिक पद्धति पर हिन्दी की 'शिक्षा-सोपान' भी इन्होंने लिखी। हिन्दी बंगवासी में इनके द्वारा लिखित व्यंग्य स्तम्भ 'आत्माराम की टें टें' साहित्य जगत में बहु चर्चित रहा। सारस्वत सर्वस्व, प्राकृत विचार, विभक्ति विचार एवं कवि और चित्रकार (बाणभट्ट की शैली पर) इनकी मौलिक रचनायें है। बंगाल में हिन्दी की पताका फहरा कर कलकत्ता को हिन्दी का मुख्य केन्द्र बनानेवाले इस मूर्धन्य-साहित्य महारथी का १९२३ ई० की २३ अगस्त को ६४ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। ●

स्व. पूरण चन्द नाहर

इस शताब्दी के प्रारंभ में इतिहास, कला, शोध, अनुसन्धान, साहित्य, प्राचीन निधि का संग्रह, संस्कृति का परिपोषण आदि दिशाओं में अमूल्य सेवा करनेवालों में आप का नाम आता है। आप का जन्म भी १८७५ ई० के समय में हुआ, जब देश में पुनर्जागरण



का काल आया था। देश को स्वाधीन करानेवाले महान नेताओं का जन्म भी १९ वीं सदी के उत्तरार्ध में ही हुआ था। आप के पिता बाबू सिताबचन्द नाहर थे। आप ने बंगाल के मारवाड़ियों में सबसे पहले बी० ए० पास किया और फिर एम० ए० होकर वकालत की परीक्षा पास की। आपने कलकत्ता में एक आदर्श पुस्तकालय स्थापित किया, जो आज भी मारवाड़ी समाज के लिए अभिमान की वस्तु है।

१९१४ ई० में मारवाड़ी समाज अपनी तरुणाई की ओर जा पहुँचा। अब तक यह समाज दलाली, गल्ला या कपड़े का व्यवसाय करता था, पर इस समय स्व० देवी प्रसाद खेतान एटर्नी बन गये और पूरणचन्द नाहर वकील। सर आशुतोष मुखर्जी ने आपकी विद्वता को देख कर आप को हिन्दी का परीक्षक नियुक्त कर दिया था। हिन्दी का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए आप तत्कालीन प्रसिद्ध पत्र 'भारत मित्र' में काम करने लगे।

भारतीय संस्कृति के बारे में अंग्रेज शासक और अधिकारी उल्टी-सीधी अपमान-जनक बात करते थे, पर आप उसे स्वीकार नहीं करते थे। उसी समय से आप भारतीय संस्कृति पर अनुसन्धान करने लगे। आपने 'कुमार सिंह हॉल' के संग्रहालय की स्थापना की, जिसे अंग्रेज विद्वान भी देखने जाते थे।

आप ने ६२ वर्ष की आयु पायी और १९३६ ई० की ३१ मई को आपका स्वर्गवास हुआ। आप की कृतियों में 'प्राकृतिक सूक्त रत्नमाला' और 'जैन लेख संग्रह' (तीन भाग) एवं 'नाना स्थानों के मूर्ति चरण' आदि हैं।

भारतीय संस्कृति और कला के साधकों, पुरातत्व शोध में दत्त-चित्त प्रतिष्ठानों तथा विद्वानों ने एक स्वर से आप के निधन पर शोक प्रकट किया, जिनके उद्‌गारों का संग्रह कुमार सिंह हॉल में आज भी रखा हुआ है। शोक प्रकट करनेवालों में विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर, पं० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, आदि उल्लेखनीय हैं। ●

स्व. झम्मन लाल जैन

जन्म सम्वत् १९३७, शिक्षा : तर्क-तीर्थ

उद्‌भट विद्वान, निर्भीक विचारक, ओजपूर्ण वक्ता एवं लब्ध - प्रतिष्ठ धर्माध्यापक,



आप १० वर्षों तक संस्कृत एसोसियेशन कालेज (कलकत्ता) में 'उपाधि' परीक्षक रहे। शिखरजी, खण्डगिरि, राजगिरि, कलकत्ता, कानपुर प्रभृति २४ स्थानों के आप सुप्रसिद्ध जिन - बिम्ब प्रतिष्ठाचार्य थे। 'श्री लमेचू दिगम्बर जैन समाज का इतिहास' शीर्षक ग्रन्थ की रचना आपने की थी। आप स्व-परम्पराओं के प्रति दृढ़, आस्थावान, स्वाध्याय प्रेमी एवं तत्व-मर्मज्ञ थे। ●

स्व. पं. सखाराम गणेश देउस्कर

आप का जन्म १८८० ई० में महाराष्ट्र में हुआ, पर कर्मस्थली कलकत्ता महानगरी ही बनी। आप लोकमान्य तिलक के अनुयायी थे। आप हिन्दू इतिहास एवं राजनीति के प्रखर विद्वान थे। 'विद्या का बृहस्पति'



कहलानेवाले बंगाल प्रान्त के प्रसिद्ध बंगला पत्र 'हितवादी' के आप प्रधान सम्पादक थे। आपने 'बाजीराव' एवं 'देशेर कथा' जैसी पुस्तकें बंगला में लिखकर समाज में जागृति उत्पन्न की।

१९०२ ई० में स्थापित 'वैश्य सभा' ने बड़ाबाजार में विशेष कर मारवाड़ी समाज में सांस्कृतिक एवं राजनैतिक चेतना उत्पन्न करने के लिए 'बुद्धिवर्द्धिनी सभा' का गठन किया जिसका प्रमुख कार्य नवयुवकों के ज्ञानवर्द्धन एवं वक्तृता-शक्ति का विकास करने के लिए 'भाषण-प्रतियोगिताओं' का आयोजन करना था। आप न केवल इस संस्था का कुशल सभापतित्व ही करते थे, वरन् स्वयं विषय पर भाषण देकर युवकों का ज्ञानवर्द्धन करते और उनमें देशभक्ति का मंत्र फूंकते थे। आपने नियम बना दिया था कि प्रत्येक सदस्य को भाषण देना अनिवार्य है। इससे सब लोग गलत-सही कुछ-न-कुछ बोलते थे जिससे बोलने की हिचकिचाहट जाती रहती। आपके बारे में स्व० पं० माधव प्रसाद मिश्र ने लिखा है – 'बड़ेबाजार के विद्याविहीन मारवाड़ियों को एक महाराष्ट्रियन युवक राजनीति की शिक्षा दे रहा है तथा युवकों में चेतना जगा रहा है।' 'बुद्धिवर्द्धिनी सभा' के मंच से आपने न केवल 'स्वदेशी' वस्तुओं को उपयोग में लेने का प्रचार कराया वरन् युवकों से स्वदेशी धारण करने की प्रतिज्ञा भी करवाई। १९०५ ई० में जब बंग-भंग की बात चली, तो आपने विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय में व्याख्यान-वाचस्पति पं० दीनदयालु शर्मा से बंग-भंग विरोध एवं स्वदेशी-प्रचार पर भाषण दिलवाया जिससे अंग्रेजों से संबंध रखनेवाले और विलायती माल बेचनेवाले मारवाड़ी व्यवसायी अत्यन्त झुंझला उठे थे।

संवत् १९६१ में पं० माधव शुक्ल के उद्योग से स्थापित 'हिन्दी साहित्य सभा' में पं० दुर्गा प्रसाद मिश्र, पं० छोटूलाल मिश्र, पं० गोविन्द नारायण मिश्र, शिवचन्द्र भरतिया जैसे साहित्यिक महारथियों के साथ आप भी विशेष रूप से सक्रिय रहे। ●

स्व. लाला श्रीनिवास दास

आप का जन्म विक्रमी सं० १९०८ में मारवाड़ी समाज में हुआ। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवम् आप के जीवन में बड़ी समानता है। विद्या एवम् व्यवसाय में आप की समान गति थी।

आपने बड़ी कार्यकुशलता के साथ २१ वर्ष की आयु में पारखीजीवालों के प्रसिद्ध फर्म में नौकरी की। इसके बाद आप 'आनरेरी मैजिस्ट्रेट' रहे। तत्पश्चात् आपने हिन्दी जगत को सप्तस वरण, संयोगिता स्वयंवर, रणधीर प्रेम मोहिनी और परीक्षा गुरु जैसी अनुपम कृतियाँ दीं। ३६ वर्ष की अल्पायु में ही आपका स्वर्गवास हो गया। ●

स्व. पं. माधव प्रसाद मिश्र

आपका जन्म १८७१ ई० में हुआ। 'सारस्वत सर्वस्व' एवं 'वैश्योपकारक' पत्रों के आप सम्पादक रहे। दोनों ही पत्रों में आप के सशक्त लेख छपते थे। १६०५ ई० में कांग्रेस के गरम दल में आप शरीक हुए।



बंग-भंग आन्दोलन में जन-चेतना को जागृत करने में आपके लेख, कविताएँ, नाटक अत्यन्त सहायक सिद्ध हुए। आप उच्च कोटि के पत्रकार, सफल लेखक और नाट्यकार थे। आप विशुद्धानंद सरस्वती विद्यालय के संस्थापकों में से एक थे। आप का निधन १६०७ ई० को हो गया। ●

स्व. पं. सदानंद मिश्र

१६ वीं सदी के उत्तरार्द्ध में जितने प्रखर तेजस्वी पत्रकार हुए, उनमें पं० सदानन्द मिश्र का नाम उल्लेखनीय है।

१३ जनवरी सन् १८७६ ई० को जब 'सार-सुधा-निधि' का प्रकाशन हुआ, पं० सदानन्द मिश्र उसके सम्पादक थे। यों भी कहा जा सकता है कि जब पं० दुर्गाप्रसाद मिश्र ने भारत मित्र छोड़ा, तब पं० सदानन्द मिश्र, पं० गोविन्दनारायण मिश्र और पं० शम्भुनाथ मिश्र के सहयोग से उन्होंने 'सार-सुधा-निधि' का प्रकाशन किया। 'सार-सुधा-निधि' उस समय का तेजस्वी पत्र था, जो अपनी उग्रवाणी के चलते सरकारी कोप का शिकार बना और १८६० ई० के बाद बन्द हो गया। आप की कलम में वह शक्ति थी, जो जन-जन में स्वतन्त्रता की अग्नि को प्रज्वलित करती थी।

आप समझते थे कि पत्रकार की भूमिका लोकनायक की भूमिका होती है। आप किसी भी मूल्य पर वाणी की स्वाधीनता की रक्षा करना चाहते थे। आप ने 'सार-सुधा-निधि' के २३ जून १८७६ ई० के अंक में लिखा – 'प्रजा के आवेदन पर ध्यान नहीं देना अति संकीर्ण राजनीति है। इस प्रकार की नीति का अवलम्बन करने वाला राज्य भी बहुत दिन तक रहने का नहीं।' ●

स्व. पूरण चन्द शामसुखा

आप का जन्म मुर्शिदाबाद के अजीमगंज शहर में १ अगस्त १८८२ ई० में हुआ। आप के पिता महताबचन्द शामसुखा थे। एण्ट्रेंस परीक्षा पास कर आप पहले महाराज बहादुर सिंह और फिर पूरणचन्द नाहटा के यहाँ काम करने लगे।

आप जैन-धर्म के आधार पर लेख और कहानियाँ लिखा करते थे, जिनमें धर्म का तत्व प्रधान होता था। श्वेताम्बर और दिगम्बर सम्प्रदायों की उत्पत्ति के बारे में आप के लेख विचारमूलक हैं। आप की कृति 'उत्तराध्ययन सूत्र' है जिसे कलकत्ता

विश्वविद्यालय ने प्रकाशित किया। यह जैन आगम का एक प्रसिद्ध प्राचीन जनप्रिय ग्रन्थ है। इसका बंगला अनुवाद आप ने ही किया।

आप ने बंगला भाषा में रचना कर बंगला-भाषियों को जैन-धर्म से अवगत कराया और बंगाल के विद्वानों में फैली जैन-धर्म सम्बन्धी भ्रान्त धारणाएँ दूर कीं। आप ने अपने एक बंगला ग्रन्थ का अंग्रेजी में 'लार्ड महावीर-हिज लाइफ एण्ड डाक्टरीन' शीर्षक से अनुवाद भी किया।

आप जैन संस्थाओं के कार्यक्रमों में भाग लेते रहते थे। अजीमगंज श्वेताम्बर सभा के आप सभापति थे। मुर्शिदाबाद एसोसियेशन से भी आप सम्बद्ध थे।

आप ने अपनी बड़ी पुत्री की शादी समाज-बहिष्कृत रणजीत सिंह दुधोड़िया के साथ कर के अन्धरूढ़ियों को उखाड़ फेंकने के लिए प्रचण्ड कार्य किया। रणजीत सिंह विद्वान, धनवान और चरित्रवान थे, पर चूंकि वे विलायत हो आये थे, इसलिए समाज-बहिष्कृत हो गये थे।

आप का निधन १६ अप्रैल १९६७ ई० को ८५ वर्ष की अवस्था में हुआ। ●

पं. झाबर मल्ल शर्मा

आप का जन्म लगभग ९३ वर्ष पूर्व जयपुर में हुआ। १९०१ ई० में आप साहित्य-क्षेत्र में उतरे। सर्वप्रथम आप ने 'कलकत्ता समाचार' और 'हिन्द-संसार' का सम्पादन किया। इसके बाद 'बालमुकुन्द गुप्त स्मारक ग्रन्थ', 'गुप्त निबन्धावली', 'माधव मिश्र निबन्धमाला', 'गुलेरी-गरिमा' आदि विशिष्ट ग्रन्थों का सम्पादन कर आपने हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि की। आप मौलिक निबन्धकार, सम्मानित पत्रकार और यशस्वी लेखक के रूप में प्रख्यात हैं। हिन्दी के लिए आप की साधना से प्रभावित होकर उत्तरप्रदेश सरकार ने आप को विशिष्ट साहित्यकार के रूप में सम्मानित किया। ●



स्व. महादेव प्रसाद सेठ

आप का जन्म मिर्जापुर में हुआ। आप हिन्दी साहित्य के अनन्य पारखी और इतिहास के मर्मज्ञ थे। कलकत्ते से 'मतवाला' पत्र का प्रकाशन कर आप ने 'हिन्दी पत्रकारिता' की धार को वह पैनापन दिया जिसने समाज को चमत्कृत कर दिया। 'मतवाला' ने ही हिन्दी जगत को 'निराला' जैसा महाकवि दिया। 'मतवाला' का सम्पादन-मण्डल भी मतवाला ही था। वह किसी को तनिक भी परवाह नहीं करता था और 'चाबुक' स्तम्भ से दम्भी राजनीतिज्ञों, समाज के रूढ़िवादियों एवं नकली साहित्यकारों पर समयोचित सशक्त प्रहार करता था। 'चाबुक' स्तम्भ में 'निराला' और 'उग्र' लिखा करते थे। आप और शिवपूजन सहाय उस चाबुक को और मजबूत तथा चोटीला बनाते थे। आप बड़े गुणग्राही, आत्मीय, मिलनसार और स्वाभिमानी व्यक्ति थे। महिषादल के राजघराने की तरह आप भी 'निराला' की सुख-सुविधा का पूरा ध्यान रखते थे।

आप विद्वत मण्डली से सर्वदा घिरे रहते थे। प्रौढ़ावस्था में ही सेठजी इस धरती से उठ गये। ●

स्व. महामहोपाध्याय सकल नारायण शर्मा

आपका जन्म बिहार प्रान्त के भभुआ स्टेशन के पास एक मध्यवर्गीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आप हिन्दी तथा



संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। लगभग १९१६ ई० से कलकत्ता ही आपका कार्यक्षेत्र बन गया था। उन दिनों कलकत्ता विश्वविद्यालय के उपकुलपति स्वनाम धन्य आशुतोष मुखर्जी थे। वे बड़े विद्या व्यसनी थे। विद्वान चाहे जिस भाषा का ही क्यों न हो, वे उसे बड़ा सम्मान देते थे। उन्होंने ही कलकत्ता विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में 'हिन्दी भाषा' को सर्वप्रथम मान्यता दिलवायी एवम् आपको हिन्दी के प्रथम प्राध्यापक के रूप में नियुक्त किया। उनकी आकांक्षा के अनुकूल प्राध्यापक पद की गरिमा का निर्वाह करना कठिन था, पर महामहोपाध्याय इस कसौटी पर खरे उतरे। आप को हिन्दी के आदि प्राध्यापक के रूप में सदा याद किया जायेगा। ●

स्व. लक्ष्मीनारायण गर्दे

हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में अहिन्दी भाषा-भाषी पत्रकारों की महत् भूमिका रही है। आपका जन्म यद्यपि महाराष्ट्र में हुआ पर कर्मस्थल कलकत्ता, विशेषतया बड़ाबाजार क्षेत्र ही रहा। तत्कालीन प्रख्यात पत्र 'भारत मित्र' के आप दो वर्ष तक सम्पादक रहे। अपनी सशक्त लेखनी के बल पर स्वल्पकाल में ही बहु-चर्चित हो गये। बड़ाबाजार लाइब्रेरी उन दिनों साहित्यिक जमघट का केन्द्र थी। साहित्य की विभिन्न विधाओं एवं राजनैतिक गतिविधियों पर वहाँ जम कर बहस होती थी। आप भी उसमें प्रमुखता से भाग लेते थे। आप हिन्दी के पक्के हिमायती एवं महान देशभक्त थे। सफल निबन्धकार और पत्रकार के रूप में आप सर्वदा याद किये जायेंगे। ●

स्व. पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

आपका जन्म सं० १९५३ में हुआ था। आप की प्रारंभिक शिक्षा महिषादल (बंगाल) में ही हुई यद्यपि आप उन्नाव के कान्यकुब्ज



ब्राह्मण थे। अल्पायु में ही आपको माता-पिता एवं पत्नी का वियोग सहना पड़ा। पारिवारिक उलझनों ने इन्हें इधर-उधर भटकने के लिए बाध्य किया—साथ ही अक्खड़ स्वभाव और मस्ती ने भी तदर्थ प्रेरित किया। इन सब संघर्षों के बावजूद आपने सतत् अध्ययन से संस्कृत, अंग्रेजी, बंगला और हिन्दी भाषाओं पर पूरा अधिकार प्राप्त कर लिया।

१९२०-२२ ई० में २५ वर्ष की उम्र में आप कलकत्ता आये। सर्वप्रथम रामकृष्ण आश्रम के तत्वावधान में प्रकाशित 'समन्वय' पत्रिका का आपने सम्पादन किया। १९२३ ई० में श्रावण पूर्णिमा पर 'मतवाला' पत्रिका का जब प्रथम अंक निकला, तब मुख-पृष्ठ पर आप की कविता छपी। मतवाला में गरगज सिंह वर्मा के छद्म नामसे आप 'चाबुक' स्तम्भ में प्रभावशाली व्यंग्य लिखते थे। सशक्त पत्रकार और औघड़दानी तो आप थे ही, पर आपकी साहित्यिक कृतियों ने न केवल हिन्दी भाषा को रूढ़िवादिता से मुक्त किया वरन् अपनी समर्थता और निरालेपन से एक नये युग का सूत्रपात भी किया।

प्रसाद, पंत और महादेवी के साथ निराला भी 'छायावादी काव्य' के प्रमुख स्तम्भ माने जाते हैं। साथ ही आलोचकों ने आपको हिन्दी काव्य में 'प्रगतिवाद' एवम् 'मुक्त छन्द' का जनक भी माना है। आपके साहित्य में जहाँ सम्पूर्ण मानवता के कल्याण की ओर लक्ष्य है वहीं दासता की जंजीरें तोड़ने के लिए भारतवासियों को जाग्रत करने की चेष्टा भी की गई है। प्राचीन संस्कृति से मोह, दलितों के प्रति सहानुभूति एवं सौन्दर्य व शक्ति की उपासना आपके काव्य की विशेषता है। उत्साह, लय और प्रवाह आपके काव्य में सर्वत्र मुखरित है। बंगला तथा अंग्रेजी साहित्य की नवीनतम काव्य-शैलियों को आपने आत्मसात कर लिया था और इनका सुन्दरतम रूप आपकी रचनाओं में उपलब्ध होता है। उपमाएँ, विशेषण तथा भाव-अभिव्यञ्जना सर्वथा मौलिक हैं।

आपके सुप्रसिद्ध ग्रन्थ हैं – परिमल, गीतिका, तुलसीदास, अनामिका, कुकुरमुत्ता, बेला, नये पत्ते, अपरा, अर्चना आदि काव्य संग्रह। उपन्यासों में अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरुपमा आदि उल्लेखनीय हैं। आपने अनेक रेखा-चित्र, निबन्ध और कहानियाँ भी लिखी हैं। हिन्दी भाषा की अभिवृद्धि के लिए आपने अनेक ग्रन्थों का अनुवाद भी किया। निराला ने हिन्दी साहित्य को जो देन दी है वह अविस्मरणीय है। आधुनिक हिन्दी साहित्य के निर्माताओं में आप का स्थान काफी ऊँचा है और उसका निरालापन तो उससे भी ऊँचा है। आपका निधन १५ अक्टूबर १९६१ ई० को प्रातः ११ बजे हुआ।

स्व. पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

आप का जन्म विक्रम सं० १९५७ में उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में चुनार तहसील के सद्दूपुर ग्राम में हुआ था। आप के पिता बैजनाथ पाण्डे थे। अर्थाभाव के कारण आप आठवीं कक्षा तक ही पढ़ पाये पर निरन्तर स्वाध्याय और अनुशीलन-मनन के बल पर हिन्दी भाषा के उद्भट विद्वान, सशक्त पत्रकार एवं श्रेष्ठ कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

'मतवाला' के 'चाबुक' स्तंभ से अपनी जोरदार व्यंग्यात्मक टिप्पणियों द्वारा आप समाज की ढोंगी एवं पाखण्डी व्यवस्थाओं और उनके नियन्ताओं पर प्रबल प्रहार करते थे। फलस्वरूप मात्र दो वर्षों के कलकत्ता प्रवास में ही आप तत्कालीन पत्रकारों एवं साहित्यकारों में सुप्रतिष्ठित हो गये। 'सन्मार्ग' दैनिक के आरंभिक वर्षों में आप उसमें कुछ समय तक 'दानेदार बेदाना' शीर्षक व्यंग्य स्तंभ लिखते थे। तत्पश्चात् आप दिल्ली, बम्बई, बनारस तथा मिर्जापुर में व्यंग्यात्मक लेख, कहानियाँ और उपन्यास लिखते रहे।

उग्र हिन्दी के विद्रोही कलाकार थे। आपकी अति नग्न यथार्थवादिता में कहीं-कहीं अश्लीलता का रंग अत्यन्त उभरा हुआ है और इसलिए आलोचकों ने आपकी रचनाओं को 'घासलेटी' साहित्य की संज्ञा दी। कुछ

भी हो, आप बहुत समय तक हिन्दी के सर्वाधिक लोकप्रिय कहानीकार रहे। आपके प्रमुख कथा-संग्रह हैं—दोजख की आग, चिनगारियाँ, बलात्कार, मन की अमीर, आदि।

६६ वर्ष की आयु में आप की मृत्यु हुई। हिन्दी साहित्य को अपनी देन के लिए आप सदा याद किये जायेंगे। ●

स्व. विष्णुदत्त शुक्ल

आप मूलतः कानपुर के रहनेवाले थे। पर कलकत्ता आपका कर्मस्थल बन गया। आप हिन्दी के उद्‌भट विद्वान थे। 'स्वस्थ जीवन' पत्रिका का आपने सुदीर्घ काल तक सम्पादन किया। हिन्दी पत्रकारिता पर आपने



एक श्रेष्ठ पुस्तक भी लिखी। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा संचालित हिन्दी साहित्य सम्मेलन की प्रथमा, मध्यमा एवं उत्तमा कक्षाओं में आपने निःशुल्क शिक्षक के रूप में सेवा की। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आपका योगदान श्लाघनीय है। ●

स्व. राजकिशोर सिंह

आप का जन्म १९१५ ई० में उत्तर-प्रदेश के बलिया जिला अन्तर्गत असना ग्राम में हुआ था। जब १९४२ में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन चला, तब आप भी उसमें कूद पड़े। बाद में आप कलकत्ता आये और यहाँ पर आप ने बी० काम० एवं एल० एल० बी० की डिग्री ली। लखनऊ तथा कलकत्ता से प्रकाशित दर्जनों पत्र-पत्रिकाओं में सहायक से लेकर प्रधान सम्पादक तक के रूप में आप ने सेवा की, जिनमें प्रमुख प्रगति, अधिकार, संघर्ष, छाया, इण्डस्ट्रियल गजट, पूर्व रेलवे पत्रिका, गल्प भारती, भोजपुरी मिलाप आदि पत्रिकाएँ तथा लोकमान्य, विश्वमित्र, विश्वबन्धु, सन्मार्ग आदि दैनिक पत्र हैं। दैनिक हिन्दुस्तान स्टैण्डर्ड, हिन्दी प्रेस, एसोसियेटेड प्रेस के आप सम्वाददाता थे। जीवन, भूख का ताण्डव, परिवर्तन, रोटी, दिल्ली चलो, युद्धोत्तर भारत, एशिया छोड़ो, चुंगी कर, दूध पूत, नयी औद्योगिक नीति, सृजन एवं विनाश की कहानी, राष्ट्रीय अनुशासन की कहानी आदि पुस्तकें आपके लेखन की प्रवृत्ति की ओर संकेत करती हैं।

१९५६ में हेलसिंकी में हुये अन्तर्राष्ट्रीय पत्रकार सम्मेलन में आप ने भारत का प्रतिनिधित्व किया।

आप अखिल भारतीय भोजपुरी समाज के संस्थापक अध्यक्ष, भारत-मारीशस मैत्री परिषद के उपाध्यक्ष, श्रमजीवी पत्रकार संघ एवं किरायेदार कल्याण संघ के अध्यक्ष, बड़ाबाजार जिला कांग्रेस कमेटी के प्रधान मन्त्री एवं अन्यान्य विविध संस्थाओं के विभिन्न पदों पर रहे। बंगाल के दुर्भिक्ष और बलिया की बाढ़ के समय भी आप ने यथाशक्ति सेवा-कार्य किया। आप का निधन १९७९ ई० में हुआ। ●

स्व. पण्डित अनन्त मिश्र

आप का जन्म भाद्रपद शुक्ल पक्ष १४, संवत् १९७८ (सन् १९२१ ई०) को दार्जिलिंग में हुआ, जहाँ आप के पिता पं० सूर्यनाथ मिश्र पोस्ट आफिस में काम करते थे। वैसे आपका मूलगांव बिहार के भोजपुर जिला अन्तर्गत मिश्रौलिया है। आपकी

माताजी की असामयिक मृत्यु से आप अपने ननिहाल में पाले-पोसे गये और वहीं से आपने मैट्रिक किया।

आपने अपना कार्य क्षेत्र कानपुर से शुरू किया किन्तु पुत्र की असामयिक मृत्यु के बाद आप कलकत्ता चले आये। आप सशक्त पत्रकार थे। यहीं से 'राष्ट्रदूत' पत्रिका निकाली। फिर आप पटना में 'राष्ट्रवाणी' दैनिक में सह-सम्पादक हो गये। किन्तु परिस्थितिवश पटना छोड़ कर कलकत्ता आना पड़ा। पुनः कलकत्ता आ कर आप 'सन्मार्ग' दैनिक से संबद्ध हो गये और कुछ वर्षों के बाद इसके सम्पादक बना दिये गये। यद्यपि अप्रैल १९६६ से आपने 'सन्मार्ग' से अवकाश ले लिया था, पर फिर भी मृत्युपर्यन्त आप सन्मार्ग से घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध रहे। आप का १६ नवम्बर १९७६ को देहावसान हो गया। ●

श्री विष्णुकान्त शास्त्री

आप का जन्म २ मई १९२९ ई० को स्वनामधन्य पं० गांगेय नरोत्तम शास्त्री के घर में हुआ। छात्रावस्था से ही आप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सक्रिय कार्यकर्त्ता बने एवं १९४८ में संस्था पर प्रतिबन्ध लगाये जाने के प्रतिरोध में सत्याग्रह कर कारावरण



किया। १९५२ में हिन्दी में एम० ए० में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रारम्भ में जयपुरिया कॉलेज और फिर कलकत्ता विश्वविद्यालय में हिन्दी का प्राध्यापन किया। सम्प्रति आप उसके विभागाध्यक्ष हैं। कलकत्ता विश्वविद्यालय की सीनेट के आप प्रथम हिन्दी भाषी सदस्य निर्वाचित हुए। बांगला देश की मुक्तिवाहिनी के निकट सम्पर्क में रह कर मुक्ति युद्ध की विभिन्न स्तरों पर सहायता की। इस आन्दोलन पर धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान एवं पाञ्चजन्य आदि पत्रों में नियमित विचारात्मक-प्रेरणात्मक लेख लिखे। १९७५-७६ में आपातकाल के समय श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय एवं अन्य साहित्यिक मंचों से इसके विरोध के स्वर को मुखर किया। इसी कारण अगस्त १९७६ में मारिशस में आयोजित हिन्दी सम्मेलन में आमन्त्रित होने पर भी आपको भारत सरकार द्वारा वीसा नहीं दिया गया।

१९७७ में लोकतन्त्र की पुनर्स्थापना के संघर्ष में योगदान हेतु जनता पार्टी के सदस्य के रूप में सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया एवं जून १९७७ में कलकत्ता के जोड़ासाकू अंचल से विधान-सभा के विधायक निर्वाचित हुए। भारत सरकार द्वारा आप को गृह मन्त्रालय एवं सूचना प्रसारण मन्त्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति का सदस्य नियुक्त किया गया। १९७९ में सूरीनाम में आयोजित सूरदास पंचशती समारोह में भारत के प्रतिनिधि के रूप में अंश ग्रहण किया एवं सूरीनाम, गायना, ट्रिनिडाड आदि में कई साहित्यिक व्याख्यान दिये। आप प० बंगाल भारतीय जनता पार्टी के उपाध्यक्ष एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य हैं।

आप हिन्दी के सम्मानित विद्वान एवं लेखक हैं। अब तक पाँच मौलिक और तीन अनूदित ग्रन्थ प्रकाशित हैं। मौलिक ग्रन्थों में – 'कवि निराला की वेदना तथा अन्य

निबन्ध', 'कुछ चन्दन की, कुछ कपूर की', 'बांगला देश के सन्दर्भ में', 'चिन्तन मुद्रा' तथा 'स्मरण को पाथेय बनने दो' हैं। इनमें से दूसरी, तीसरी तथा पाँचवीं पुस्तक को उत्तरप्रदेश के हिन्दी संस्थान द्वारा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

आप श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, बड़ाबाजार लाइब्रेरी, बंगीय हिन्दी परिषद, अनामिका एवं अनेकानेक साहित्यिक,सांस्कृतिक,शैक्षणिक एवं सामाजिक संस्थाओं से घनिष्ट रूप में सम्बन्धित हैं। आप गीता एवं मानस के अध्येता एवं कुशल व्याख्याता हैं एवं 'रस वृन्दावन' नामक धार्मिक मासिक पत्रिका के प्रधान सम्पादक हैं। राजनीति में रहते हुए भी आप धर्म की ओर उन्मुख हैं। ●

स्व. शिवचन्द्र भरतिया

आपका जन्म चैत्र सुदी ७ सम्वत् १६१० को हैदराबाद राज्य के कन्नड़ ग्राम में अग्रवाल कुल में हुआ। आपके पूर्वज जोधपुर के डीडवाना ग्राम के निवासी थे। आपके पिता



बलदेव भरतिया ने व्यवसाय में अपार धनोपार्जन किया, पर आपकी रुचि साहित्य में ही थी। आप बहुभाषाविद् थे – उर्दू, अंग्रेजी, हिन्दी, बंगला, संस्कृत, गुजराती और मारवाड़ी, इन सभी भाषाओं में आपने ग्रन्थ लिखे। आप मारवाड़ी भाषा के शायद प्रथम नाटककार थे। वास्तविक घटनाओं पर आधारित फाटका जंजाल, केसर विलास, बुढ़ापे की सगाई आदि आप के नाटकों ने मारवाड़ी समाज की कुरीतियों को सामने रख कर हलचल मचा दी। आपके परामर्श से ही 'वैश्योपकारक' मासिक हिन्दी पत्र कलकत्ता से प्रकाशित हुआ, जिसका बहुत काल तक आपने सम्पादन भी किया। विभिन्न भाषाओं में आपके करीब ४ दर्जन ग्रन्थ निकले, जिनमें 'सूर्य चक्रवेध' और 'विचार दर्शन' हिन्दी साहित्य में बड़े महत्वपूर्ण सिद्ध हुए। आप जीवन पर्यन्त साहित्य सेवा में ही लगे रहे। ●

स्व. बालचंद मोदी

आपका जन्म सं० १६३६-३७ के लगभग चुरु में हुआ था। सं० १६५६ में आप कलकत्ता आकर व्यवसाय करने लगे। आप सामाजिक कार्यों में भाग लेने के



साथ ही मारवाड़ी समाज के इतिहास के अनुसन्धान में अहर्निश संलग्न रहते थे। सम्वत् १६८६ में आपका 'देश के इतिहास में मारवाड़ी समाज का स्थान' नामक ग्रन्थ प्रकाशित हुआ और फिर सम्वत् २००६ में एक अन्य ग्रन्थ 'अग्रवाल इतिहास परिचय' निकला। इन ग्रन्थों ने मारवाड़ी समाज को अपने प्राचीन गौरव एवं इतिहास का ज्ञान कराया। ●

स्व. बैजनाथ केड़िया

आपका जन्म १८८६ ई० में खेतड़ी क्षेत्र के चिड़ावा नगर में हुआ। आपके पिता टेकचन्द केड़िया ने १९०१ ई० में आपको कलकत्ता बुला लिया, जहाँ पर ये कपड़े की दलाली करने लगे।



१९०८ ई० में तीन मित्रों के साथ सिर्फ ५० रु० की पूँजी लेकर आपने वस्तु प्रचार का कार्य शुरू किया। नागरमल मोदी और पद्मराज जैन के साथ आपने तिलक स्वराज फंड के लिए चंदा जमा किया। १९३० ई० में सविनय अवज्ञा आन्दोलन में आप १ वर्ष के लिए जेल भेज दिये गये। गाँवों में जागरण के लिए बनारस-मुगलसराय राज मार्ग पर दुलहीपुर में ५० बीघा जमीन ले कर वहीं चरखा का प्रचार करने लगे। १९१७ ई० में अपने मित्र महावीर प्रसाद पोद्दार की प्रेरणा से उनके साझे में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए आपने हिन्दी पुस्तक एजेंसी की स्थापना की। फिर आपने वणिक प्रेस की स्थापना की।

जब काली प्रसाद खेतान इंगलैण्ड से बैरिस्टरी पास कर कलकत्ता वापिस आये, तब मारवाड़ी समाज ने उन्हें जाति बहिष्कृत कर दिया। इसके विरोध में आपने काली प्रसाद खेतान का साथ दिया और आन्दोलन छेड़ मोर्चा लिया। इसी तरह रूढ़िग्रस्त अग्रवाल समाज के सुधार के लिए आपने 'मारवाड़ी अग्रवाल सभा' की स्थापना में योग दिया और एक वर्ष तक उसके मंत्री रहे। १९१५ ई० में 'केड़िया जाति सहायक सभा' की स्थापना की गयी जिसमें आपका अच्छा सहयोग रहा।

१९०६ ई० से ही आप गो-रक्षा की ओर झुके और फूलचन्द चौधरी द्वारा छेड़े आन्दोलन से सम्बद्ध हो गए। आपलोगों ने 'श्रीकृष्ण गोशाला' की स्थापना की। १९२१ ई० से आप 'कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी' में सक्रिय भाग लेने लगे – इसकी सोदपुर एवं लिलुआ दोनों ही शाखाओं में आपने कई वर्षों तक उत्साह के साथ काम किया। कतिपय मित्रों के सहयोग से लिलुआ में ही आपने दूसरी संस्था 'गोविन्द गोशाला' भी स्थापित की। जब आप काशी गये तो वहाँ की गोशाला का भार भी आप पर आ पड़ा।

'मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी' (मारवाड़ी सहायक समिति) के संस्थापकों में आप भी थे। १९३४ ई० में बिहार-भूकम्प के समय आपने इस संस्था की ओर से मुंगेर में एक माह तक पीड़ितों की सेवा की। पूर्व बंगाल की भयंकर बाढ़ में भी आपने संस्था की ओर से सेवा की।

राधाकृष्ण नेवटिया आदि साथियों के सहयोग से आपने बच्चों की शिक्षा में सहायता के लिए 'बड़ाबाजार कुमारसभा विद्यालय' स्थापित किया। 'बड़ाबाजार युवकसभा' के भवन निर्माणार्थ आपने इन्द्रचन्द्र भुवालका और कन्हैयालाल थरड़ के साथ चन्दा इकट्ठा किया। जीवन पर्यन्त आप समाज और देश की सेवा में लगे रहे। वाराणसी में आपका देहान्त २१ दिसम्बर १९४७ ई० को हो गया। ●

श्री महावीर प्रसाद पोद्दार

आपका जन्म १८८८ ई० में हुआ। यद्यपि स्कूली शिक्षा आपको नहीं मिली पर निरन्तर स्वाध्याय से आपने अंग्रेजी, बंगला, उर्दू, हिन्दी और मराठी भाषाओं का गहन अध्ययन किया। प्रसिद्ध अंग्रेजी उपन्यास 'अंकल टामस् केबिन' का हिन्दी अनुवाद ('टाम काका की कुटिया') आपने किया तथा उसे हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की पत्रिका 'सरस्वती' (जिसके सम्पादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी थे) ने प्रकाशित किया। गोरखपुर में आपने 'हिन्दी पुस्तक एजेन्सी' खोली, फिर उसे आप कलकत्ता लाये। यहाँ महात्मा गांधी रोड पर शुद्ध खादी भण्डार के पास उसे स्थापित कर प्रकाशन का कार्य आरम्भ किया। मुंशी प्रेमचन्द उन दिनों उर्दू में नवाब राय के नाम से लिखते थे। आपने उन्हें हिन्दी में लिखने को प्रेरित किया। फिर उनकी कुछ कृतियों को आपने प्रकाशित भी किया, जिनमें प्रमुख हैं—सप्तसरोज, प्रेम पचीसी, प्रेम पूर्णिमा और सेवासदन। सप्तसरोज (कथा संग्रह) को ले कर आप राधाकृष्ण नेवटिया के साथ बंगला उपन्यास सम्राट शरत्चन्द्र के पास गए, जिसे सुन कर शरत् बाबू ने टिप्पणी लिख कर दी कि प्रेमचन्द 'हिन्दी उपन्यास सम्राट' कहलाने के योग्य हैं। इस घटना को तत्कालीन दैनिक 'भारत मित्र' ने प्रकाशित किया। इस तरह प्रेमचन्द को हिन्दी साहित्य में लाने और प्रतिष्ठित करने का श्रेय आपको ही है।

स्वतन्त्रता आन्दोलन में भी आप किसी से पीछे नहीं रहे। स्वदेशी आन्दोलन चलने पर आपने 'शुद्ध खादी भण्डार' की स्थापना की जिसका उद्घाटन महात्मा गांधी ने किया था। लोगों को खादी पहनने के लिए प्रेरित करने के लिए आप हर व्यक्ति को प्रथम बार २ धोती, २ कुर्त्ता, २ गंजियाँ और १ गांधी टोपी निःशुल्क देते थे। १९२१ ई० में इसी आंदोलन के दौरान आपको ७ दिन का कारावरण भी सहना पड़ा। गोरखपुर में नागरिक अवज्ञा आन्दोलन को लेकर आपको ३ वर्ष का कारावास भोगना पड़ा। नमक सत्याग्रह में आप प० बंगाल के महेश बथान में नमक बनाने गए।

आपने गोरखपुर एवं जसीडीह में प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र खोले। आजकल आप ९२ वर्ष की आयु में भी अन्धे हो जाने के बावजूद जसीडीह केन्द्र में आए रोगियों को प्राकृतिक चिकित्सा के बारे में अपना परामर्श देते रहते हैं।

स्व. पन्नालाल जैन (सिंघई)

आप का जन्म १२ जनवरी १८९३ ई० को मध्यप्रदेश के सागर जिलान्तर्गत देवरी ग्राम में हुआ। आपके पिता सिंघई मूलचंद जैन थे। आपने बम्बई विश्वविद्यालय से



इण्टरमीडियेट की परीक्षा पास की। फिर आप कलकत्ता चले आये और यहाँ केशोराम कॉटन मिल में काम करने लगे।

आपकी विशेष रुचि हिन्दी साहित्य एवं धर्म में थी। आपने अपना प्रकाशन संस्थान खोला। सुखी गृहस्थ, प्रेम, सन् '५७ का गदर, कर्म पथ, भाग्य उद्योग, स्वराज सप्ताह आदि पुस्तकें आपने प्रकाशित कीं। जैन धर्म

के कई शास्त्र एवं पूजा-पाठ संबंधी पुस्तकें भी प्रकाशित कीं। आप हिन्दी नाट्य परिषद के सक्रिय सदस्य थे।

कर्मठ एवं कुशाग्र होने के साथ ही देश-सेवा की उत्कट भावना से आप महात्मा गांधी के अनुयायी हो गये थे। आपका निधन फरवरी १९२७ ई० में हो गया। ●

स्व. परमेष्ठि दास जैन

१९१३ ई० में हिन्दी नाट्य परिषद की स्थापना काल से ही आप उसकी कार्यकारिणी के सदस्य रहे और परिषद द्वारा अभिनीत सभी नाटकों में विदूषक की भूमिका अदा करते रहे। आपको बार-बार मंच पर बुलाया जाता था और आपके आते ही दर्शक मौन भंग कर ठहाका मार हँसने लगते थे। हिन्दी रंगमंच पर ऐसे सिद्धहस्त विदूषक कलाकार बहुत कम ही हुए हैं। ●

स्व. कस्तूर चन्द बैनाड़ा

आपका जन्म सं० १९५३ में हुआ। आप सक्रिय सामाजिक एवं राजनीतिक कार्य-कर्त्ता थे। आप 'श्री महावीर पुस्तकालय' के



संस्थापकों में से थे। श्री दिगम्बर जैन युवक समिति एवं श्री महावीर पुस्तकालय के आप मंत्री पद पर रहे। आप श्री जैन धर्म प्रबोधिनी सभा, श्री महावीर समिति, पोद्दार छात्र निवास आदि संस्थाओं की कार्यकारिणी के सदस्य थे। नाट्यकला में आपकी विशेष रूचि थी, हिन्दी नाट्य परिषद के भी आप मंत्री रहे। ●

नृत्याचार्य
स्व. जमुना प्रसाद पाण्डेय

आप लगभग १५-१६ वर्ष की आयु में राजस्थान के बीकानेर से कलकत्ता आये। शीघ्र ही १९१८ ई० में आप हिन्दी नाट्य परिषद से सम्बद्ध हो गये और मास्टर



खादिम हुसैन से नृत्य-कला सीख कर परिषद के नाटकों में अभिनय करने लगे। भारत गौरव, मेवाड़ पतन, गरीब हिन्दुस्तान, छत्रपति शिवाजी गैरिक पताका, भीष्म प्रतिज्ञा, नूरजहाँ, चन्द्रगुप्त, बाजीराव पेशवा, अहिल्या बाई, बलिदान, झाँसी की रानी, ईसा, जहरी आँवला आदि परिषद के जोशीले नाटकों में आपने महिला पात्रों का बड़ा ही सजीव अभिनय किया। आपकी कलात्मक भाव-भंगिमा, लय-ताल एवं आकर्षक नृत्य को देख कर नृत्य-साम्राज्ञी साधना बोस ने आपको अपनी पार्टी में शामिल कर लिया। कलकत्ता व पटना में साधना बोस के साथ आपने नृत्य पेश कर अपना नाम रोशन किया। शिव का ताण्डव, पार्वती का लास्य, कृष्ण और गोपियों के रास आदि आपके श्रेष्ठ नृत्य थे। राजस्थान के भूतपूर्व मुख्य

मन्त्री जयनारायण व्यास एवं पण्डित भरत व्यास ने कत्थक नृत्य की प्राचीन परम्परा के विकास में योगदान के लिए आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। १९५० ई० के पूर्व बीकानेर में आपने 'भारतीय कला केन्द्र' खोला, जिसमें सौ से भी अधिक लड़कियों को नृत्य की उच्च शिक्षा दी। बाद में आप कलकत्ते की 'संगीत ज्योत्सना' से सम्बद्ध हो गये।

१९२० ई० में महात्मा गांधी के स्वदेशी आन्दोलन में विदेशी माल की दूकानों के सामने धरना देते हुए पुलिस ने आपको गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। १९३० ई० में 'नमक सत्याग्रह' में चौबीस परगना के महेश बथान में समुद्र के किनारे नमक बना कर फिर कानून तोड़ा। १९४२ ई० में 'करो या मरो' आन्दोलन के समर्थन में राधाकृष्ण नेवटिया गुप्त रूप से 'करो या मरो' अखबार निकालते थे, जिसके वितरण की जिम्मेदारी आपने अपने ऊपर ली और बड़ी जोखिम उठा कर रातों-रात उसे बाँटते और कहीं-कहीं दिवाल पर चिपका भी देते थे। शिवनाथ शुक्ल के साथ आप राधाकृष्ण नेवटिया की सलाह पर झरिया से डाइनामाईट और डाइनामो लेकर आये ताकि पुलों को उड़ाने की क्रान्तिकारियों की योजना को सफल बनाया जा सके। इस तरह आप बार-बार देश के हित के लिए मौत से जूझते रहे।

स्वातन्त्र्य संग्राम और नृत्य-कला में अपने स्मरणीय योगदान के लिए आप सदा याद किये जायेंगे।

पं. छविनाथ पाण्डेय

शिक्षा : बी. ए., एल-एल. बी.

आप अंग्रेजी एवं हिन्दी के प्रखर विद्वान हैं। १९२१ ई० में महात्मा गांधी द्वारा सम्पादित 'यंग इण्डिया' पत्र के अग्रलेखों का हिन्दी अनुवाद आपने किया, जिसे १९२२ ई० में श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय ने प्रकाशित किया। यह पहला खण्ड ४५० पृष्ठों का था, फिर दिन-रात परिश्रम कर आपने दूसरा खण्ड ८०० पृष्ठों का निकाला।

पटना से प्रकाशित 'सर्चलाइट' के सम्पादकीय विभाग में कई वर्षों तक आपने काम किया तथा कलकत्ता से 'वणिक प्रेस' द्वारा प्रकाशित पत्रिका में भी आपने सम्पादन किया। नारी शिक्षा, पुस्तकालय और उसका संचालन, आदि कई पुस्तकें भी आपने लिखीं।

महात्मा गांधी द्वारा चलाये गये 'असहयोग आन्दोलन' में भाग लेने पर आपको कारावरण करना पड़ा। अभी आप ८८ वर्ष के हैं और पटना में रहते हुए सार्वजनिक कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

स्व. आचार्य ललिता प्रसाद सुकुल

आप का जन्म १९०२ ई० में हुआ। आपके पिता डा० शिवरतन बैजनाथ शुक्ल थे। आपने इलाहाबाद से हिन्दी व अंग्रेजी दोनों ही में एम० ए० किया। बंगला और



उर्दू भाषा पर भी आप का अच्छा अधिकार था। पं० द्वारका प्रसाद मिश्र के आह्वान

पर आपने जबलपुर में 'शारदा' पत्रिका का दो वर्षों तक सम्पादन किया। तत्पश्चात् भाषा-विज्ञान एवं तुलसीदास पर शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किये और निबन्ध प्रतियोगिता में भाग लेकर इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्वर्ण-पदक प्राप्त किया। महामना मदनमोहन मालवीय से आशीर्वाद ले कर आप ने ३ जनवरी १९३३ ई० को कलकत्ता विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग का अध्यक्ष पद सँभाला। १९४५ ई० में रामकुमार केजड़ीवाल के सहयोग से आपने 'बंगीय हिन्दी परिषद' की स्थापना ३० सितम्बर को की। मृत्युपर्यन्त आप इसके माध्यम से पूर्वाञ्चल में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अनवरत लगे रहे। परिषद की त्रैमासिक पत्रिका 'जनभारती' का आपने ६ वर्षों तक सम्पादन किया। आपके सिद्धहस्त निर्देशन में 'जनभारती' न केवल श्रेष्ठ आलोचनात्मक पत्रिका बनी, वरन् तुलसी, मीरा, भारतेन्दु, सुभद्रा कुमारी चौहान आदि पर इसके विशेषांक आज भी महत्वपूर्ण हैं।

आपके हिन्दी में ११७ और अंग्रेजी में १९ निबन्ध विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। आपके मौलिक निबन्ध संग्रह हैं– साहित्य चर्चा, काव्य चर्चा, साहित्य जिज्ञासा आदि। प्रो० आनन्द के छद्म नाम से आपकी १५ कहानियाँ व एकांकी भी प्रकाशित हुए। मेघदूत, भारतेन्दु कला आदि १२ पुस्तकें आपने सम्पादित कीं। धोखाधड़ी एवं नवकथा – ये दो आपकी अनूदित पुस्तकें हैं।

आपका निधन २५ मई १९५९ ई० को हो गया। पूर्वाञ्चल में हिन्दी की प्राण-प्रतिष्ठा में आपका योगदान चिरस्मरणीय है। ●

स्व. पं. रामशंकर त्रिपाठी

उत्तरप्रदेश के बैसवारा अंचल में जहाँ आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, पं० गया प्रसाद शुक्ल 'स्नेही', महाप्राण निराला तथा चन्द्रशेखर आजाद आदि नर-पुंगवों ने जन्म लिया, वहीं के सुमेरपुर ग्राम में कान्यकुब्ज



ब्राह्मण परिवार में आप का जन्म २ जून १९०४ ई० को हुआ। आप के पिता पं० गंगा सेवक त्रिपाठी थे। आप की शिक्षा कानपुर, लाहौर तथा कुमिल्ला में हुई।

पं० त्रिपाठी के पत्रकार जीवन का श्रीगणेश लखनऊ से हुआ था, जहाँ आप कृष्णबिहारी मिश्र द्वारा सम्पादित 'माधुरी' में मुंशी प्रेमचन्द के सहकर्मी थे। आप सन् १९२६ में सर्वप्रथम कलकत्ता आये और सुप्रसिद्ध 'मतवाला' साप्ताहिक में महाकवि निराला के सहकर्मी रहे। इसके अतिरिक्त आपने 'स्वतन्त्र' दैनिक (कलकत्ता), 'वर्तमान' (कानपुर) तथा मासिक पत्र 'मारवाड़ी अग्रवाल' (कलकत्ता) में भी कार्य किया, जिसके सम्पादक राधाकृष्ण नेवटिया थे। १९३० ई० में आप ने राधाकृष्ण नेवटिया के सामने एक साप्ताहिक पत्र प्रकाशन का प्रस्ताव रखा, जिसका उद्देश्य सामाजिक और राजनीतिक चेतना जगाना था। वे आप को ताराचन्द घनश्याम दास फर्म

के एक प्रबुद्ध हिस्सेदार हनुमान प्रसाद पोद्दार के पास ले गये, जिन्होंने अपने १६० हरीसन रोड के मकान में आप को प्रेस बैठाने की सुविधा प्रदान की तथा आर्थिक सहायता भी दी। राधाकृष्ण नेवटिया के सहयोग से प्रेस बैठा कर साप्ताहिक 'लोकमान्य' प्रकाशित किया गया। एक वर्ष बाद १९३१ में आप ने लोकमान्य को दैनिक बना दिया। प्रारम्भ में ही वह पत्र ब्रिटिश शासन का कोपभाजन बना। शुरू के अंकों में ही सम्पादकीय 'दैनिक किसलिए' तथा 'मोतीलाल नेहरू का नमक सत्याग्रह' लेख के प्रकाशन के कारण आप पर राजद्रोह का मामला चला जिसमें २ फरवरी १९३१ को आप को एक वर्ष का कारादण्ड हुआ। आप को अलीपुर जेल ले जाया गया, जहाँ पर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस एवं प्रफुल्लचन्द्र सेन को भी रखा गया था।

कलकत्ते से तो दैनिक 'लोकमान्य' का प्रकाशन हो ही रहा था, इसके साथ-साथ कलकत्ते से 'छाया', नागपुर से 'लोकमत' (दैनिक), बम्बई से 'हिन्दुस्तान', रामनाथ पोद्दार एवं उनके मित्रों के सहयोग से दिल्ली से साप्ताहिक 'लोकमान्य' तथा गौहाटी (असम) व कानपुर से 'लोकमान्य' का प्रकाशन किया। आप प्रतिष्ठित पत्रकार होने के साथ ही कुशल वक्ता एवं सुलेखक भी थे। आप की प्रमुख पुस्तकें हैं – महर्षि कर्वे (जीवनी), भारत के महापुरुष, आजाद हिन्द फौज, सम्राट पृथ्वीराज रासो आदि। कलकत्ते के जनजीवन में आप का विशिष्ट स्थान था। आप लगातार अनेक वर्षों तक सर्व सम्मति से बड़ाबाजार जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे। बड़ाबाजार कांग्रेस की ओर से आपने सन् १९४५-४६ में श्री जवाहर लाल नेहरू का अभिनन्दन किया और उन्हें ५१ हजार रुपये की थैली प्रदान की।

अपने जन्म स्थान सुमेरपुर में आप ने हाईस्कूल की स्थापना की जिसके भवन एवं भूमि का व्यय लोकमान्य कोष से दिया।

आप ने इधर पुनः साप्ताहिक लोकमान्य का प्रकाशन आरम्भ किया था और उसमें अपने संस्मरण लिख रहे थे, किन्तु २६ सितम्बर १९७४ ई० को आपका देहावसान हो गया। ●

लक्ष्मीचन्द जैन

आपका जन्म सन् १९०९ ई० में हुआ। आप कई भाषाओं के जानकार हैं। आज के यथार्थवादी रचनाकारों में आप का स्थान प्रमुख है। आप की रचनाओं में 'कागज की किश्तियाँ', 'नये रंग-नये ढंग', 'ग्यारह



सपनों का देश' आदि हैं, जो बहुचर्चित रही हैं। आप भारतीय ज्ञानपीठ की 'लोकोदय ग्रन्थमाला' एवं 'ज्ञानपीठ पत्रिका' के संपादक, भारतीय ज्ञानपीठ एवं साहू जैन चैरिटेबुल सोसाइटी के मन्त्री, श्री शिक्षायतन कालेज एवं अन्य अनेक शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं से सम्बद्ध हैं। छठवें दशक में आप के सम्पादन में निकलनेवाली 'ज्ञानोदय' मासिक पत्रिका अपने श्रेष्ठ स्तर एवं साहित्यिक स्वरूप के कारण समस्त भारतीय पत्रिकाओं में विशिष्ट थी। ●

डॉ. हीरालाल चोपड़ा

भारत में फारसी के इने-गिने विद्वानों में एक, शिक्षा एवं संस्कृति के पोषक, समाज-सेवी डॉ० हीरालाल चोपड़ा योग्य पिता डॉ० दौलतराम चोपड़ा के योग्य पुत्र हैं। आप का जन्म २ दिसम्बर १९०६ ई० में



सम्प्रति पाकिस्तान के लाहौर जिलान्तर्गत कसूर में हुआ। आपने पंजाब विश्वविद्यालय (लाहौर) से एम० ए० में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त कर तत्कालीन कीर्तिमान भी तोड़ा। आप ने ईरान के तेहरान विश्वविद्यालय से डी० लिट्० की उपाधि ली।

भारत-विभाजन के बाद आप कलकत्ता चले आये और कलकत्ता विश्वविद्यालय में बहुत दिनों तक अध्यापन का कार्य किया। आप को इतिहास और फारसी का अगाध ज्ञान है। मुगल शासनकालीन इतिहास पर आप का विशेष अध्ययन है। आपके इतिहास सम्बन्धी लेख अधिकांशतः अंग्रेजी में प्रकाशित होते रहते हैं। आजकल आप पंजाबी समाज व पंजाब सेवा समिति के प्रधान हैं। आप ईरान सोसायटी के उप प्रधान, एशियाटिक सोसायटी के भाषा-सचिव एवं इण्डो-ईरान सोसायटी के सचिव रह चुके हैं। आप पंजाबी बिरादरी एवं सिख रिव्यू के संरक्षक हैं एवं रामकृष्ण मिशन इंस्टीच्यूट ऑफ कल्चर की कार्यकारिणी के सदस्य भी रहे हैं। आपने 'इकबाल और उसकी शायरी' तथा 'फारसी साहित्य की रूप-रेखा' नामक पुस्तकें लिखी हैं। फारसी भाषा में आप ने 'गीता' का अनुवाद किया है। •

स्व. रामेश्वर टांटिया

आपका जन्म २६ जनवरी १९१० ई० को हुआ। १५ वर्ष की अवस्था से ही विदेशी प्रतिष्ठान जे० थॉमस एण्ड कम्पनी में साधारण कर्मचारी की हैसियत से काम करते-



करते ३२ वर्ष बाद आप १९५७ ई० में इसके सलाहकार बन गये। १९६८ में ब्रिटिश इण्डिया कारपोरेशन (कानपुर) उद्योग समूह के आप प्रबन्ध निदेशक हो गए। १९७० ई० से आप अखिल भारतीय कॉटन मिल फेडरेशन को कार्यकारिणी के सदस्य रहे एवं १९७२ में 'अपर इण्डिया चेम्बर' के अध्यक्ष चुने गए।

व्यावसायिक क्षेत्र में असाधारण सफलता अर्जित करने के साथ राजनैतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में भी आप लोकप्रिय एवं प्रतिष्ठित रहे। १९४२ ई० में 'भारत छोड़ो' आंदोलन में आपने सक्रिय भाग लिया। इसी दौरान लोकनायक जयप्रकाशनारायण तथा नेपाल के एम० पी० कोइराला जैसे शीर्षस्थ समाजवादी नेताओं से आपका घनिष्ठ सम्पर्क हुआ। १९५७ और १९६२ ई० के आम चुनावों में

जीत कर आप राजस्थान से लोकसभा सदस्य बने। सांसद जीवन के ४ वर्षों तक आप कांग्रेस संसदीय दल के कोषाध्यक्ष भी रहे। आप कानपुर नगर निगम के मेयर भी चुने गये।

सामाजिक कार्यों में भी आप सदा अग्रणी थे। १९५२ से १९५६ ई० तक आप 'मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी' के प्रधान मन्त्री पद पर रहे। इन वर्षों में सोसाइटी ने जम्मू, राजस्थान, बिहार, सुन्दरवन (बंगाल) के अकाल पीड़ितों एवं उत्तरप्रदेश के बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ २ करोड़ रुपये खर्च किये। असम के शिवसागर में साइंस कालेज, कलकत्ता में टांटिया हाई स्कूल, राजस्थान के सरदारशहर में टांटिया गर्ल्स स्कूल, वाराणसी में निःशुल्क ऐलोपैथिक चिकित्सालय, धुबड़ी (असम) में सार्वजनिक पुस्तकालय तथा असम के ही लकवा क्षेत्र में हायर सेकेण्डरी स्कूल खोल कर आपने अपना नाम एवं वंश का यश बढ़ाया।

भ्रमण एवं अध्ययन में आपकी विशेष रुचि रही। १९५०-५१ में यात्रा के अनुभवों का वृहद संकलन 'विश्व यात्रा के संस्मरण' शीर्षक से आपने लिखा। आपके आर्थिक, सामाजिक और विवेचनात्मक लेख तथा लोकसभा जीवन पर आधारित कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। आपकी पुस्तकों में आर्थिक समस्या, कुछ अपनी कुछ जग की, जाने-अनजाने, राह चलते-चलते, इतिहास के निर्झर, आदि प्रमुख हैं।

आपकी मृत्यु २३ जुलाई १९७७ ई० को हुई। कर्मठ समाजसेवी, उदारचेता लेखक एवं सफल उद्योगपति के रूप में आप सदैव याद किये जायेंगे। आपकी डायरी इसी वर्ष (१९८१ ई०) में 'क्या खोया—क्या पाया ?' शीर्षक से प्रकाशित हुई है। ●

स्व. मूलचन्द अग्रवाल

आपके पूर्वज झाँसी जिले में रहते थे। आपके पिता गोपाल दास अग्रवाल थे। सरकारी छात्रवृत्ति के सहारे आपने अध्ययन किया और मेरठ से बी० ए० पास किया।



तत्पश्चात् आप कलकत्ता आए और समाचार-पत्रों में काम करने लगे। पहिले 'भारत मित्र' में अनुवादक रहे, फिर 'कलकत्ता समाचार' में सहकारी सम्पादक। पं० बाबू राव विष्णु पराड़कर की सिफारिश पर आप माहेश्वरी विद्यालय के प्रधानाध्यापक हो गए। वैसे कुछ दिनों तक आपने कलकत्ता विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर विभाग में भी प्राध्यापक का कार्य किया।

१९१५ ई० में आपने 'दैनिक विश्वामित्र' का प्रकाशन प्रारम्भ किया। बाद में इसका नाम बदल कर 'विश्वमित्र' कर दिया। फिर आपने संध्याकालीन 'साम्यवादी' तथा प्रातःकालीन अंग्रेजी दैनिक 'लिबर्टी' निकाले। १९२१ ई० में 'विश्वामित्र' के अग्रलेखों के कारण आपको अंग्रेजी शासन के दमनचक्र का शिकार हो एक वर्ष सश्रम कारादण्ड वरण करना पड़ा। १९३० ई० में जोशी बन्धुओं (डा० हेमचन्द और इलाचन्द) के

सम्पादकत्व में आपने 'विश्वमित्र' मासिक निकाला। तत्पश्चात् अंग्रेजी में साप्ताहिक 'इलस्ट्रेटेड इण्डिया' और दैनिक 'एडवांस' निकाले। फिर साप्ताहिक 'सिने एडवांस' प्रारम्भ किया। बंगला में दैनिक 'मातृभूमि' भी जोर-शोर से निकाली। मई १९४१ ई० में 'विश्वमित्र' का 'बम्बई संस्करण' और फिर उसी साल 'दिल्ली संस्करण' प्रकाशित किये। फिर पटना और कानपुर से भी दैनिक 'विश्वमित्र' प्रकाशित होने लगा।

जनवरी १९४१ ई० में दिल्ली में हुए अखिल भारतीय हिन्दी पत्रकार सम्मेलन के आप सभापति थे। आप कुशल सम्पादक, सफल पत्र संचालक, समाज सुधारक एवं लगनशील राष्ट्र-भक्त थे।

राधाकृष्ण नेवटिया

आप का जन्म २७ जुलाई १९०१ ई० को गाजीपुर में हुआ। आपके पिता गंगाधर नेवटिया थे। १९१०-११ ई० में आप



हरिबख्श नेवटिया के दत्तक पुत्र होकर कलकत्ता आ गए। स्वाध्याय से ही आप ने 'विशारद' की उपाधि प्राप्त की। सफल व्यवसायी होने के बावजूद आप राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यों में भी सदैव अग्रणी रहते हैं।

१९१८ ई० में लोकमान्य तिलक के आह्वान पर प्रेरित हो आप 'होम रुल लीग' के सदस्य हो गये। १९२१ ई० में असहयोग का अलख जगाते जब महात्मा गांधी कलकत्ता पधारे, तब आप ने अपने निवास जकरिया स्ट्रीट में केवल स्त्रियों के लिए उनकी विराट आम सभा आयोजित की, जिसमें मारवाड़ी समाज की स्त्रियों ने भी बड़ी संख्या में भाग लिया। यहीं आप ने 'स्वदेशी' का व्रत महात्मा गांधी से लिया और विदेशी वस्त्रों की होली जलाने में आगे-आगे रहे। १९२८ ई० में कुख्यात 'साइमन कमीशन' के विरोध में आप ने प्रभात सिनेमा (तब नहीं था) के मैदान में अंग्रेजो हुकूमत के बर्बर एवं शर्मनाक जुल्मों का कच्चा-चिट्ठा मूर्त्तियों के माध्यम से प्रदर्शित किया, जिसका उद्घाटन नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने किया। फलतः आप को कारावास का दण्ड हुआ। १९३० ई० के नमक सत्याग्रह में भी आप ने खुल कर भाग लिया। १९३३ ई० में अंग्रेजी कपड़ा मिल ई० डी० सासून ग्रुप (बम्बई) के विरुद्ध भी आप ने जम कर सत्याग्रह में भाग लिया और महामना मदनमोहन मालवीय के स्नेह-भाजन बने। १९४२ ई० के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में आप ने 'करो या मरो' पत्रक का प्रकाशन और सम्पादन किया। जयप्रकाश नारायण, डा० राममनोहर लोहिया, अरुणा आसफ अली आदि भूमिगत नेताओं के अज्ञातवास की व्यवस्था भी आप ने सफलतापूर्वक की। आप के अदम्य उत्साह और त्याग से प्रभावित होकर आप को बड़ाबाजार कांग्रेस कमेटी का उपाध्यक्ष निर्वाचित किया गया। स्वतन्त्रता संग्राम में योग-दान के लिए १५ अगस्त १९७२ को आप को भारत सरकार ने ताम्र-पत्र से अलंकृत किया। १९७६-७७ में आजादी की दूसरी लड़ाई में भी श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के मंच से आप ने आपात्-काल का विरोध किया।

१९१६ ई० में अपने कतिपय मित्रों के सहयोग से आप ने 'बालसभा पुस्तकालय' की स्थापना की, जो १९१८ ई० में 'श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय' के रूप में परिणत हुई। १९२० से १९३५ ई० आप इसके मन्त्री रहे तथा १९३६ से १९४३ ई० तक इसके सभापति। गंगासागर मेले में कुमारसभा पुस्तकालय की ओर से आप ने स्वयंसेवक दल का गठन किया और बाढ़ तथा भूकम्प जैसी प्राकृतिक आपदाओं में भी पीड़ितों के सेवार्थ सदा तत्पर रहे।

१९२२ ई० में जब जमनालाल बजाज ने 'अखिल भारतवर्षीय अग्रवाल महासभा' की स्थापना की तो इसके मुखपत्र 'अग्रवाल' का सम्पादन आप को ही सौंपा। आप अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के संस्थापकों में से हैं एवम् इस के पाक्षिक मुखपत्र 'समाज सेवक' का सह-सम्पादन आप ने किया। 'मारवाड़ी समाज की आहुतियाँ' शीर्षक पुस्तक में आपने स्वाधीनता संग्राम के लिए १९२१ से १९४४ ई० तक जेल जानेवालों का जीवन-चरित्र लिखा है। कुमारसभा पुस्तकालय के अन्तर्गत कुमारसभा विद्यालय की भी आप ने स्थापना की। साथ ही बालिकाओं के लिए संगीत, नृत्य योगाभ्यास और लाठी-कुश्ती आदि सिखाने का भी स्तुत्य उपक्रम आप ने किया। 'मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी' के मंच से आप ने बहुमुखी सेवा-कार्य किया। सोसाइटी का प्राकृतिक चिकित्सा विभाग, इनडोर व आउटडोर विभाग आप के ही सत्प्रयासों के परिणाम हैं। आप रायल एशियाटिक सोसाइटी के सदस्य हैं।

गौ-सेवा और गो-रक्षा हेतु भी आप अहर्निश प्रयत्नशील हैं व 'कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी' के कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। आप ने स्वयं इस हेतु चित्रशाली (कृष्णनगर) में एक आश्रम की स्थापना भी की है, जिसमें गौशाला एवं बालिका विद्यालय भी हैं—यहाँ आज ४०० छात्राएँ अध्ययन रत हैं। गीता के वे प्रसंग जो महात्मा गांधी को अत्यन्त प्रिय थे, आप के संयोजन में 'चित्रमयी गीता' शीर्षक ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित हुए। स्वाधीनता संग्राम के ९० वर्षों के रोमांचकारी इतिहास पर एक कलात्मक वृत्तचित्र 'राष्ट्रीयता की साधना' का निर्माण १९७४ ई० में आप ने किया। 'निराला अभिनन्दन ग्रंथ' एवं 'मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी की रजत जयन्ती' तथा 'स्वर्ण जयन्ती' स्मारिकाएँ आप के सम्पादन सौष्ठव का प्रमाण हैं। इनके अतिरिक्त समय-समय पर विभिन्न शीर्षस्थ राजनैतिक एवं सामाजिक विभूतियों के अभिनन्दन ग्रन्थों का भी आप ने सम्पादन किया है।

प्राकृतिक चिकित्सा और योग भी आप के जीवन के अभिन्न पहलू हैं। भारत में प्राकृतिक चिकित्सा के क्षेत्र में आप अग्रगण्य व्यक्तियों में से हैं। 'अखिल भारतीय प्राकृतिक-चिकित्सा परिषद' के आप उपाध्यक्ष रहे। इसके मुखपत्र 'स्वस्थ जीवन' का धर्मचन्द सरावगी के साथ आप ने १० वर्षों तक सम्पादन किया। 'प्रकृति निकेतन' (कलकत्ता) जो प्राकृतिक-चिकित्सा विद्यापीठ भी है, के संस्थापकों में से आप हैं। कलकत्ते के 'यौगिक संघ' और 'बड़ाबाजार युवक सभा' की स्थापना में भी आप की प्रमुख भूमिका रही है। योग एवं प्राकृतिक-चिकित्सा पर आप ने १० श्रेष्ठ लोकोपयोगी पुस्तकें भी लिखी हैं, जिनमें प्रमुख हैं—प्राणायाम, हमारी प्रकृति-हमारा आहार, योग के द्वारा कब्ज निवारण, आदि।

आज ८० वर्ष की उम्र में भी आप अत्यन्त संयमित एवम् कर्ममय जीवन व्यतीत करते हुए समाज एवं राष्ट्र की सेवा के लिए युवा कार्यकर्त्ताओं के निर्माण में अहर्निश संलग्न हैं। ●

वेणीशंकर शर्मा

आप का जन्म २५ जनवरी १९०७ ई० को बांका (भागलपुर) में हुआ। आप के पिता बलीराम शर्मा थे। आप ने पटना से बी० ए० और कलकत्ता से एल-एल० बी० किया। मारवाड़ी छात्रावास, कलकत्ता में



आप सुपरिटेंडेंट भी रहे। १९३१ ई० में आप ने 'मारवाड़ी छात्र संघ' की स्थापना की एवं उसके मन्त्री भी रहे। इसके द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक 'मारवाड़ी पत्र' का सम्पादन भी आप ने किया। १९३४ ई० में 'मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी' के स्वयंसेवक के रूप में आप ने बिहार भूकम्प में पीड़ितों की सेवा की। आप 'अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन' के उत्साही एवं कर्मठ सदस्य हैं। आप कलकत्ते में आय-कर के पहिले मारवाड़ी वकील बने एवं इस क्षेत्र में बहुत प्रतिष्ठा भी अर्जित की है।

आप ने अपने ग्राम बांका में हायर सेकेण्डरी स्कूल के भवन का जीर्णोद्धार करवाया। १९५९ ई० में आप ने अपने पिता की स्मृति में बांका में 'बलीराम कॉलेज' की स्थापना की। अपनी माता की स्मृति में आप ने बांका में ही पुस्तकालय की भी स्थापना की।

१९६१ ई० में स्वामी विवेकानन्द पर एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ का आप ने सम्पादन एवं प्रकाशन किया। बाबा कालीकमलीवाला पंचायत क्षेत्र द्वारा प्रकाशित 'हिमालय दर्शन' ग्रन्थ का सम्पादन भी आप ने किया है। १९६७ ई० में आप बांका क्षेत्र से लोकसभा के लिए संसद-सदस्य निर्वाचित हुए। •

स्व. अयोध्या प्रसाद आर्यसमाजी

स्वतन्त्रता संघर्ष के दौरान महात्मा गांधी के आन्दोलनों एवं सत्याग्रहों में आप अग्रणी रहते थे। अंग्रेजी शासन के विरोध में जनता को जाग्रत कराने एवं उसे आजादी पाने का संकल्प दिलवाने में आप की प्रमुख भूमिका रही। फलतः आप को कारादण्ड का भी वरण करना पड़ा।

आप समाज-सुधार के लिए आर्य समाज के सिद्धान्तों का प्रचार करते थे। आप का विश्वास था कि स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं स्वामी श्रद्धानन्द के सिद्धान्तों का अनुकरण एवं अनुशीलन ही अच्छे नागरिक एवं व्यवस्थित समाज का निर्माण कर सकता है। आप धाराप्रवाह एवं ओजस्वी वक्ता थे। आर्य समाज के प्रचार के लिए आप ने अनेक पुस्तकें लिखी हैं। आप १४ भाषाओं के ज्ञाता एवं उद्‌भट विद्वान थे। हिन्दू समाज के उत्थान एवं स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु संघर्ष में आप की विशिष्ट भूमिका रही। •

स्व. राधाकृष्ण टिबड़ेवाल

आप का हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में विशिष्ट स्थान है। आप ने 'मारवाड़ी व्यापारी' पत्र का प्रकाशन १८९० ई० में ऐसे समय में प्रारम्भ किया, जब जनसाधारण की दृष्टि में समाचार-पत्रों का महत्व नगण्य था और आप की आर्थिक स्थिति भी साधारण थी। आप ने अपना सर्वस्व होम कर दो अन्य पत्रों 'बड़ाबाजार गजट' और 'मारवाड़ी' का प्रकाशन भी प्रारम्भ किया। आप स्वयं ही इन तीनों पत्रों का सम्पादन भी करते थे। •

स्व. गंगा प्रसाद भौतिका

शिक्षा : एम. ए., एल-एल. बी., काव्यतीर्थ

यद्यपि आप अत्यन्त उच्च शिक्षा प्राप्त थे, पर आप की वेशभूषा एवं जीवन-चर्या निहायत सादगीपूर्ण थी। स्वतन्त्रता संग्राम में



महात्मा गांधी के आन्दोलनों में आप ने सक्रिय रूप से सहयोग दिया। बड़ाबाजार जिला कांग्रेस कमेटी के आरम्भ से ही आप सक्रिय सदस्य रहे। समाज सुधार, शिक्षा, हरिजन सेवा, महिला उत्थान, आदि कार्यों में भी आप भाग लेते रहे।

आप माहेश्वरी विद्यालय के कई वर्षों तक अध्यापक रहे। मारवाड़ी बालिका विद्यालय के आप मन्त्री रहे। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के मुखपत्र 'समाज सेवक' का आप ने बैजनाथ केड़िया एवं राधाकृष्ण नेवटिया के साथ सम्पादन किया। आप ने रामकुमार भुवालका के साथ 'कलकत्ता पुस्तक भण्डार' की स्थापना की। 'मारवाड़ी ट्रेड एसोसियेशन' की स्थापना में भी आप का योगदान रहा। आप कर्मठ गांधीवादी एवं प्रबुद्ध साहित्यानुरागी थे। ●

स्व. बहादुर सिंह सिंघवी

आप के पिता डालचन्द सिंघवी थे। आप का साहित्यिक ज्ञान और पुरातत्व-प्रेम अनुकरणीय था। प्राचीन पुस्तकों, सिक्कों और मूर्तियों का अप्रतिम संग्रह आप ने किया। मूर्तियों में राम-लक्ष्मण की वे अलभ्य प्रतिमायें भी हैं, जिनको पूजा छत्रपति



शिवाजी करते थे। अरबी एवं फारसी के हस्तलिखित प्राचीन ग्रन्थों का भी विशिष्ट संग्रह है, जिनमें कुछ पर तो दिल्ली के बादशाहों के हस्ताक्षर भी हैं।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा स्थापित 'शान्ति निकेतन' में 'सिंघवी जैन विद्यापीठ' की स्थापना की, जिसमें सुप्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता मुनि जिनविजय आचार्य के निर्देशन में शोध कार्य होता है। आप ने 'सिंघवी जैन ग्रन्थमाला' का प्रकाशन भी आरम्भ किया।

आप की प्रकृति उदार एवं स्वाभिमानी तथा प्रवृत्ति गुणग्राही एवं अन्वेषक थी। ●

स्व. पं. रघुनाथ पाण्डेय 'प्रदीप'

आपका जन्म १९१० ई० में उत्तरप्रदेश के बलिया जनपद अन्तर्गत मीनापुर ग्राम में हुआ था। आपके पिता स्व० जगदीश पांडेय थे। आपने कलकत्ता आकर श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। फिर आप दैनिक 'विश्वमित्र' के सम्पादकीय विभाग में काम करने लगे। पत्र के संचालक-सम्पादक मूलचन्द अग्रवाल आप की सम्पादन क्षमता एवं व्यवस्था संचालन से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने

जब बम्बई से दैनिक 'विश्वमित्र' प्रकाशित करने का निर्णय किया, तो सम्पादन एवं संचालन की व्यवस्था सम्भालने के लिए आप को ही भेजा। फिर जब 'विश्वमित्र' के कानपुर एवं पटना संस्करण प्रकाशित हुए, तब भी उन्होंने आप पर ही वहां का भी कार्यभार डाला।

जब कलकत्ते से 'विश्वबन्धु' का प्रकाशन गोपाल प्रसाद सिंह ने प्रारम्भ किया तो आग्रह कर के वे आप को सम्पादक के रूप में ले गये। आप के पत्रकारिता के अनुभव से 'विश्वबन्धु' ने कलकत्ता के समाचार-पत्रों में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया। आपके सुझाव पर गोपाल प्रसाद सिंह ने 'आदर्श' नामक एक साहित्यिक एवं राजनैतिक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन भी किया। आपके सम्पादन में 'आदर्श' अपने समय में साहित्य के प्रति नवीन दृष्टिकोण एवं निर्भीक राजनीतिक विचारधारा के कारण साहित्यकारों एवं राजनेताओं के मध्य बहुचर्चित हो गया। आप हिन्दी में गम्भीर कविताएँ 'प्रदीप' के नाम से एवं व्यंगात्मक कविताएँ 'चिराग मीनापुरी' के नाम लिखते थे। सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यों में भी आप की विशेष अभिरुचि थी। 'अपर इण्डिया एसोसियेशन' और 'हिन्दी नाट्य समिति के कार्यकलापों में आप का सक्रिय सहयोग था। 'बलिया आजाद मण्डल' के आप अध्यक्ष थे। ४७ वर्ष की अल्पायु में ही सन् १९५७ में पटना में देहावसान हो गया। बालिकाओं के लिए विद्यालय स्थापना सम्बन्धी आप की इच्छा की पूर्ति हेतु आपके छोटे भाइयों ने अपने गांव मीनापुर में 'प्रदीप बालिका विद्यालय' की स्थापना की है। ●

स्व. पं. रघुनन्दन मिश्र

आप का जन्म नौली गांव (गाजीपुर) के जमीन्दार परिवार में हुआ था। आप के पितामह पं० लेखराज मिश्र सुविख्यात संस्कृतविद् थे। आपके पिता पं० रामनियादी मिश्र थे। आप ने १९४० ई० में बनारस से एम. ए. किया।

१९४२ ई० में आप का कार्यक्षेत्र कलकत्ता हो गया। यहाँ आप ने विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय, विद्यासागर कालेज एवं कलकत्ता विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया।

आप सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक कार्यों में अग्रणी रहते थे। महादेवी एवं बच्चन पर आप का गहन अध्ययन था। आप सुविज्ञ लेखक एवं ओजस्वी वक्ता थे। ●

भँवरमल सिंघी

आप का जन्म ६ अगस्त १९१४ को जयपुर में हुआ था। आप के पिता इन्द्रचन्द्र सिंघी थे। आप ने १९४४ ई० में स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने के कारण कारावस्था



में ही परीक्षा देकर हिन्दी में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम० ए० किया। आपको साहित्य-रत्न की उपाधि १९३४ ई० में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से मिली।

आप काशीपुर जूट डीलर्स एसोसिएशन एवं बंगाल जूट डीलर्स एसोसिएशन के सचिव रहे। नोपानी एवं कानोड़िया उद्योग समूहों में भी आप प्रमुख अधिकारी के पद पर रहे।

प्रथम पत्नी के देहान्त के उपरान्त आप ने पुर्नविवाह एक बाल विधवा से १९४६ ई० में कर के समाज सुधार की दिशा में एक क्रान्तिकारी कार्य किया। आप अखिल भारतवर्षीय तलाक समिति, अखिल भारतीय सामाजिक क्रान्ति सम्मेलन, विधवा विवाह सहायक संघ एवं मारवाड़ी छात्र संघ के मन्त्री; अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के सभापति; फेडरेशन ऑफ चेरिटेबिल ट्रस्ट एवं तरुण जैन संघ के संस्थापकों में रह चुके हैं। परदा-प्रथा एवं बाल दीक्षा के विरोध में आप ने आन्दोलन छेड़े, जिसके कारण कट्टर पंथियों की ओर से आप पर आक्रमण भी किया गया।

स्वाधीनता आन्दोलन में आप ने छात्रावस्था से ही सक्रिय भाग लिया, फलतः तीन वर्ष कारादण्ड का वरण किया। देशी जन आन्दोलन के दौरान आप ने रियासती लोक संघ की स्थापना की। पूर्वी पाकिस्तान गये गैर सरकारी दल के आप नेता रहे। स्वातन्त्र्य संघर्ष में योगदान के लिये १९७२ ई० में आप प्रधान मन्त्री इन्दिरा गांधी द्वारा ताम्रपत्र से विभूषित हुए।

सांस्कृतिक क्षेत्र में आप थियेटर सेंटर, अनामिका और अनामिका कला संगम तथा भारतीय लोक कला मण्डल (उदयपुर) के संस्थापकों में से हैं। तरुण संघ एवं संगीत कला मन्दिर के भी आप सक्रिय सदस्य हैं। विभिन्न नाटकों में आप ने अभिनय भी किया है, जिसमें अनामिका द्वारा प्रस्तुत 'नये हाथ' संगीत नाटक अकादमी द्वारा पुरस्कृत हुआ।

शिक्षा क्षेत्र में आप श्री शिक्षायतन कॉलेज एवं मानव विकास विद्यालय (जयपुर) के संस्थापक मन्त्री; दौलतराम नोपानी विद्यालय, शिक्षण संस्था संघ एवं भारत राष्ट्र भाषा प्रचार सभा के मन्त्री; मानव विकास विद्यालय ट्रस्ट (रांची) के ट्रस्टी; टांटिया हाई स्कूल, बालिका शिक्षा सदन एवं विकास विद्यालय (रांची) की प्रबन्ध समिति के सदस्य भी रह चुके हैं।

आप साहित्यिक क्षेत्र में भी अग्रणी हैं। आप के लेख एवं गद्य-काव्य माधुरी, हंस, जागरण आदि प्रसिद्ध पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। आप की प्रकाशित पुस्तकें हैं—वेदना, राष्ट्र योजना एवं परिवार योजना, भग्न हृदय। आप के सम्पादित ग्रन्थों में प्रमुख हैं – बसन्तलाल मुरारका स्मृति ग्रन्थ, पूरणचन्द्र शामसुखा अभिनन्दन ग्रन्थ, पद्मभूषण सीताराम सेकसरिया अभिनन्दन ग्रन्थ एवं मारवाड़ी समाज : चुनौती और चिन्तन।' आप ने विभिन्न पत्रों का सम्पादन भी किया है, जिनमें प्रमुख हैं – मासिक तरुण जैन, तरुण (पाक्षिक), समाजसेवक (साप्ताहिक) रियासती आवाज (साप्ताहिक), नया समाज (मासिक) आदि।

आप हिन्दी, अंग्रेजी और बंगला में धाराप्रवाह एवं ओजपूर्ण वक्ता तथा हिन्दी और अंग्रेजी के प्रभावशाली लेखक हैं। आकाशवाणी (कलकत्ता) से आप की वार्त्ताऐं नियमित रूप से प्रसारित होती हैं। इस तरह आप अविरल निष्ठापूर्वक समाज एवं राष्ट्र के उत्थान में अहर्निश सेवा रत हैं। ●

स्व. पं. श्रीगोपाल आचार्य



आपका जन्म पौष शुक्ल ५ सं० १९५५ को बीकानेर में हुआ। आपके पिता पं०

जानकीदास आचार्य थे। आपने कलकत्ता से एंट्रेस की परीक्षा पास की।

आप हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, बंगला, गुजराती एवं उर्दू के ज्ञाता थे। साथ ही चित्रकला, संगीत एवं हस्तलिपि लेखन में आप दक्ष थे। सामाजिक एवं धार्मिक विषयों पर आपकी रचनाएँ कलकत्ते के विभिन्न समाचार पत्रों यथा, भारत मित्र, मारवाड़ी ब्राह्मण समाचार, आदि में प्रकाशित होती रहीं। आप श्री पुष्करण महासभा एवं अपर इण्डिया एसोसियेशन के सक्रिय कार्यकर्त्ता थे। आपने सार्वजनिक सेवा हेतु विश्व कल्याण केन्द्र तथा जन सेवा प्रतिष्ठान नामक संस्थाओं की स्थापना की।

संगीत एवं नाट्य-कला में आपकी विशेष अभिरुचि थी। बजरंग परिषद एवं हिन्दी नाट्य परिषद द्वारा खेले गए नाटकों में आपने कई भूमिकायें भी कीं तथा अनेक पद गाए। आपने कई नाटक लिखे, जिनमें मुंज मृणाल, मनमोहन, चन्द्रकांता, आदि प्रमुख थे। आपके कई नाटकों की ग्रामोफोन रिकार्डिंग भी की गयी हैं, जिसमें धनुष-यज्ञ प्रमुख है।

आपका निधन भाद्रपद शुक्ला ११ सं० २०१२ को हुआ। ●

स्व. रमा जैन

आप का जन्म १९१७ ई० में हुआ। आप के पिता सुप्रसिद्ध उद्योगपति रामकृष्ण डालमिया थे। आप का विवाह सुविख्यात उद्योगपति एवं साहित्य-संरक्षक साहू शान्ति प्रसाद जैन के साथ हुआ।

आप ने राष्ट्रीय चेतना युक्त शिक्षा संस्थानों में विद्याध्ययन कर आदर्शोन्मुख वातावरण में अपने व्यक्तित्व का विकास किया। साहू जैन औद्योगिक संस्थानों के अन्तर्गत साहित्य-कला-शिक्षण सम्बन्धी योजनाओं की आप प्रेरणा शक्ति रहीं। आप ने भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन संस्थान को साहित्य के विभिन्न आयामों, यथा–धर्म, साहित्य, दर्शन, शिक्षा आदि में अपने कुशल निर्देशन में आगे बढ़ाया। आप की प्रेरणा से



ही कलकत्ता से वर्षों तक मासिक पत्रिका 'ज्ञानोदय' का प्रकाशन हुआ, जिसने अपने श्रेष्ठ साहित्यिक स्वरूप द्वारा पत्रकारिता का एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। अपने साहित्यानुरागी पति से मन्त्रणा कर भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा आप ने प्रति वर्ष भारतीय भाषाओं में प्रकाशित सर्वोत्तम कृति को एक लाख रुपये का पुरस्कार देने की अभिनव योजना प्रारम्भ की। वस्तुतः साहित्यकारों एवं साहित्य-प्रेमियों के लिए आप प्रेरणा की स्रोत थीं।

आप स्वयं भी श्रेष्ठ सम्पादक थीं। ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित – आधुनिक जैन कवि, प्रणय गीतिका तथा शैशवांकन का आप ने सह-सम्पादन किया।

आप साहू जैन ट्रस्ट की मैनेजिंग ट्रस्टी, साहू जैन चेरिटेबल सोसायटी की अध्यक्षा, मारवाड़ी बालिका विद्यालय एवं अभिनव भारती की कार्यकारिणी की सदस्या, वनस्थली विद्यापीठ (राजस्थान) की ट्रस्टी एवं गोवर्धन संघ (राजस्थान) की जनरल कौंसिल की सदस्या थीं। ●

स्व. छोटेलाल जैन

आप का जन्म १८९६ ई० में हुआ था। आप के पिता रामजीवनदास सरावगी थे। आप सुप्रतिष्ठित पाट व्यवसायी थे। पाट उद्योग के गनी ट्रेड एसोसियेशन के विभिन्न



पदों को आप ने सुशोभित किया। पंच के रूप में आप के निर्णय सर्वमान्य होते थे। आप दूरदर्शी, मूकदानी एवं साम्प्रदायिक ऐक्य के पुजारी थे।

आप जैन मूर्त्ति-कला एवं स्थापत्य-वैभव के अप्रतिम अन्वेषक थे। तत्सम्बन्धी चित्रों एवं पुस्तकों का आप ने विशाल संग्रह किया था। इसी विषय पर 'जैन बिबलियोग्राफी' (प्रथम खण्ड) आप का ख्याति-प्राप्त शोध-ग्रन्थ है। आप रायल ऐशियाटिक सोसाइटी (लन्दन) के सम्मानित सदस्य थे।

आप विभिन्न सार्वजनिक संस्थाओं के सक्रिय कार्यकर्त्ता थे। आप ने श्री दिगम्बर जैन युवक समिति को उसके स्थापना काल से ही विशेष सहयोग दिया एवं उसके द्वारा प्रकाशित 'जैन विजय' के सम्पादक भी रहे। महावीर पुस्तकालय को अपने द्वारा संग्रहीत पुस्तकों एवं चित्रों का एक महत्वपूर्ण अंश आपने प्रदान किया। आप अहिंसा प्रचार समिति एवं वीर सेवा मन्दिर के संस्थापक सदस्य तथा दिगम्बर जैन मन्दिरों, रथयात्रा कमेटी एवं स्याद्वाद महाविद्यालय (वाराणसी) के ट्रस्टी थे। जैन समाज द्वारा आप को अभिनन्दन ग्रन्थ से सम्मानित किया गया। आप का निधन २६ जनवरी १९६६ ई० में हुआ।

स्व. सत्यदेव विद्यालंकार

आप का जन्म १ अक्टूबर १८९७ ई० को नाभा राज्य (पंजाब) में हुआ था। आप ने गुरुकुल कांगड़ी से 'विद्यालंकार' की उपाधि प्राप्त की।

बाल्यावस्था से ही आप अपनी सम्पादन प्रतिभा का परिचय विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में दे चुके थे। अध्ययन समाप्त कर दिल्ली से प्रकाशित 'विजय' दैनिक का सम्पादन आप ने सम्भाला। तत्पश्चात् देश के विभिन्न भागों से प्रकाशित अनेकों पत्र-पत्रिकाओं का आप ने सम्पादन किया – यथा, हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स, वीर अर्जुन, अमर भारत, नव प्रभात आदि दैनिक तथा मारवाड़ी, प्रणवीर आदि साप्ताहिक/मासिक। कलकत्ता में जब आप विश्वामित्र तथा स्वतन्त्र (दैनिक) और नवयुग (मासिक) का सम्पादन कर रहे थे, तभी आप यहाँ के जनजीवन पर छा गए थे। हिन्दी पत्रों में 'कार्टून' की परम्परा का प्रारम्भ आप ने ही नवयुग (मासिक) से किया।

आप जैसे वर्चस्वी पत्रकार को अपने अक्षुण्ण देश-प्रेम के कारण अत्याचारी अंग्रेज शासकों के कोप का शिकार हो अनेकों बार जेल-यात्रा करनी पड़ी। गांधीजी पर मुकद्दमा, हमारे राष्ट्रपति (तब कांग्रेस अध्यक्ष को राष्ट्रपति कहा जाता था), धुन के धुनी, जीवन संघर्ष, राष्ट्रवादी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, बीकानेर षडयन्त्र का मुकद्दमा, यूरोप में आजाद हिन्द, टोकियो से इम्फाल, आदि दर्जनों प्रामाणिक पुस्तकें आप ने लिखीं, जिनमें भारत के तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक आन्दोलनों का जीवन्त विवरण मिलता है।

आप की 'परदा' और 'राष्ट्रधर्म' पुस्तकों पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा 'राधामोहन गोकुल पुरस्कार' प्रदान किया गया। ३१ मार्च १९६५ ई० को पंजाब सरकार के भाषा विभाग ने साहित्य एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में की गई आप की सेवाओं पर अभिनन्दन पुस्तिका निकाल कर आप को सम्मानित किया। आप का निधन २५ जून १९६५ ई० को हुआ। निर्भीक पत्रकारिता के क्षेत्र में उच्च मानदण्ड स्थापित करने के लिए आप को सदा याद किया जाएगा। •

स्व. रामकुमार भुवालका

आप के पूर्वज रतनगढ़ (राजस्थान) के निवासी थे। आप का जन्म ४ मई १८९७ ई० को हुआ। आप के पिता रंगलाल भुवालका थे। १९०१ ई० में आप अपने जेठे भाई के दत्तक चले गए थे।



व्यवसाय क्षेत्र में आप ने असाधारण प्रतिभा का परिचय दे कर प्रचुर धनोपार्जन किया, पर साथ ही आप महात्मा गांधी के निष्ठावान अनुयायी भी रहे। स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान सभी सत्याग्रहों में आप का सक्रिय सहयोग रहता था। आप पाँच बार गिरफ्तार भी हुए। कांग्रेस के कल्याणी एवं कलकत्ता अधिवेशनों में आप आवास - मन्त्री बने। आप पश्चिम बंग विधान परिषद में विधायक एवं राज्य सभा में सांसद भी रहे।

कलकत्ता महानगर में प्रायः सभी सांस्कृतिक, शैक्षणिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी संस्थाओं और कार्यक्रमों में आप सहयोगी रहते थे। आप आदर्श हिन्दी हाई स्कूल, विशुद्धानन्द अस्पताल, रतनगढ़ नागरिक परिषद के अध्यक्ष; प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र तथा आरोग्य भवन (जसीडीह), बड़ाबाजार युवक सभा, सेठ सूरजमल जालान ट्रस्ट, रतनगढ़ चैरिटी ट्रस्ट के ट्रस्टी; प० बंग कुष्ठ निवारण संघ, मारवाड़ी बालिका विद्यालय, भारतीय संस्कृति संसद तथा सस्ता साहित्य मण्डल की संचालन समिति के सदस्य; तथा संगीत नाट्य अकादमी 'सौरभ' के प्रधान संरक्षक थे। आप ने सार्वजनिक हित के लिए एक विशाल धन-राशि से भुवालका जनकल्याण ट्रस्ट की स्थापना की।

समाज-सुधार के क्षेत्र में भी आप का योगदान सराहनीय रहा। तत्कालीन रूढ़िवादी समाज में स्वयं विधवा विवाह कर आदर्श प्रयोगात्मक स्वरूप द्वारा सामाजिक क्रान्ति का मार्ग आप ने प्रशस्त किया। दहेज उन्मूलन, परदा-प्रथा विरोध, बाल विवाह का बहिष्कार, आदि समाजोपयोगी कार्यों में आप ने सोत्साह भाग लिया। हिन्दू-मुस्लिम दंगों पर शान्ति स्थापना में आप का विशेष सहयोग रहता था। आप अत्यन्त साहसिक प्रवृत्ति के थे। बंगाल फ्लाइंग क्लब के आप न केवल अध्यक्ष ही बने वरन् स्वयं कुशल विमान-चालक भी थे।

आप अत्यन्त गुणग्राही एवं भक्त-हृदय प्रकृति के थे। साथ ही आप प्रबुद्ध चिन्तक एवं कुशल लेखक भी थे। आप के लेख हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में बहुधा प्रकाशित होते रहते थे। आप के निबन्ध संग्रह हैं— सामयिक चिन्तन, मानस सर्वस्व और चिन्तनिका। वस्तुतः आप का सम्पूर्ण जीवन कर्ममय एवं यज्ञमय था। •

स्व. ललित कुमार नटवर

आप का जन्म बिहार में हुआ था। यद्यपि जन्म से आप मुसलमान थे, पर बाद में हिन्दू हो गए। कलकत्ता ही आप का कार्य-स्थल था। यहाँ आप ईश्वरदास जालान के संरक्षण में रहते थे।

हिन्दी साहित्य में लोकप्रिय कवि के रूप में आप का महत्वपूर्ण स्थान है। महाकवि दिनकर के आप मित्र थे। ●

हर्षनाथ

आप का जन्म बैसाख शुक्ल ४ सम्वत् १९७३ को गौसपुर (वाराणसी) में हुआ। मुंशी कतवारु लाल श्रीवास्तव आप के पिता थे। आप ने बनारस से हिन्दी में एम० ए० किया।



आप समर्पित साहित्यकार हैं। आप के कई उपन्यास एवं कहानी-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उपन्यासों में प्रमुख हैं – उड़ती धूल, अलग रास्ते, रेखाएँ और रेखाएँ, आदि। कहानी संग्रह हैं – शरीफ और कमीने। हंस, ज्ञानोदय, धर्मयुग, नई कहानियाँ आदि पत्रिकाओं में आप की रचनाएँ प्रकाशित होती रही हैं। आप ने 'आयुध' मासिक पत्र का सम्पादन भी किया है। आप प्रगतिशील लेखक संघ (हिन्दी यूनिट) के सचिव रह चुके हैं। सम्प्रति जनवादी गण-तान्त्रिक साहित्यकार-कलाकार मोर्चा के अध्यक्ष हैं। कई वर्षों से आप सावित्री गर्ल्स कालेज के सुपरिटेंडेंट हैं। ●

अक्षय चन्द शर्मा

आप का जन्म वैशाख शुक्ल ३ सम्वत् १९७४ को लाडनूं (राजस्थान) में हुआ।



गिरधारी लाल शर्मा आप के पिता थे। एम० ए० और साहित्यरत्न की परीक्षा उत्तीर्ण कर आप अध्यापन, पत्रकारिता एवं साहित्य सृजन में लग गये।

आप ने राष्ट्रभाषा हिन्दी और हरिजनों में शिक्षा प्रचार के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया। लाडनूं में हिन्दी विद्यालय की स्थापना, जोधपुर में 'लोकमत' दैनिक का सम्पादन, बीकानेर में भारतीय विद्या मन्दिर के प्रधानाचार्य, सादुल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट में प्रधान सचिव एवं श्री गंगानगर में प्रभाकर आदि परीक्षाओं के लिए संयोजक के रूप में आप ने अपना योगदान दिया।

कलकत्ता में भारतीय संस्कृति संसद एवं अन्यान्य विभिन्न साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं में अध्ययन एवं विचार गोष्ठियों का निर्देशन तथा विवेक संस्थान द्वारा प्रदत्त 'पूनमचन्द भूतोड़िया' पुरस्कार के लिए कृती साहित्यकार का चयन करने के लिए मार्ग-दर्शन भी आप कर रहे हैं।

आप अच्छे साहित्यकार भी हैं। राज-

स्थान के सन्त साहित्य का आप ने सम्पादन कर प्रकाशन करवाया है। आप की कविताएँ 'विशाल भारत' में प्रायः प्रकाशित होती रहीं। सम्प्रति आप भारतीय विद्या-मन्दिर, बीकानेर (राजस्थान) के उपकुलपति हैं। ●

कन्हैयालाल सेठिया

आप का जन्म ११ सितम्बर १९१९ ई० को सुजानगढ़ (राजस्थान) में हुआ। आप के पिता छगनमल सेठिया भी साहित्यसेवी एवं दयालु व्यक्ति थे। आप की प्रारंभिक शिक्षा सुजानगढ़ में एवं स्नातकीय शिक्षा कलकत्ता विश्वविद्यालय में हुई।



प्रारम्भ से ही आप राष्ट्रवादी आंदोलन से सम्बद्ध रहे। कलकत्ता स्थित आपकी गद्दी ब्रिटिश साम्राज्यवाद विरोधी साहित्य का भंडार घर बनी हुई थी। १९४० में आप की काव्य पुस्तक 'अग्निवीणा' को क्रान्तिकारी साहित्य मान कर सरकार ने आप के ऊपर मुकद्दमा चलाया। बीकानेर राज्य प्रजा परिषद के भी आप सक्रिय नेता रहे। आप ने जागीरदारी प्रथा के उन्मूलन, हरिजनों एवं महिलाओं की शिक्षा व विकास, तथा राजस्थानी भाषा को संविधान की भाषा-अनुसूची में शामिल करने के लिए अथक प्रयत्न किए।

आप ने गद्य एवं पद्य—दोनों ही विधाओं में मां-भारती को समृद्ध किया है, पर मूलतः प्रकृति से आप संवेदनशील कवि हैं। आप ने हिन्दी में १२, राजस्थानी में ६ एवं उर्दू में १ पुस्तक लिखी है। आप की पुस्तकें अंग्रेजी, एवं बंगला में भी अनूदित हुई हैं। आप का प्रसिद्ध काव्य संग्रह 'लीलटांस' १९७६ ई० में राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत हुआ। आप की बहुचर्चित कविता 'धरती धोरां की' आज भी करोड़ों राजस्थानी प्रवासियों की धड़कनों का मधुर संगीत है। महाराणा प्रताप पर लिखे अमर गीत 'पातल और पीथल' के लिए आप को न केवल अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा सम्मानित किया गया वरन् 'हल्दीघाटी की चतुःशती समारोह' पर राजस्थान सरकार द्वारा विशेष रूप से सम्मानित करने हेतु आमंत्रित किया गया। राजस्थानी साहित्य की सेवा के हेतु आपको १० हजार रु० का पूनमचन्द भूतोड़िया पुरस्कार भी दिया गया।

आप विविध साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं से सम्बद्ध हैं और उनमें से कई (यथा—राजस्थान परिषद, बीकानेर क्षेत्रीय परिषद आदि) की स्थापना में आप की विशेष भूमिका रही है। आप साहित्य अकादमी की राजस्थानी भाषा परामर्शदाता समिति के सम्मानित सदस्य रहे। राजस्थानी भाषा के उन्नयन एवं प्राण-प्रतिष्ठा हेतु आप की अनवरत साधना एवं प्रयासों ने इसे आज अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं के समकक्ष ला खड़ा किया है। आप के काव्य आज राजस्थानियों के लिए लोक-गीत बन गए हैं। ●

स्व. शिवशेखर द्विवेदी

आपने हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की 'प्रथमा' एवं 'मध्यमा' परीक्षाएँ (जो उस समय सुप्रसिद्ध साप्ताहिक 'मतवाला' के कार्यालय में होती थीं) उत्तीर्ण कीं। आपकी साहित्यिक प्रतिभा एवं कुशाग्र बुद्धि पर मुग्ध हो महाकवि निराला ने अपनी इकलौती

पुत्री सरोज का विवाह आप से कर दिया। सरोज की अकाल-मृत्यु से निराला और आपको गहरा सदमा लगा।

आप बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के सक्रिय सदस्य थे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की परीक्षाओं के लिए जब पुस्तकालय को केन्द्र बनाया गया, तब आप परीक्षार्थियों को निःशुल्क पढ़ाने लगे।

१९६५ ई० से दैनिक 'सन्मार्ग' के साप्ताहिक स्तम्भ में आप वैदिक युगीन कथाओं को साहित्यिक रूप में प्रस्तुत करने लगे। आप का यह प्रयास शीघ्र ही लोकप्रिय हो गया। आपने 'निराला की काव्य-मार्मिकता' पर एक समालोचना ग्रंथ भी लिखा जो सम्प्रति विश्वविद्यालयों के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में है। आप प्रकृति से बड़े मिलन-सार एवं पर-दुःख कातर व्यक्ति थे। आपका निधन १९८० ई० में लखनऊ में हो गया। ●

प्रो. रामव्यास सिंह

आप का जन्म १९१९ ई० में कर्णछपरा (बलिया) में हुआ था। आप एम. ए., बी. टी., साहित्यरत्न हैं।



आप युवक होते ही स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़े। कलकत्ता आने पर आप बंग-वासी कालेज में हिन्दी के प्राध्यापक नियुक्त हो गए। आप सुविज्ञ साहित्यकार हैं। आप के कई विचारात्मक निबन्ध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। आप की पुस्तकें हैं—'जीवन यान' तथा 'सूत्रधार' (काव्य संग्रह) एवं 'अमूल्य चित्र' (कहानी संग्रह)।

आप सामाजिक एवं राजनैतिक गति-विधियों में भी सदा भाग लेते रहते हैं। ●

स्व. रणधीर साहित्यालंकार

आप का जन्म नवगाई (संग्रामपुर) में क्षत्रिय कुल में हुआ था। देवघर विद्यापीठ से आपने साहित्यालंकार की उपाधि प्राप्त की। स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भाग लेने के कारण आप को अनेकों बार जेल जाना



पड़ा। १९४२ ई० के भारत छोड़ो आंदोलन में आप कांग्रेस की पत्रिका का सम्पादन करते रहे और फरार अवस्था में कलकत्ता आए।

यहाँ आकर आपने अपना पत्रकार जीवन 'अभिनय' पत्रिका से शुरू किया। तत्पश्चात् आप ने दो पत्रिकाएँ 'मानव' एवं 'कलाकार' निकालीं। कुछ दिनों तक 'सन्मार्ग' दैनिक में भी काम किया। १९५७ ई० में आपने 'कला संसार' साप्ताहिक का प्रकाशन आरंभ किया, जिसका स्वयं आजीवन सम्पादन करते रहे और जो आज भी आपकी स्मृति स्वरूप विद्यमान है। लघु समाचार-पत्रों के हितों

की रक्षा हेतु आप सदा आगे रहते थे। सिने कलाकारों की प्रमुख संस्था बी. एफ. जे. ए. के आप आजीवन सदस्य थे।

आप लोकप्रिय कवि एवं नाट्यकार भी थे। देश-प्रेम की भावना से ओत-प्रोत आपकी कविताओं और नाटकों ने कलकत्ते में धूम मचा दी थी। आपके प्रसिद्ध नाटक थे – झांसी की रानी, सरदार भगत सिंह, मिट्टी हिन्दुस्तान की, कश्मीर हमारा है, समाज की जंजीरें, आदि।

आपका निधन २६ दिसम्बर १९७४ ई० को हुआ। कर्मठता, निर्भीकता एवं स्वाभिमान के लिए आप सदा स्मरणीय रहेंगे। •

ऋषि जेमिनी कौशिक 'बरुआ'

आप सक्रिय स्वाधीनता सेनानी रहे, तदर्थ कारादण्ड का वरण भी किया। आप ने प्रबुद्ध पत्रकार के रूप में 'राजस्थान क्षितिज' (मासिक) एवं समाज सेवक (साप्ताहिक) का सम्पादन किया।



१९५१ ई० में आप ने 'जेमिनी प्रकाशन' की स्थापना की। आप की रचनाओं में राजस्थान के रीति-रिवाज, परम्परा और धर्म, विशेष कर मारवाड़ी प्रवासियों के संघर्ष एवं सफलता का चित्रण रहता है। आप का वृहद् शोध ग्रन्थ है – 'मैं मारवाड़ी समाज को प्यार करता हूँ' (आठ भाग)।

आप ने अनेकशः साहित्यिक एवं सामाजिक विभूतियों का जीवन-वृत्त अभिनन्दन ग्रन्थों के रूप में सम्पादित किया है, जिनमें प्रमुख हैं – महाकवि निराला एवम् मैथिलीशरण गुप्त, राजा बलदेवदास बिड़ला, सूरजमल जालान, आनन्दीलाल पोद्दार, रामदेव चोखानी, आदि। •

कल्याण मल लोढ़ा

आप का जन्म २८ सितम्बर १९२१ ई० को जोधपुर में हुआ। आप के पिता चन्दनमल लोढ़ा थे। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से आप ने एम० ए० किया।



आप जोधपुर विश्वविद्यालय के कुलपति एवं कलकत्ता विश्वविद्यालय में हिन्दी के विभागाध्यक्ष भी रह चुके हैं। कई शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना में आप की प्रधान भूमिका रही है, जिनमें प्रमुख हैं – जैन बालिका विद्यालय, श्री-शिक्षायतन कालेज, जैपुरिया कालेज, आदि।

कई सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय संस्थाओं से परामर्शदाता के रूप में आप सम्बद्ध हैं, यथा–काशी नागरी प्रचारिणी सभा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, भारतीय हिन्दी परिषद प्रयाग, लोक सेवा आयोग, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, भारतीय संस्कृति संसद, भारतीय भाषा परिषद, एशियाटिक सोसाइटी, आदि। कई विश्वविद्यालयों की सीनेट, शिक्षा परिषद, चयन समिति आदि

के आप सदस्य हैं, यथा – जोधपुर, उदयपुर, रांची, प्रयाग, कलकत्ता और विश्वभारती।

सेण्ट जॉन एम्बुलेंस, रेडक्रास सोसाइटी एवं रोटरी क्लब के आप आजीवन एवं मान्य सदस्य हैं। सम्प्रति कलकत्ता विश्व-विद्यालय में हिन्दी के आचार्य हैं। ●

रतनलाल जोशी

आप का जन्म १९२२ ई० में बिसाऊ (झुझनूं) में हुआ था। आप के पिता द्वारिका प्रसाद जोशी थे। आप ने इण्टर-मीडिएट के साथ संस्कृत में मध्यमा तथा हिन्दी में प्रभाकर की परीक्षायें भी पास कीं।



आप महात्मा गांधी के निर्देशित पथ पर आस्था रखते हैं। हरिजन उद्धार, खादी प्रचार तथा स्वाधीनता संग्राम में आप ने सोत्साह भाग लिया। आप प्रबुद्ध पत्रकार तथा सम्पादक हैं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का आप ने सम्पादन किया, जिनमें प्रमुख हैं – सर्वोदय आश्रम सम्मेलन तथा भाई-बहन (मासिक), समाज सेवक, राजस्थान, राजस्थानी समाज (साप्ताहिक) आदि। आप साहित्यकार भी हैं, आप की पुस्तकें हैं – अरावली की आत्मा, लाल किले में, आदि। आप की सम्पादित पुस्तकें हैं – राजस्थानी काव्य पुस्तिका एवं क्रान्तिकारी-प्रेरणा के स्रोत।

आप विभिन्न साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं से सम्बद्ध हैं – राजस्थान परिचय ग्रन्थमाला, महिला साहित्य प्रकाशन, संस्कृति सदन, जमनालाल बजाज व्याख्यानमाला, कुल लक्ष्मी, राजस्थानी समाज ट्रस्ट, आदि। ●

डॉ. प्रबोध नारायण सिंह

आप का जन्म नीबराणा के चौहान वंश में ६ दिसम्बर १९२६ ई० को हुआ। आप ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से ४ विषयों (हिन्दी, पालि, फारसी, भाषा विज्ञान) में एम० ए० किया। कलकत्ता विश्वविद्यालय से बंगला के अतिरिक्त अन्य किसी आधुनिक



भारतीय भाषा में डी० लिट्० की उपाधि पानेवाले आप प्रथम व्यक्ति हैं। आप ने मगध विश्वविद्यालय से भी डी० लिट्० किया है। आप साहित्यरत्न एवं साहित्यालंकार हैं। आप मैथिली, संस्कृत, उर्दू तथा अंग्रेजी भाषा के भी सुविज्ञ विद्वान हैं। आप चारुचन्द्र कालेज में प्राध्यापक तथा जैपुरिया कालेज में हिन्दी विभागाध्यक्ष रह चुके हैं। सम्प्रति कलकत्ता विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के उपाचार्य, तथा पालि एवं भाषा-विज्ञान विभाग में अंशकालीन प्राध्यापक हैं।

आप के शोध प्रबन्ध एवं निबन्ध विविध

पत्र-पत्रिकाओं एवं स्मारिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। आप सर्जनात्मक साहित्यकार भी हैं। आप के प्रकाशित काव्य संग्रह हैं – लासिका, अनुमान अष्टक, जयन्ती एवं वैजयन्ती। आप सफल नाट्यकार भी हैं, मौलिक नाटक हैं – प्रेम का रोग, हाथी के दाँत तथा चोर। अन्धेर नगरी आप का अनूदित नाटक है, जब कि आजाद हिन्द फौज मौलिक कहानी संग्रह है। आप के कुशल सम्पादन में मासिक मैथिली पत्रिका 'मिथिला दर्शन' निकलती है। आप के सुयोग्य निर्देशन में हनुमान मन्दिर ट्रस्ट का स्नाकोत्तर शिक्षण संस्थान हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में संलग्न है। ●

ओंकारमल बोहरा (जैन)

आप का जन्म ४ जनवरी १९२८ ई० को बल्लभनगर (उदयपुर) में हुआ। आप एम० ए०, साहित्यरत्न हैं।



आप ने ने १९४२ ई० के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में सक्रिय योगदान दिया। मेवाड़ राज्य में युवक संगठन तथा शिक्षक संघ की आप ने स्थापना की। १९५५ ई० में अपने गाँव वल्लभनगर मे आप ने गांधी सेवा सदन की स्थापना की। अखिल भारतीय देशी राज्य परिषद, मेवाड़ प्रजामण्डल, गाडिया लोहार सम्मेलन, आबू विलय आन्दोलन आदि से आप सक्रिय रूप में सम्बद्ध रहे। १९६७ ई० में आप चित्तौड़गढ़ से लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए।

आप आरम्भ से ही हिन्दी साहित्य सम्मेलन में सक्रिय हैं। उदयपुर में १९४८ में आप ने प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना की। उसी वर्ष आप कलकत्ता आ कर 'आज को बीकानेर' का सम्पादन करने लगे। बाद में आप ने 'रियासती आवाज' का भी सम्पादन किया। १९५५ ई० में आप के सम्पादन-संचालन में 'विशाल राजस्थान' साप्ताहिक का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। आप मारवाड़ी छात्र संघ, मारवाड़ी सम्मेलन एवं मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के माध्यम से समाज-सेवा में संलग्न हैं। तरुण जैन संघ के माध्यम से समाज-सुधार हेतु संघर्ष में भी आप ने सक्रिय सहयोग दिया। ●

पं. राम हर्ष तिवारी

आप का जन्म २३ जनवरी १९३६ ई० को हुआ। आप के पिता पं० चन्द्रिका तिवारी हैं। आप ने एम० ए० किया है। आप ने १६ शिक्षण-संस्थाओं की स्थापना



की जिनमें आधुनिक शिक्षा-निकेतन, ए० एस० एन० बालिका विद्यालय, ऊषा हिन्दी हाई स्कूल (पाइकपाड़ा) आदि प्रमुख हैं। आधुनिक ग्रन्थागार की स्थापना कर पुस्तक प्रकाशन कार्य भी आप कर रहे हैं। आप 'धीरज' मासिक पत्रिका के संचालक-संपादक

एवं कई छात्रोपयोगी पुस्तकों के लेखक हैं। आप बड़ाबाजार जिला कांग्रेस कमेटी, अपर इण्डिया एसोसियेशन के सचिव, निखिल बंग शिक्षिक कल्याण समिति, कलकत्ता स्केवेण्डर्स लेबर यूनियन, प० बंग राष्ट्र भाषा पुस्तक व्यवसायी आदि विभिन्न संस्थाओं के विविध पदों पर रह कर निरन्तर समाज-सेवा में संलग्न हैं। ●

स्व. ईश्वरी प्रसाद भाटिया

स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान हिन्दी नाट्य परिषद राष्ट्रीय जागरण के लिए वीर रस के नाटक खेलती थी। उसके लोकप्रिय नाटक 'चाणक्य' में आपने चाणक्य पात्र का ऐसा सजीव अभिनय किया कि दर्शक एवं समीक्षक मुग्ध हो गए। उस नाटक को बारम्बार दीर्घ काल तक खेलना पड़ा। बंगला समाचार पत्रों ने आपके अभिनय को श्रेष्ठतम बंगला अभिनेताओं के समकक्ष माना और सराहा।

राष्ट्रीय आन्दोलन में भी आप सदैव सक्रिय भाग लेते रहे। ●

स्व. भोलानाथ बर्मन

जब कलकत्ता में 'हिन्दी नाट्य समिति' की स्थापना की गई, तब आप उसके प्रथम मंत्री बने। इस के मंच से देशभक्ति के अनेक श्रेष्ठ नाटक खेले गए। जब यह समिति बिखरने लगी, तब नाट्य-प्रेमी कलाकारों ने 'हिन्दी नाट्य परिषद' की स्थापना की और उसके भी प्रथम मंत्री आप ही निर्वाचित हुए।

हिन्दी के प्रायः सभी नाटकों में आप भाग लेते थे। शाहजहां और भामाशाह की तो आप ऐसी सफल भूमिका अदा करते थे कि मानो वे पात्र ही जीवन्त हो मंच पर आ गए हों।

अनाथ बच्चों एवं असहाय महिलाओं को व्यावहारिक कला-कौशल का शिक्षण देने हेतु कुटीर उद्योग भी आप ने खोल रखा था ताकि उन उपेक्षितों की जीविका चलती रहे।

१९२१ ई० में महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भाग ले कारावास के दण्ड का भी सहर्ष वरण किया। जब सक्रिय जीवन से अवकाश ले आप वाराणसी प्रस्थान करने लगे, तब बड़ाबाजार के कार्यकर्त्ताओं ने आपके सम्मान में शानदार विदाई भोज आयोजित किया। ●

स्व. राधामोहन गोकुल

आप का जन्म उत्तरप्रदेश के लालगोपालगंज (इलाहाबाद) में १८६५ ई० में हुआ था। आप के पिता का नाम गोकुलचन्द था। आप की शिक्षा बिहार के गाँवों



में फारसी में हुई। बाद में आगरा में अंग्रेजी साहित्य का भी अध्ययन किया।

१९०४ ई० में जीविकोपार्जन हेतु कलकत्ता आने पर आप का सम्पर्क क्रांतिकारियों से हो गया। मारवाड़ी युवकों को आप स्वाधीनता संघर्ष की ओर प्रेरित करने लगे। कलकत्ता आर्य समाज के सहयोग से आप 'सत्य सनातन धर्म' पत्र प्रकाशित कर सामाजिक कुरीतियों का भण्डाफोड़ करने लगे। १९०७ ई० में लाला लाजपत राय को देश निकाला दिये जाने पर 'देशभक्त लाजपत' नामक पुस्तक आप ने लिखी। इटली के

देशभक्तों मेजिनी और गैरिबाल्डी के जीवन-चरित्र, गुरु गोविन्द सिंह, नीति दर्शन, देश का धन, आदि आप की अन्य पुस्तकें हैं।

१९३५ ई० में आप स्वामी ब्रह्मानन्द द्वारा स्थापित विद्यालय में हमीरपुर चले गए और वहीं से गुप्त रूप से क्रान्ति-दल का संगठन करते रहे। पेचिश हो जाने से एवं चिकित्सा के अभाव में आप की इहलीला समाप्त हो गई। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन (प्रयाग) ने आप की स्मृति में समाज-सुधार सम्बन्धी उत्कृष्ट पुस्तक लिखने पर 'राधामोहन गोकुल पुरस्कार' देना प्रारम्भ किया। ●

स्व. पं. शिवनाथ शर्मा

आप का जन्म १८६७ ई० में काशी में हुआ था। आप के पिता दामोदर शर्मा ज्योतिष के विद्वान थे। आप ने लखनऊ से बी० ए० पास किया। साथ ही संस्कृत एवं अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं का गहन अध्ययन किया।



विद्यार्थी जीवन में ही 'रसिक पंच' नामक पत्र आप ने प्रकाशित किया। इसके बाद कलकत्ते से पं० सदानन्द मिश्र के सम्पादकत्व में निकलनेवाले 'सार सुधा निधि' में चाटु वार्ता स्तम्भ के अन्तर्गत हास्य-रस के लेख लिखने लगे। आप के लेख कभी-कभी 'उचित वक्ता' और 'भारत मित्र' में भी प्रकाशित होते थे। १९०१ ई० में आप ने 'गोपाल' पत्रिका का सम्पादन किया। फिर लखनऊ से 'वसुन्धरा' पत्रिका निकाली। १९०५ ई० में अपने 'आनन्द प्रेस' से आप ने 'साप्ताहिक आनन्द' प्रकाशित किया, जो कालान्तर में दैनिक हो गया। इसमें 'मिस्टर व्यास की कथा' स्तम्भ आप लिखते थे। उन्हीं लेखों में से चयन कर 'गंगा पुस्तक माला' ग्रन्थ प्रकाशित हुआ।

आप ब्रजभाषा एवं खड़ी बोली दोनों में ही अच्छी कविता करते थे। बहसी पण्डित, दरबारीलाल, नवीन बाबू, मानवी कमीशन, नागरी निरादर व गदर का फूल आप के रचित प्रहसन हैं। कई बंगला पुस्तकों का आप ने हिन्दी में अनुवाद किया, जिसमें 'कलियुगेर प्रह्लाद' बहुत चर्चित रही।

अवध गोशाला (लखनऊ) के प्रधान मन्त्री के रूप में आप ने सराहनीय सेवा कार्य किया, जिसके लिए आप को 'गो सेवा धुरन्धर' की उपाधि मिली। लखनऊ में ही कालीचरण हाई स्कूल में अध्यापन कार्य भी आप ने किया।

आप का देहावसान कलकत्ता में पक्षाघात से १९२८ ई० में हुआ। ●

स्व. पं. जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी

आप का जन्म १० अक्टूबर १८७५ ई० को बंगाल के नदिया जिले में छिटका नामक स्थान पर हुआ। पं० कालीप्रसाद चतुर्वेदी आप के पिता थे। शिक्षा-दीक्षा प्रधानतः बिहार के मलयपुर (मुंगेर) में हुई। आप ने कलकत्ता से एफ. ए. किया। हिन्दी, संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी तथा उर्दू के आप अच्छे ज्ञाता थे।

व्यवसायी होते हुए भी आप की रुचि हास्य और व्यंग्य साहित्य में थी। आचार्य

महावीर प्रसाद द्विवेदी की लेखमाला 'कालिदास की निरंकुशता' के प्रत्युत्तर में आप ने 'भारत मित्र' में आलोचनात्मक लेख



'निरंकुशता निदर्शन' लिखा, जिससे आप की ख्याति बढ़ी। हास्य व्यंग्यपूर्ण शैली में आप ने अनेकों पुस्तकें लिखीं, जिनमें प्रमुख हैं– विचित्र विवरण, भारत की वर्तमान दशा, स्वदेशी आन्दोलन, राष्ट्रीय गीत, विचित्र वीर डान, बिहार का साहित्य, निबन्ध निचय, हिन्दी लिंग विचार और तुलसीदास (नाटक) आदि।

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के छठे अधिवेशन पर इलाहाबाद में आप ने 'अनुप्रास का अन्वेषण' शीर्षक अपना व्यंग्य-विनोदपूर्ण निबन्ध पढ़ा। १९१९ ई० में बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सोनपुर में आयोजित प्रथम अधिवेशन में आप ने अध्यक्षीय भाषण किया। आप अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के लाहौर में आयोजित १२ वें अधिवेशन के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 'हितवार्ता' मासिक पत्र के सम्पादन में भी आप सहयोगी थे।

आप का निधन २ सितम्बर १९३९ ई० में हुआ। अपनी विलक्षण हास्य-व्यंग्य रचनाओं के कारण आप 'हास्यरसावतार' कहलाये। ●

स्व. बाबूराव विष्णु पराड़कर

आप का जन्म ६ नवम्बर १८८३ ई० को वाराणसी के एक महाराष्ट्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ। आप के पिता विष्णुराव पराड़कर शिक्षक थे व उनका कार्यक्षेत्र प्रायः छपरा व भागलपुर रहा। आप ने इण्टरमीडिएट तक शिक्षा पाई।



आप ने पत्रकार जीवन का प्रारम्भ कलकत्ते से हरिकृष्ण जौहर के सम्पादकत्व में प्रकाशित 'हिन्दी बंगवासी पत्र' के उप-सम्पादक के रूप में किया। तत्पश्चात् अपने मामा तथा 'हितवार्ता' के प्रधान सम्पादक पण्डित सखाराम गणेश डेउस्कर के साथ काम करने लगे। आप ने डेउस्कर की बंगला पुस्तक 'देशेर कथा' का हिन्दी अनुवाद 'देश की बात' शीर्षक से किया, जिसे सरकार ने जब्त कर लिया। फिर आप 'भारत मित्र' के सम्पादकीय विभाग में चले गए।

उस समय नेशनल कॉलिज क्रान्तिकारियों का केन्द्र-स्थल था और योगी अरविन्द घोष इसके प्रधानाचार्य थे। सम्पादन के साथ-साथ आप इसमें हिन्दी-मराठी का अध्यापन भी करने लगे। १९१६ ई० के लगभग आप को भी क्रान्तिकारी समझ कर सरकार ने गिरफ्तार कर लिया। प्रायः ३½ वर्षों तक बंगाल की विविध जेलों में रहे। आप कहा करते थे – 'मैं गुप्त समितियों में काम करने

के लिए ही कलकत्ता आया था, पत्रकार बनने नहीं।'

१६२० ई० में आप काशी लौट गए। वहाँ पहिले 'आज' और फिर 'संसार' पत्रों में काम करने लगे। नमक सत्याग्रह के दौरान 'आज' पर जब प्रतिबन्ध लगा, तब आप ने 'रणभेरी' नामक गुप्त पत्र का सम्पादन किया। प्रेमचन्द की स्मृति में हंस के विशेषांक का सम्पादन किया। कुछ काल तक मासिक-पत्र 'कमला' से भी सम्बद्ध रहे।

निर्भीक पत्रकार के साथ ही आप उत्कृष्ट साहित्यकार भी थे। हिन्दी भाषा के प्रति आप की सेवाओं के सम्मान स्वरूप अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने अपने शिमला अधिवेशन (१६३८ ई०) का आप को अध्यक्ष बनाया तथा 'साहित्य वाचस्पति' की उपाधि से अलंकृत किया।

आप का निधन १२ जनवरी १६५५ ई० को हुआ। पत्रकारिता तथा साहित्य क्षेत्र में हिन्दी भाषा की आप ने जो महती सेवा की वह चिरस्मरणीय रहेगी। •

स्व. निहाल चन्द बेरी

आप के पुरखे पंजाब से आकर वाराणसी में बस गये थे। आप का जन्म वाराणसी



में १८८६ ई० में हुआ था। 'बेरी एण्ड कम्पनी' के नाम से हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशन तथा विक्रय का कार्य कलकत्ता से ही आप ने प्रारम्भ किया। आप हिन्दी के अच्छे लेखक भी थे। अपने जीवन काल में 'आलादीन का चिराग', 'सिन्दबाद जहाजी', 'बनते-बिगड़ते सन्दर्भ' आदि १० पुस्तकें आपने लिखीं थीं। आप का स्वर्गवास १९७० ई० में हुआ था। •

स्व. मुंशी नवजादिक लाल श्रीवास्तव

आप का जन्म चिलकहर ग्राम (बलिया) में १८८८ ई० में हुआ। रामलाल श्रीवास्तव के आप पुत्र थे। जीवकोपार्जन हेतु कलकत्ता डाक-विभाग में पोस्टमेन के रूप में जीवन आरम्भ किया।



हिन्दी, उर्दू, बंगला तथा उर्दू भाषाओं का आपने स्वाध्याय से गहन मनन किया। ओजस्वी साहित्यकार तो आप थे ही, साथ ही हिसाब-किताब रखने तथा प्रबन्ध करने में भी निपुण थे। फलतः महादेव प्रसाद सेठ ने अपने सुविख्यात पत्र 'मतवाला' की व्यवस्था आपके सुपुर्द कर दी। आचार्य शिवपूजन सहाय, निराला, उग्र, ईश्वरी प्रसाद शर्मा आदि के सहयोग से आपने मतवाला को हिन्दी जगत का हास्य-व्यंग्य प्रधान प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र बना दिया। इसमें 'मतवाला की बहक' शीर्षक स्तम्भ भी आप लिखते थे। तत्पश्चात् आपने भूतनाथ कार्यालय से 'सरोज'

नामक साहित्यिक पत्र निकाला। इलाहाबाद में कुछ काल तक 'चांद' का सम्पादन करने के बाद पुनः कलकत्ता आकर पहिले 'हिन्दू पंच' और फिर सलकिया से निकलनेवाले साप्ताहिक पत्र 'जागृति' का सम्पादन किया।

आपके मौलिक उपन्यास हैं – शान्ति निकेतन, बेगमों के आँसू और पराधीनों की यात्रा। लाला लाजपत राय की ओजपूर्ण जीवनी के अतिरिक्त श्रीकृष्ण, सती रुक्मिणी, सती बेहुला, नल दमयन्ती, आदि धार्मिक पुस्तकें भी आपने लिखीं।

आपका निधन १९३९ ई० में हुआ। पत्रकारिता के क्षेत्र में अपनी देन के लिए आप हिन्दी जगत में सदा याद किए जाएँगे। ●

स्व. आदित्य नारायण अवस्थी

आप का जन्म १८९३ ई० में कुंसा ग्राम (रायबरेली) में हुआ। आप स्वतन्त्रता संग्रामी एवं निर्भीक पत्रकार थे।



१९३४ ई० में आप ने कानपुर से 'विजय' दैनिक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया और अंग्रेजों के कोपभाजन बन कर राजद्रोह के अपराध में कारावरण किया। कलकत्ते में आप ने जागृति, लोकमान्य, विश्वबन्धु, विश्वमित्र, नवभारत टाइम्स आदि दैनिक पत्रों के सम्पादकीय विभाग में काम किया। कुछ समय तक 'विशाल भारत' मासिक पत्र का भी सम्पादन किया। नवभारत टाइम्स के बन्द होने पर उस पत्र के चुने हुए पत्रकारों के सहयोग से सहकारिता के आधार पर दैनिक पत्र 'विकास' निकाला जो बहुत लोकप्रिय हो गया, पर बाद में बन्द करना पड़ा।

आप स्वतन्त्र विचारों के पत्रकार थे। संचालकों से आप की कम ही बनती थी। अन्त में आप ने एक संवाद-संस्थान (न्यूज एजेंसी) व्यक्तिगत रूप में प्रारम्भ की और कलकत्ते के बाहर के पत्रों में संवाद भेजने लगे। कतिपय बंगला प्रकाशन-संस्थाओं से प्रकाशित हिन्दी पुस्तकों का सम्पादन भी आप ने किया।

आप का निधन २५ जुलाई १९६२ ई० को हुआ। ●

स्व. डॉ. हेमचन्द्र जोशी

आप का जन्म उत्तर प्रदेश के नैनीताल में १८९४ ई० को हुआ था। पेरिस विश्वविद्यालय से आप ने डी० लिट्० की उपाधि प्राप्त की।



अपने पत्रकार जीवन का प्रारम्भ आप ने पं० झाबरमल शर्मा तथा कुंवर गणेश सिंह भदौरिया के पत्र 'कलकत्ता समाचार' से किया। अल्मोड़ा से 'कूर्मांचल केसरी' नामक सचित्र साप्ताहिक पत्र भी आप ने निकाला।

१९३४ ई० में अनुज इलाचन्द्र जोशी के साथ कलकत्ता से 'विश्व वाणी' समाचार-विचार साप्ताहिक निकाला। फिर मासिक 'विश्व-मित्र' के सम्पादक रहे। बम्बई से प्रकाशित लोकप्रिय पत्रिका 'धर्मयुग' के आदि-सम्पादक आप ही थे।

भाषा विज्ञान के आप मूर्धन्य विद्वान थे। अपनी मातृभाषा कुमायूंनी के शब्दों की व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक निबन्ध लिखे। मैक्समूलर के ग्रन्थ का आप ने अनुवाद किया, जिसे उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा 'भाषा विज्ञान पर भाषण' शीर्षक से प्रकाशित किया गया। पिशेल के 'प्राकृत व्याकरण' का हिन्दी अनुवाद भी किया। संस्कृत के अतिरिक्त अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, आदि कई भाषाओं के विशेषज्ञ होने के कारण कोश-कला (एनसाइक्लोपीडिया) में आप निष्णात थे। नागरी प्रचारिणी सभा (काशी) द्वारा प्रकाशित होनेवाले 'हिन्दी विश्व कोश' के सम्पादन में आप का विशिष्ट योगदान था। नागरी प्रचारिणी सभा के लिए 'व्युत्पत्ति कोश' भी आप ने तैय्यार किया।

आप ओजस्वी साहित्यकार भी थे। उल्लेखनीय पुस्तकें हैं – स्वाधीनता का सिद्धान्त, भारत का इतिहास, विक्रमादित्य, आदि। 'सरस्वती' पत्रिका के हीरक जयन्ती समारोह पर आप का अभिनन्दन किया गया।

आप का निधन ६ अक्टूबर १९६७ ई० को हुआ। आप की साहित्यिक सेवाओं के लिए हिन्दी भाषी चिर ऋणी रहेंगे। •

स्व. श्यामसुन्दर दास खत्री

आप का जन्म १८९६ ई० में कलकत्ता में हुआ। आप के पिता लक्ष्मण दास खत्री थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय से इण्टर-मीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण कर इलाहाबाद बैंक में काम करने लगे। ४५ वर्षों की दीर्घ सेवा के दौरान आप की प्रशासनिक कुशलता की बैंक में धाक रही।



साहित्यिक क्षेत्र में माखन लाल चतुर्वेदी को आप अपना मानस-गुरु मानते थे। आप उच्च कोटि के कवि थे। आप की रचनाएँ विशाल भारत, मतवाला, हिन्दू पंच, स्वतन्त्र, विश्व भारती, हंस, चाँद, माधुरी, सुधा आदि अनेकों शीर्षस्थ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती थीं। आप की कविताओं का संकलन 'वेणु' नाम से प्रकाशित हुआ। १९५८ ई० में बाल साहित्य के लिए ५०० रुपये का राष्ट्रपति पुरस्कार भी मिला।

बंगला भाषा के साहित्य का भी आप ने गहन अध्ययन किया। रवीन्द्रनाथ ठाकुर की अनेकों कविताओं का हिन्दी में अनुवाद करने के लिए 'विश्व भारती' द्वारा आप पुरस्कृत किए गए। •

स्व. आचार्य परमानन्द शर्मा

आप का जन्म १९ अप्रैल सन् १९०० को हुआ था। आप रेवतीपुर (गाजीपुर) के निवासी थे पर १९२० से १९६५ तक आपका कार्यस्थल कलकत्ता रहा। शिक्षा तो आप की मिडिल तक ही हुई, किन्तु अध्ययन और अध्यवसाय के बल पर आपने अगाध ज्ञान अर्जित किया। आपने कलकत्ते में 'साधना' और 'सिद्धाञ्जना' नाम की मासिक पत्रिकाओं का ७-८ वर्षों तक प्रकाशन किया।

पत्रकार होने के अतिरिक्त आप उच्च कोटि के अध्यापक थे। भारतीय हिन्दी



साहित्य सम्मेलन की प्रथमा से उत्तमा तक के परीक्षार्थियों को पढ़ाते थे। सैकड़ों विद्यार्थियों ने आपके निर्देशन-पाठन से लाभ उठाया।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', पं० सकल-नारायण शर्मा, पं० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी, मुंशी नवजादिक लाल, आदि मूर्धन्य साहित्य-कारों से आपका घनिष्ठ सम्पर्क था। बंग प्रादेशिक हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के आप कई वर्षों तक प्रधान मंत्री रहे।

आप की प्रकाशित पुस्तकों में प्रसाद साहित्य, साहित्य और अनुभूति, नवीन प्रवाह, काव्याधार, स्वामी सहजानन्द सर-स्वती, प्रदक्षिणा, आदि हैं। निराला के संस्मरण, प्रबन्ध-पाटल, महादेवी साहित्य, कथा साहित्य और बालमुकुल—अभी अप्रका-शित पड़ी हैं। आप का निधन ११ सितम्बर १९७८ ई० को हुआ।

स्व. मदन लाल चतुर्वेदी

आप का जन्म १९०३ ई० में आगरा जनपद के चन्द्रपुर गाँव में हुआ। नेकराम चतुर्वेदी के आप पुत्र थे। आप अत्यन्त सात्विक प्रकृति के थे और विचारधारा एवं आचरण में कट्टर आर्य समाजी। संस्कृत, हिन्दी, बंगला, गुजराती तथा अंग्रेजी भाषाओं के आप ज्ञाता थे।

अपना साहित्यक जीवन 'प्रताप' पत्र के सम्पादकीय विभाग से प्रारम्भ किया। १९२४ ई० में कलकत्ते से पं० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी के सम्पादकत्व में प्रकाशित 'स्वतन्त्र' के सम्पादकीय विभाग में आ गए। कुछ काल तक 'भारत मित्र' में भी रहे। १९३० ई० में जब पं० रामशंकर त्रिपाठी ने दैनिक 'लोकमान्य' का प्रकाशन आरम्भ किया, तब से १९७१ ई० तक उसके सम्पा-दन में सहयोग किया। 'लोकमान्य' साप्ताहिक के भी आप सम्पादक रहे।



ब्रजभाषा के आप उत्कृष्ट कवि थे। आप की कविताएँ सम्मेलन पत्रिका, विशाल भारत, माधुरी, सुकवि, समालोचक, वीणा, शारदा, आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती थीं। आप की रचनाएँ 'गीत मंजरी' एवं 'अंजलि' नामक पुस्तकों में संकलित हैं। अनेक अंग्रेजी कविताओं को आप ने ब्रज-भाषा में अनूदित किया।

आप की इहलीला २ नवम्बर १९७६ ई० को ग्वालियर में समाप्त हो गयी।

स्व. शिवदेव उपाध्याय 'सतीश'

आप का जन्म वाराणसी के रामापुर गाँव में १९०८ ई० में हुआ। आप ने कल-

कत्ता विश्वविद्यालय से ही स्नातक एवं एल-एल० बी० की उपाधियाँ प्राप्त कीं।

विद्यार्थी जीवन से ही आप की रचनाएँ



मिर्जापुर से प्रकाशित 'मतवाला' में प्रकाशित होती थीं। कलकत्ता में आप मतवाला के संस्थापक महादेव प्रसाद सेठ के सम्पर्क में आए। आप ने बी० एन० सरकार द्वारा निर्मित 'सीता' फिल्म के गीत लिखे। उसी समय मूलचन्द अग्रवाल ने मासिक 'विश्वमित्र' का प्रकाशन प्रारम्भ किया और उसका सम्पादन का भार आप को दिया गया। इसके अतिरिक्त आप ने नवभारत टाइम्स, दैनिक लोकमान्य एवं माडर्न रिव्यू में भी लिखना आरम्भ किया। आप ने कई पुस्तकें लिखीं, जिनमें साहित्यिक पुस्तक 'एक भूल' बहुचर्चित रही।

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर आप वार्त्ताएँ आकाशवाणी (कलकत्ता) से प्रसारित होती रहीं। सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक कार्यकलापों में भी आप रुचि लेते थे। दीर्घ काल तक पक्षाघात से पीड़ित रह कर २८ सितम्बर १९७४ ई० को आप का निधन हो गया। ●

स्व. कमलाकान्त वर्मा

आप का जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जनपद में उजियार-भरवली ग्राम में ५ अक्टूबर १९११ ई० को हुआ था। काशी विश्वविद्यालय से बी. ए. तथा पटना विश्व-विद्यालय से एल-एल. बी. की डिग्री आपने प्राप्त की।

१९३८ ई० में कलकत्ता आकर 'विशाल भारत' पत्र में सहकारी सम्पादक बन गए। तत्पश्चात् 'बापू ने कहा था' फिल्म का लेखन-निर्देशन किया। 'कुरुक्षेत्र', 'तपस्या' आदि कई फिल्मों के निर्माण एवं निर्देशन में भी सहयोगी रहे। सुविख्यात सांस्कृतिक संस्था 'अनामिका कला संगम' के आप निदेशक थे।

आप के जीवन में गांधी, रवीन्द्रनाथ तथा महर्षि अरविन्द के सिद्धान्तों का समन्वय हुआ था। इन्हीं की छाया आप की रचनाओं में भी है। लेखन क्षेत्र में विशेष ख्याति १९३७ ई० में मिली, जब आप की रचना 'पगडण्डी' सुप्रसिद्ध पत्रिका 'हंस' में प्रकाशित हुई। 'एकांकी' नाटकों में आप की विशेष रुचि थी। आप की प्रकाशित रचनाओं में प्रवासी (दो अंकों का नाटक), श्री (एकांकी नाटक), सूर्योदय, उस पार, मेघदूत और बारहवाँ संस्कार (कहानी संकलन) आदि उल्लेखनीय कृतियाँ हैं। 'उसको पिस्तौल किसने दी' आप की ख्याति-प्राप्त अप्रकाशित कहानी है।

आप का निधन १९७८ ई० में हुआ।●

राम अवतार गुप्त

आप का जन्म प्रागपुरा (जयपुर) में १२ जून १९२५ ई० को हुआ। आप के पिता चौधरी रुद्रमल गुप्त थे। विद्यार्थी जीवन में फुटबाल, वालीबाल एवं स्काउटिंग प्रतियोगिताओं में आप विशेष भाग लेते थे।

१९४३ से ४५ ई० तक कलकत्ते के प्रतिष्ठित औद्योगिक संस्थानों में लेखाकार के रूप में जीवन प्रारम्भ किया। तत्पश्चात् १९४६-४८ई० में दैनिक सन्मार्ग (वाराणसी) में लेखाकार रहे और फिर कार्य कुशलता एवं कर्मठता के बल पर व्यवस्थापक नियुक्त



हुए। १९४८ ई० में दैनिक सन्मार्ग (कलकत्ता) के प्रकाशन विभागाध्यक्ष का पद सम्भाला। शीघ्र ही कलकत्ता तथा वाराणसी दोनों संस्करणों के व्यवस्थापक पद पर आप नियुक्त हुए। १९५१ ई० में कलकत्ता संस्करण के निदेशक बन गए। आगामी बीस वर्षों के कालखण्ड में अपने अथक प्रयास से सन्मार्ग प्रेस में मुद्रण हेतु आधुनिक रोटरी प्रिंटिंग व मोनो कम्पोज मशीनें आप ने बैठाईं। १९७३ ई० में दैनिक सन्मार्ग (कलकत्ता) का रजत जयन्ती समारोह आप के निर्देशन में आयोजित हुआ, जिसमें भारत के लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्यकारों को सम्मानित किया गया। १९७३ से १९८१ ई० तक दैनिक सन्मार्ग (कलकत्ता) के प्रबन्ध-निदेशक रहे।

आप विभिन्न सार्वजनिक सेवा संस्थाओं की कार्यकारिणी के सक्रिय सदस्य हैं, यथा– बाबा कालीकमलीवाला पंचायत क्षेत्र, काशी विश्वनाथ सेवा समिति, बजरंग परिषद, आदि।

स्व. हरिकृष्ण जौहर

आप का जन्म सितम्बर १८८० ई० में काशी के एक खत्री परिवार में हुआ। १२ वर्ष की अल्पायु में ही 'भारत जीवन' के प्रेस में आप काम करने लगे। स्वाध्याय एवं चिंतन-मनन से आप ने संस्कृत, अंग्रेजी, फ़ारसी, बंगला, मराठी, गुजराती, हिन्दी आदि कई भाषाओं का ज्ञान अर्जित किया। काशी की कारमाइकल लाइब्रेरी में शायद ही कोई पुस्तक बची हो जिसका आप ने अध्ययन न किया हो।

कालान्तर में आप भारत जीवन प्रेस की पत्रिका 'भारत जीवन' के सम्पादक बन गए। फिर आप ने 'मित्र', 'उपन्यास तरंग' और 'द्विजराज' पत्रिकाओं का सम्पादन किया। पत्रों में अजमेर से 'राजस्थान' एवं बम्बई से 'वेंकटेश समाचार' के भी आप सम्पादक रहे।



१९०२ ई० में कलकत्ता आकर 'हिन्दी बंगवासी' में आप सहकारी सम्पादक हो गए। कालान्तर में जब उसके सम्पादक पंडित सदानन्द शुक्ल ने अवकाश ग्रहण किया, तब आप ने उनका पदभार संभाला। उस समय आप के सहकारी संपादकों में कुंवर गणेश सिंह भदौरिया, अम्बिका प्रसाद बाजपेयी, बाबूराव विष्णु पराड़कर, लक्ष्मीनारायण गर्दे आदि दिग्गज थे। १९१९ ई० में संपादन से निवृत्त हो आप कलकत्ते के मदन थियेटर में नाट्यकार के रूप में कार्य करने लगे। आप रंगमंच पर शुद्ध हिन्दी में ही नाटक प्रस्तुत करने के प्रबल आग्रही थे। इसी उद्देश्य से आप ने यहाँ 'नागरी प्रचारिणी सभा' की स्थापना की। आप के नाटक

ओजपूर्ण एवं लोकप्रिय होते थे। फिर 'पायनियर फिल्म्स' के लिए भी नाटक लिखे।

आप कृती साहित्यकार भी थे। अपना लेखन आपने उर्दू में ही प्रारंभ किया था। उर्दू में आप ने कई पुस्तकें लिखीं, जिसमें 'राजे हैरत' प्रमुख है। बाद में आप हिन्दी में लिखने लगे। दर्जनों पुस्तकें आप ने लिखीं, जिसमें प्रसिद्ध है 'कुसुमलता' उपन्यास (४ खण्ड) में।

१९४५ ई० में आप का निधन हो गया। हिन्दी पत्रकारिता एवं रंगमंचीय नाटकों के उत्थान में आप का महत्वपूर्ण योगदान रहा। ●

लक्ष्मीनिवास बिड़ला

आप का जन्म १९०९ ई० में पिलानी (राजस्थान) में सुप्रसिद्ध औद्योगिक घराने 'बिड़ला परिवार' में हुआ। आप के पिता देश के मूर्धन्य उद्योगपति घनश्यामदास बिड़ला हैं। अल्पायु में ही आप को मातृ वियोग सहना पड़ा, पर प्रबुद्ध पिता के सुयोग्य निर्देशन में आप की प्रतिभा का सर्वांगीण विकास हुआ।



आप प्रारम्भ से ही साहित्यानुरागी एवं सर्जनात्मक प्रवृत्ति के थे। १८ वर्ष की तरुणावस्था में ही आप ने 'बिड़ला पार्क' पत्रिका निकाली जिसमें रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी, पण्डित मदनमोहन मालवीय, लाला लाजपत राय, सुभाष चन्द्र बोस, जदुनाथ सरकार प्रभृति मूर्धन्य विभूतियों की रचनाएँ प्रकाशित होती थीं। आप ने विविध विषयों पर अंग्रेजी में ८ एवं हिन्दी में ९ पुस्तकें लिखी हैं। लघु कथाएँ, लोक कथाएँ, आर्थिक समस्याओं की समीक्षा, नैतिक शिक्षा एवं युवा पीढ़ी का चरित्र-निर्माण आप की प्रिय विषय-वस्तु है। दार्शनिकता के साथ-साथ मानवीय सहृदयता का प्रभाव आपकी रचनाओं में परिलक्षित है। अंग्रेजी में आप की प्रमुख पुस्तकें हैं – स्ट्रगल फार ग्रोथ, फार लव एण्ड फ्रीडम, पोपुलर टेल्स फ्राम राजस्थान, आदि। हिन्दी में आप की प्रमुख पुस्तकें हैं– जीवन की चुनौती, कहिए समय विचारि, लखटकिया, पद्मिनी का शाप, आदि। आप की कविताओं की प्रशंसा भूतपूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन् तक ने की है।

आप की चित्रकला एवं बागवानी में भी अत्यधिक अभिरुचि है। आप के चित्रों में प्रकृति-प्रेम एवं मानवीय संवेदनशीलता का विशेष प्रभाव है। आप रायल एग्री-होरिकल्चरल सोसाइटी (भारत) के अध्यक्ष भी रहे। 'प्लानिंग ए लैण्डस्केप गार्डेन' बागवानी पर आप की सचित्र एवं उपयोगी पुस्तक है।

शिक्षण जगत से आप का गहरा तादात्म्य रहा है। भारतीय एवं पाश्चात्य दोनों विधाओं के समन्वय से पूर्ण अनुशासित रूप में विद्यार्थी का सर्वतोमुखी विकास हो – अपनी इस अभिलाषा को मूर्त्त रूप दिया आप ने 'हिन्दी हाई स्कूल' (कलकत्ता) की स्थापना कर। अनेक शिक्षण-संस्थाओं की स्थापना एवं विकास में आप की विशेष भूमिका रही है। बिड़ला एजूकेशन ट्रस्ट (जो कि पिलानी विश्वविद्यालय एवं अन्यान्य विविध संस्थानों के माध्यम से ११,००० छात्र-छात्राओं को अद्यतन ढंग से शिक्षण दे रहा है) के आप ट्रस्टी हैं।

उद्योग एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अपनी दूरदर्शिता एवं प्रबन्ध-क्षमता के बल पर आप की गणना आज देश के शीर्षस्थ उद्योग-पतियों में हैं। बिड़ला ब्रादर्स लिमिटेड के प्रबन्ध-निदेशक के रूप में आप ने 'बिड़ला समूह' के सम्पूर्ण औद्योगिक तन्त्र के प्रशासन को एकेन्द्रित कर अभिनव प्रबन्ध-परम्परा प्रारम्भ की। भारत में प्लास्टिक उद्योग की स्थापना में आप का महत्वपूर्ण स्थान है। आप फेडेरेशन ऑफ इण्डियन चेम्बर्स आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज, इण्डियन चेम्बर आफ कामर्स (कलकत्ता), राजस्थान चेम्बर आफ कामर्स तथा बोर्ड आफ इण्डस्ट्रीज (प० बंगाल) के अध्यक्ष रह चुके हैं। १९४५ ई० में आयोजित २७ वें अन्तर्राष्ट्रीय श्रम अधिवेशन में आप प्रबन्धकों के प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित हुए थे। भारत-सोवियत मैत्री उन्नयन के प्रयासों के लिए आप को स्वर्ण-पदक प्रदान करते हुए रूसी राजदूत ने उद्योग एवं व्यवसाय के क्षेत्र में आप के प्रगतिशील एवं मानवीय दृष्टिकोण की विशेष सराहना की।

आप वित्त-विशेषज्ञ एवं कुशल वक्ता भी हैं। देश की आर्थिक समस्याओं पर विभिन्न अवसरों पर दिए गए आप के भाषणों का संग्रह 'बिजनेस होराइजन्स' शीर्षक से १९६८ ई० में प्रकाशित हुआ।

आप उदात्त उद्योगपति, दूरदर्शी शिक्षा-शास्त्री एवं सृजनात्मक लेखक के रूप में देश एवं समाज के उन्नयन में संलग्न हैं। ●

स्व. ब्रजमोहन वर्मा

आप का जन्म उत्तर प्रदेश के कालपी नगर में ५ सितम्बर १९०० ई० में हुआ। १९१८ ई० में प्रवेशिका परीक्षा आप ने उत्तीर्ण की। पहिले कूल्हे और फिर फेफड़े, पीठ-गर्दन आदि में शारीरिक व्याधियों के कारण आप का विद्यार्थी जीवन बाधित हुआ और बैसाखी का सहारा लेना पड़ा। रोग शय्या पर दीर्घकाल तक पड़े रहने के दौरान आप ने गहन अध्ययन किया। स्मरण शक्ति इतनी तीव्र थी कि प्रसंग आने पर प्रत्येक



पुस्तक के लेखक एवं विषय-वस्तु को आप उद्धृत कर देते थे।

१९२९ ई० में कलकत्ते से प्रकाशित 'विशाल भारत' मासिक पत्र के सम्पादक पं० बनारसी दास चतुर्वेदी ने आप को अपना सहायक नियुक्त किया। आप के कुशल सम्पादन में 'विशाल भारत' की लोकप्रियता इतनी अधिक बढ़ी कि स्वयं बनारसी दास चतुर्वेदी ने पं० श्रीनिवास शास्त्री के विशाल भारत के सम्पादक मण्डल में आने पर आप का परिचय देते हुए कहा – 'वर्मा ही विशाल भारत की आत्मा और प्राण हैं। इसकी सफलता का ७५ प्रतिशत श्रेय आप को है।'

आप बहुमुखी साहित्यिक प्रतिभा के धनी थे। कविता, कहानी के अलावा गम्भीर से गम्भीर विषयों पर भी आप की लेखनी साधिकार चलती थी। व्यंग्य और हास्य-विनोद में तो बेजोड़ थे। विशाल भारत में 'चाय-चक्रम' नामक हास्य-व्यंग्य का एक स्तम्भ आप ने ही आरम्भ किया। इसके पूर्व कलकत्ते से ही प्रकाशित 'हिन्दू पञ्च' और 'श्रीकृष्ण सन्देश' में आप 'चतुष्पाद' उपनाम से चुटकुले लिखा करते थे। आप ने

हास्य-व्यंग्य प्रधान 'औघड़' मासिक पत्र का भी सम्पादन किया।

आप की विद्वता, विनोदप्रियता एवं सहज सौजन्य के कारण जो भी आप के सम्पर्क में आया, आप का आत्मीय परिजन बन कर ही रहा।

१९३७ के बाद अत्यधिक रुग्णावस्था के कारण आप आरोग्य लाभ के लिए कानपुर चले गए। वहीं १० दिसम्बर १९३७ ई० को आप का निधन हो गया। ●

स्व. व्रजशंकर वर्मा

आप का जन्म १९०९ ई० में बसन्तपुर (सिवान) में हुआ। आप ने 'प्रवेशिका' परीक्षा उत्तीर्ण की थी।

१९३१ ई० में विशाल भारत के सम्पादक पं० बनारसी दास चतुर्वेदी ने आप को लोकमान्य (दैनिक) के सम्पादकीय विभाग में रखवा दिया। फिर १९३४ ई० में आप ने पटना से प्रकाशित साप्ताहिक 'योगी' में काम करना आरम्भ कर दिया। १९३९-४० ई० में आप इसके सम्पादक बने। आप बड़े उग्र विचारों के एवं प्रखर तीक्ष्णबुद्धि सम्पन्न पत्रकार थे। साथी पत्रकारों का आप बड़ा सम्मान करते थे तथा यथासाध्य सहायता भी करते थे।

बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन से आप सम्बद्ध थे। पक्षाघात से पीड़ित हो अक्टूबर १९६९ ई० में आप की इहलीला समाप्त हो गयी। ●

स्व. कृष्णाचार्य



आप का जन्म ५ नवम्बर १९१७ ई० को मथुरा में हुआ था। काशी विश्वविद्यालय से आप ने एम. ए. किया। आप साहित्य-रत्न भी थे।

नागरी प्रचारिणी सभा के पारिभाषिक कोश विभाग में सहकारी सम्पादक के रूप में ५ वर्ष तक आप ने काम किया। फिर १९५० से ५४ ई० तक हिन्दी साहित्य सम्मेलन (प्रयाग) में ग्रन्थालयाध्यक्ष के रूप में कार्य किया। तत्पश्चात् आप 'नेशनल लाइब्रेरी' कलकत्ता के हिन्दी विभाग में कार्य करने लगे। कुछ काल तक जबलपुर विश्वविद्यालय में पुस्तकालय-विज्ञान विभाग में प्रवक्ता भी रहे।

'भारतीय भाषा परिषद' (कलकत्ता, की स्थापना में आप ने सहयोग दिया एवं उसके मुख-पत्र 'सन्दर्भ भारती' (द्वैमासिक) का सम्पादन भी किया। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के भी आप अध्यक्ष रहे। बड़ाबाजार की सांस्कृतिक गतिविधियों में आप सक्रिय भाग लेते थे – विशेषकर पुस्तकालयों के अधिकारियों को सुझाव देते थे कि किस प्रकार पुस्तकों का वैज्ञानिक वर्गीकरण किया जाय तथा किस प्रकार का ज्ञान-वर्द्धक साहित्य पाठकों के लिए सुलभ हो।

आजीवन पुस्तकालयों से सम्बद्ध रहने के कारण हिन्दी साहित्य को आप ने कई ऐसे विशिष्ट 'सन्दर्भ ग्रन्थ' (रेफरेन्स बुक) दिए, जिनमें आप की बहुमुखी प्रतिभा एवं दीर्घकालीन अनुभव की गहरी छाप है। 'हिन्दी के स्वीकृत शोध प्रबन्ध (१९६४), हिन्दी के आदि मुद्रित ग्रन्थ (१९६६) तथा हिन्दी नाट्य-साहित्य-ग्रन्थ पुटी (१९६६)

ग्राप की उल्लेखनीय कृतियां हैं। तुलसी-ग्रंथ पुटी की पाण्डुलिपि भी ग्राप ने तैयार कर ली थी।

ग्राप का निधन १७ जुलाई १९७७ ई० को हुआ। ●

प्रो. जगन्नाथ सेठ

आप का जन्म १९३० ई० में हुग्रा। ग्राप के पिता शम्भुनाथ सेठ थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय से आप ने हिन्दी में एम० ए० किया। अंग्रेजी, हिन्दी एवं ब्रजभाषा पर ग्राप का विशेष ग्रधिकार है।



भक्ति-काल पर ग्राप का विशेष अध्ययन है। बंगीय हिन्दी परिषद द्वारा प्रकाशित 'तुलसीदास : आधुनिक सन्दर्भ में' ग्रन्थ का सह-सम्पादन प्रो० विष्णुकान्त शास्त्री के साथ किया। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित 'सूरदास : विविध सन्दर्भों में' ग्रन्थ का सम्पादन भी आप ने ही किया है। पत्र-पत्रिकाओं में आप के साहित्यिक निबन्ध प्रकाशित होते रहते हैं। सम्प्रति चारुचन्द्र कॉलेज एवं प्रेसीडेन्सी कॉलेज में हिन्दी के प्राध्यापक हैं। ●

उमाशंकर गुप्त

ग्राप का जन्म १९३० ई० में बलिया जिले में हुग्रा। गवर्नमेंट आर्ट कॉलेज के स्नातक हैं। दैनिक 'विश्वमित्र' के माध्यम से ग्रपना चित्रकार जीवन ग्रारम्भ किया। सम्प्रति दैनिक 'सन्मार्ग' में स्वतन्त्र रूप से व्यंग्य चित्रकार हैं।

ग्राध्यात्मिक चित्रांकन में ग्राप सिद्धहस्त हैं। सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'चित्रमयी गीता प्रवेशिका' के चित्र ग्राप की विलक्षण कला प्रतिभा के प्रमाण हैं। ग्राप ने 'राष्ट्रीयता की साधना' वृत्त चित्र का सफल कला निर्देशन भी किया है। ग्राकाशवाणी से आप का साक्षात्कार 'ग्राध्यात्मिक चित्रांकन का ग्रनुभव' १९७४ ई० में प्रसारित हुग्रा था। वर्तमान में ग्राप सम्पूर्ण गीता चित्रांकन की महती साधना में लगे हुए हैं। ●

सागरमल शर्मा

आप का जन्म १४ ग्रप्रैल १९३१ ई० को हुग्रा। यद्यपि शिक्षा मैट्रिक तक ही हो पाई, किन्तु सामाजिक अन्याय के विरुद्ध



संघर्ष-रत पत्रकार एवं कार्यकर्त्ता के रूप में आप सुप्रतिष्ठित हैं।

१९४४ ई० से आप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निष्ठावान स्वयंसेवक हैं। १९५१ ई० में स्वामी करपात्रीजी द्वारा संचालित गो-रक्षा

आन्दोलन के अन्तर्गत आप ने गिरफ्तारी दी। १९६६ ई० में आप के संचालन - संपादन में साप्ताहिक पत्र 'संसार मित्र' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। १९७६ ई० में आपात्काल के दौरान भूमिगत रह कर आजादी की दूसरी लड़ाई में भाग लिया।

आप मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के प्रचार मन्त्री, कलकत्ता किरायेदार संघ के मन्त्री, पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के संगठन मन्त्री, कलकत्ता नागरिक परिषद तथा तुलापट्टी मुहल्ला कमेटी के संस्थापक सदस्य रह चुके हैं। सम्प्रति जोड़ासांकू जनता पार्टी के अध्यक्ष हैं। ●

प्रो. इन्द्रजीत पाण्डेय

आप का जन्म बारोडीह ग्राम (उत्तर-प्रदेश) में ३ जुलाई १९३२ ई० को हुआ। आप के पिता आदित्य पाण्डेय थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. किया।



१९६० ई० में सेठ सूरजमल जालान गर्ल्स कॉलिज में हिन्दी प्राध्यापक के रूप में जीवन आरम्भ किया। तदुपरान्त १९६१ ई० से सेठ आनन्दराम जयपुरिया कॉलिज में हिन्दी प्राध्यापक हैं। भक्ति साहित्य एवं छायावादी काव्यालोचन पर आप का विशेष अध्ययन है। 'तुलसीदास : चिन्तन - अनुचिन्तन' ग्रन्थ के सम्पादन के पश्चात् आप 'रामप्रताप रामायण', 'रामाश्वमेध रामायण', 'गीता : दार्शनिक विश्लेषण', आदि ग्रन्थों के सम्पादन यज्ञ में रत हैं।

सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय, श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, मित्र परिषद, आदि की कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में समाज एवं भाषा की सेवा में लगे हुए हैं। ●

सत्यनारायण त्रिपाठी 'मंगल'

आप का जन्म सवारी (रोहतास) के ग्रामीण ब्राह्मण कुल में १९३६ ई० में हुआ। आप प्रयोगधर्मा साहित्यकार के रूप में सुप्रतिष्ठित हो चुके हैं।



विभिन्न पत्र - पत्रिकाओं में आप की द्विशताधिक कविताएँ, कहानियाँ, निबन्ध, सामयिक प्रसंग इत्यादि प्रकाशित हो चुके हैं। आप का सुप्रसिद्ध ग्रन्थ है 'चित्रमयी गीता प्रवेशिका' जिसमें गीता के उन प्रसंगों की सचित्र व्याख्या वर्तमान परिप्रेक्ष्य में की गई है जो महात्मा गांधी को अत्यन्त प्रिय थे। आप की अन्य पुस्तकों में हैं – तुलसी युग (कविता), शकुन्तला - उपाख्यान (उपन्यास) एवं विकास - पथ (नाटक)। आकाशवाणी के कलकत्ता केन्द्र से आप के दो रेडियो काव्य - रूपक (मानस मराल एवं लालसा) तथा भारतीय संस्कृति मर्म - चर्चा पर दर्जनों वार्ताएँ प्रसारित हो चुकी हैं। फिल्म क्षेत्र में भी दो वृत्त-चित्र – १९६६ ई० में 'आजाद

किया, आबाद किया' तथा १९७५ ई० में 'राष्ट्रीयता की आराधना' – आप के निर्देशन में निर्मित हुए हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में आप ने सन्देशवाहक (साप्ताहिक), प्रेमाम्बरा तथा अव्यक्त पत्रों का सम्पादन किया है।

सम्प्रति आधुनिक सन्दर्भ में श्रीमद्-भगवद्गीता के प्रत्येक श्लोक के सचित्र भाष्य की महती साधना में आप कार्यरत हैं। ●

विमल लाठ

आप का जन्म ४ अगस्त १९४२ ई० को कलकत्ता में हुआ। सुप्रसिद्ध समाजसेवी बजरंगलाल लाठ के आप पुत्र हैं। कलकत्ता विश्वविद्यालय से आप ने एम. कॉम. एवं एल. एल. बी. पास किया है।



आप ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निष्ठावान कार्यकर्त्ता के रूप में सामाजिक क्षेत्र में कार्य का प्रारम्भ किया। विश्व हिन्दू परिषद (पश्चिम बंगाल) के संयुक्त मन्त्री के पद पर ११ वर्षों तक बड़ी लगन से काम किया। आप श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के मन्त्री रह चुके हैं तथा बड़ाबाजार लाइब्रेरी के सक्रिय सदस्य हैं।

साहित्य एवं कला के क्षेत्र में आप की विशेष अभिरुचि है। १९५५ ई० से ही स्थानीय सुविख्यात नाट्य-संस्था 'अनामिका' से सम्बद्ध हैं। अभिनय, निर्देशन एवं लेखन तीनों ही विधाओं में आज नाट्य-जगत में आप का विशिष्ट स्थान है। आप के सम्पादन में 'नाट्यवार्त्ता' मासिक पत्रिका निकलती है, जो अपने श्रेष्ठ कलात्मक स्तर के कारण अत्यन्त लोकप्रिय है। ●

विश्वम्भर नेवर

आप का जन्म नोहर (राजस्थान) में १४ अप्रैल १९४३ ई० को हुआ। सोहनलाल नेवर के आप पुत्र हैं। आप स्नातक हैं।



सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यों में प्रारम्भ से ही आपकी रुचि है। ५ वर्षों तक बाल परिषद के प्रधान सचिव रहे। स्टडी-ग्रुप संस्था की आप ने स्थापना की, जिसके माध्यम से शताधिक विचार-गोष्ठियों का आयोजन कर सुविख्यात मनीषियों के चिन्तन-मनन को सर्वसुलभ किया। १९७३ ई० में मास्को में आयोजित विश्व शान्ति सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि के रूप में शामिल हुए। आप मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के शिशु चिकित्सा विभाग के मन्त्री रहे। उड़ीसा, मेदनीपुर, पुरुलिया आदि स्थानों में सेवा कार्यों में काफी सहयोग दिया। पश्चिम बंगाल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के मन्त्री रहे। पश्चिम बंगाल सरकार ने आप को जस्टिस आफ पीस (जे० पी०) नियुक्त किया है।

वर्त्तमान में प्रबुद्ध स्थानीय दैनिक पत्र 'छपते-छपते' के आप प्रमुख सम्पादक हैं।

आप अखिल भारतीय लघु समाचार-पत्र संघ के प्रधान सचिव तथा अखिल भारतीय सम्पादक सम्मेलन की स्थायी समिति के सदस्य भी चुने गये । ●

डॉ० इला रानी सिंह

आप का जन्म सहभौरा ग्राम (सहरसा जिला) में १ जुलाई १९४५ ई० को हुआ । सागर विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम. ए. कर आपने मगध विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. एवं कलकत्ता विश्वविद्यालय से डी. लिट्. की उपाधियाँ प्राप्त की ।



विभिन्न विश्वविद्यालयों में शिक्षण कार्य करते हुए वर्त्तमान में आप जयपुरिया कालेज में हिन्दी प्राध्यापिका हैं । श्री हनुमान मंदिर की संचालन समिति की सदस्या के रूप में अध्यापन एवं शोध - निर्देशन का कार्य भी आपने किया है ।

आप संवेदनशील कवयित्री हैं । हिन्दी में 'रयि' एवं मैथिली में 'विदन्ती' आपके मौलिक काव्य-संग्रह हैं । आस्कर वाइल्ड के नाटक 'सलोमा', बंकिम चन्द्र चटर्जी के उपन्यास 'विष वृक्ष' तथा बंगला नाटक 'प्रेम : एक कविता' का अनुवाद आपने किया है । कई वर्षों तक मैथिली मासिक पत्रिका 'मिथिला दर्शन' का सम्पादन भी किया है ।●

स्व. ईश्वरी प्रसाद शर्मा

आप का जन्म आरा (बिहार) में १८९३ ई० में हुआ था । तन्त्रशास्त्री पंडित सारंगधर मिश्र के आप पुत्र थे । प्रारम्भ में आरा के कायस्थ जुबली कॉलेज में आप शिक्षक नियुक्त हुए ।



१९१२ ई० में आरा से ही प्रकाशित सचित्र मासिक पत्रिका 'मनोरंजन' के संपादन से आप ने अपना पत्रकार जीवन प्रारंभ किया । फिर पटना से प्रकाशित 'पाटलिपुत्र' के सहकारी सम्पादक हुए । गया से प्रकाशित 'लक्ष्मी' तथा 'श्री विद्या' मासिक पत्रिकाओं का भी सम्पादन किया । तत्पश्चात् कलकत्ता आकर बर्मन प्रेस से प्रकाशित 'हिन्दू पंच' का सम्पादन करने लगे । इसके 'बलिदान अंक' पर ब्रिटिश सरकार का कोपभाजन बन कर कारावास का भी वरण करना पड़ा ।

उत्कृष्ट पत्रकार होने के साथ ही आप प्रतिभाशाली लेखक भी थे । आप की दर्जनों मौलिक पुस्तकों में प्रमुख हैं – श्री रामचरित, सीता, शकुन्तला, सती पार्वती, मातृ वन्दना सूर्योदय (नाटक), सिपाही विद्रोह, सन् सत्तावन का गदर, पंजाब हत्याकाण्ड, आदि । आप ने मराठी की भी कई पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद किया था । अंग्रेजी के उपन्यासों का भी आप ने हिन्दी में अनुवाद 'प्रेमगंगा' और 'प्रेमिका' शीर्षक से किया ।

आप नाटकों के अभिनय में बड़ी रुचि रखते थे। सत्य हरिश्चन्द्र, मयूरध्वज, नागरी निरादर में क्रमशः डोम, भगवान श्रीकृष्ण और मौलाना की भूमिकायें आप ने अभिनीत कीं। कलकत्ते के स्टार थियेटर में जब 'कृष्णार्जुन' और 'सीता' नामक नाटक अभिनीत हुए, तब आप लगातार वर्ष भर उन्हें प्रति दिन देखते रहे।

'हिन्दू पंच' का सम्पादन करते समय ही आप का निधन २२ जुलाई १९२७ ई० को कलकत्ता में हो गया। ●

स्व. आगा हश्र कश्मीरी

आप का जन्म ३ अप्रैल १८७९ ई० को कश्मीरी शालों के व्यापारी मनीशाह आगा के यहाँ वाराणसी में हुआ था। वाराणसी के जयनारायण स्कूल से ८ वीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद आप नाटकों में काम करने लगे। १८९७ ई० में 'आफताब मुहब्बत' नाटक लिखकर आप ने बम्बई की 'अल्फ्रेड कम्पनी' के पास भेजा, पर वहाँ किसी ने दिलचस्पी नहीं ली। १९०१ ई० में आप अपने पैतृक व्यवसाय को छोड़ कर बम्बई चले गये और 'अल्फ्रेड कम्पनी' के मालिक काउसजी से मिले। आप की शेरो-शायरी से प्रभावित हो उन्होंने आप को काम पर रख लिया। वहाँ पर आप ने कई नाटक लिखे जिन्हें सफलतापूर्वक मंचस्थ किया गया।

१९१७ ई० में कलकत्ता आ कर आप ने 'जे० एस० मैडन थियेटर' नाट्य-संस्था स्थापित की। निर्देशन, अभिनय एवं लेखन—तीनों ही विधाओं में आप सिद्धहस्त थे। आप लिखने से अधिक कला को और भाषा से अधिक 'ऐक्शन' को महत्व देते थे। आप की नाट्य-लेखन क्षमता के सम्बन्ध में नारायण प्रसाद 'बेताब' ने एक बार व्यंग्य किया—'उर्दू आगा साहब की मातृभाषा है। उर्दू में लिखते हैं तो क्या कमाल करते हैं? अगर हिन्दी में लिखें, तो हम दाद दें।' इस चुनौती को आप ने सफलतापूर्वक स्वीकार कर लगभग १०० नाटक हिन्दी में लिखे।

आप के हिन्दी नाटकों में 'भारत-रमणी, मधुर मुरली, भागीरथ गंगा, श्रवण कुमार, धर्मी बालक और प्रेमी बालक काफी लोक-प्रिय हुए और मैडन थियेटर द्वारा उनका सफलतापूर्वक मंचन भी किया गया। आप का बंगला नाटक 'मिश्रेर कुमारी' भी काफी लोकप्रिय हुआ।

आप ने अपनी माँ के नाम चालीस हजार रुपये जमा किय थे, पर उस जमा रुपयों में से अपनी रुग्णावस्था में इलाज के लिए एक पैसा भी नहीं लिया। २८ अप्रैल १९३५ ई० को लाहौर में आप का निधन हो गया।

उर्दू एवं हिन्दी रंगमंच के इतिहास में आप का सदैव सम्माननीय स्थान रहेगा। ●

स्व. शिवपूजन सहाय

आप का जन्म ९ अगस्त, १८९३ ई० को उनवांस (शाहाबाद, सम्प्रति भोजपुर) में हुआ। आपके पिता का नाम मुंशी वागीश्वरी



दयाल था। १९१२ ई० में मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद आपने 'हिन्दी भूषण' उपाधि भी प्राप्त की। १९१४ ई० में जीविकोपार्जन हेतु आप अध्यापन करने

लगे। १९२० ई० में अपने पद से त्याग-पत्र देकर आप राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल हो गये।

१९२१ ई० में आरा से प्रकाशित होने-वाले मासिक पत्र 'मारवाड़ी सुधार' के आप सम्पादक रहे। १९२३ ई० में अपने साहित्यिक गुरु पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा के आग्रह पर आप कलकत्ता के 'मतवाला' मासिक पत्र के सम्पादक मण्डल में शामिल हुए। इसके अतिरिक्त आदर्श, उपन्यास तरंग, समन्वय, मौजी, गोलमाल, माधुरी, गंगा, बालक आदि पत्रों का भी आपने सम्पादन किया। १९३८ से १९४९ ई० तक आप राजेन्द्र कालेज (छपरा) में हिन्दी प्राध्यापक रहे। इसी बीच १९४६ ई० में अवकाश लेकर आपने 'हिमालय' (मासिक) का सम्पादन भी किया।

१९४१ ई० में बिहार प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का १७ वाँ अधिवेशन आप के ही सभापतित्व में हुआ। १९४४ ई० में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के जयपुर अधिवेशन में आप साहित्य परिषद् के अध्यक्ष रहे। बिहार राष्ट्र भाषा परिषद् के विभिन्न पदों पर रह कर आप ने हिन्दी भाषा की अमूल्य सेवा की। अपने सेवाकाल में ही आप ने हिन्दी साहित्य और बिहार, सदल मिश्र ग्रन्थावली एवं अयोध्या प्रसाद खत्री स्मारक ग्रन्थ आदि महत्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन करवाया। १९५० ई० से अपने शेष जीवन तक आप ने अनेक साहित्यिक पत्रि-काओं एवं ग्रन्थों का सम्पादन किया, जिनमें साहित्य (त्रैमासिक), द्विवेदी अभिनन्दन ग्रन्थ, पुस्तक-भण्डार रजत-जयन्ती स्मारक ग्रन्थ, राजेन्द्र अभिनन्दन ग्रन्थ, डा० राजेन्द्र प्रसाद की आत्म-कथा, श्री राजेश्वरी ग्रन्थावली, राजा कमलानन्द सिंह ग्रन्थावली, सेवा धर्म (जार्ज सिडनी अरण्डेल कृत 'दि वे आफ सर्विस') का भावानुवाद, बिहार की महिलाएँ, आदि प्रमुख हैं। आप की मौलिक कृतियों में बिहार (इतिहास और भूगोल), विभूति (कहानी), देहाती दुनिया (उपन्यास), भीष्म, अर्जुन, माँ के सपूत (जीवनी), अन्नपूर्णा के मन्दिर में (ग्राम्य समस्या), दो घड़ी (व्यंग्य), महिला महत्व, बालोद्यान, आदर्श परिचय (निबन्ध), मेरा बचपन (आत्म-कथा), वे दिन वे लोग, बिम्ब-प्रतिबिम्ब (संस्मरण), मंगल कलश आदि उल्लेखनीय हैं। आप की महत्वपूर्ण रचना 'शिवपूजन रचनावली' (४ खण्डों में) के नाम से बिहार राष्ट्र-भाषा परिषद् द्वारा प्रकाशित की गई है।

१९५४ ई० में बिहार राष्ट्र-भाषा परिषद् की ओर से १५ सौ रुपये का 'वयो-वृद्ध साहित्यकार सम्मान पुरस्कार' भी आप को मिला, किन्तु पुरस्कार की राशि को आप ने अपनी पत्नी के नाम से साहित्यिक गोष्ठी के आयोजनार्थ साहित्य सम्मेलन को समर्पित कर दिया। हिन्दी साहित्य की आप की दीर्घकालीन सेवा से प्रभावित होकर भारत सरकार ने आप को १९६० ई० में 'पद्मभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया। भारत-चीन युद्ध के समय आप की प्रमुख रचना 'बिहार की महिलाएँ' का विमोचन डा० राजेन्द्र प्रसाद ने किया। उसी समय स्वर्णदान अभियान में पद्मभूषण उपाधि के साथ प्राप्त स्वर्णपदक को भी आप ने राष्ट्रीय रक्षा कोष के लिए समर्पित कर दिया। १९६१ ई० में पटना नगर निगम ने आपका अभिनन्दन किया। १९६२ ई० में भागलपुर विश्वविद्यालय द्वारा डी० लिट्० की उपाधि से आप को सम्मानित किया गया।

२१ जनवरी १९६३ ई० को आप का निधन हो गया। हिन्दी साहित्य को आप का गौरवशाली अवदान स्मृति में सदैव अक्षुण्ण रहेगा। •

प्रताप नारायण वाजपेयी

आप का जन्म २२ फरवरी १८९६ ई० को कानपुर में हुआ। आप के पिता पण्डित मूलनारायण वाजपेयी थे। अल्पायु में ही पितृवियोग के कारण आप की शिक्षा-दीक्षा बाबा पं० कन्दर्प नारायण वाजपेयी एवं चाचा सम्पादकाचार्य पं० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी की देखरेख में हुई। आपने कलकत्ता विश्वविद्यालय से आई.ए. की उपाधि प्राप्त की।



आप के पत्रकार जीवन का प्रारम्भ पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी के सम्पादकत्व में प्रकाशित दैनिक पत्र 'स्वतन्त्र' से हुआ। स्वातन्त्र्य-संघर्ष के कारण जब प्रशासनिक दमन-चक्र में 'स्वतन्त्र' बन्द हो गया, तब आप ने दैनिक पत्र 'स्वाधीन भारत' का प्रकाशन प्रारम्भ किया। किन्तु ब्रिटिश सरकार ने जब उससे भी जमानत मांगी, तब उसे भी बन्द कर देना पड़ा। जीविकोपार्जन हेतु अगस्त १९३१ ई० में आप ने शेयर बाजार का काम प्रारम्भ किया। सम्प्रति देश की आर्थिक एवं व्यवसायिक समस्याओं पर प्रकाश डालनेवाले प्रमुख हिन्दी साप्ताहिक 'आर्थिक जगत' के सम्पादक के रूप में आप १९५६ ई० से कार्यरत हैं।

आप कम्पनी कानून में सुधार करनेवाली 'ला कमेटी' के सदस्य एवं कलकत्ते के 'काव्य-कुञ्ज' मण्डल के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। ●

श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार'

आप का जन्म १७ जुलाई, १९०१ ई० को कोइलख (मधुबनी) में हुआ। आप के पिता पण्डित लक्ष्मी ठाकुर थे। १९२०-२१ ई० प्रवेशिका परीक्षा के समय ही असहयोग आन्दोलन शुरू हो गया, फलस्वरूप आप पढ़ाई छोड़ कर आन्दोलन में सहयोग करने लगे। इस दौरान आप दरभंगा जिला कांग्रेस कमेटी के मन्त्री पद पर भी रहे। १९२५ ई० में आप ने बिहार विद्यापीठ से विद्यालंकार की परीक्षा उत्तीर्ण की।



पत्रकारिता में आप की विशेष रुचि रही। १९३६ ई० में पटना के साप्ताहिक पत्र 'महावीर' में कुछ महीने काम करने के पश्चात् आप कलकत्ता आ गये और पण्डित अम्बिका प्रसाद वाजपेयी के सम्पादकत्व में प्रकाशित होनेवाले दैनिक पत्र 'स्वतन्त्र' में सहायक के रूप में काम करने लगे। १९३० ई० में स्वतन्त्र के उग्र विचारों पर अंकुश लगाने के लिए अंग्रेज सरकार द्वारा जमानत मांगी गयी, फलस्वरूप प्रकाशन बन्द हो गया। १९३१ ई० में आप साप्ताहिक 'लोकमान्य' में काम करने लगे। दो वर्षों तक काम करने के पश्चात् आप साप्ताहिक एवं दैनिक 'विश्वमित्र' में आ गये। विश्वमित्र के तत्कालीन संचालक मूलचन्द अग्रवाल ने आप की योग्यता एवं दक्षता से प्रभावित

होकर आप को दैनिक विश्वमित्र (बम्बई) का सम्पादक बना दिया। १९४४ ई० में आप पुनः कलकत्ता के दैनिक 'लोकमान्य' में आ गये। वाराणसी से प्रकाशित होनेवाले दैनिक 'आज' तथा पटना के 'प्रदीप' के भी आप सम्पादक रह चुके हैं। १९४८ ई० में आप ने दैनिक 'आर्यावर्त' का सम्पादकत्व सँभाला एवं लगातार २० वर्षों तक इस पद पर रहे।

पंडित माधव प्रसाद शुक्ल द्वारा स्थापित 'हिन्दी नाट्य परिषद्' के आप ४ वर्षों तक अध्यक्ष रहे। आप बड़ाबाजार कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भी रहे। पटना की भी अनेक साहित्यिक संस्थाओं से आप घनिष्ठ रूप में सम्बद्ध हैं। ●

स्व. रमाकांत त्रिपाठी 'प्रकाश'

आप का जन्म १९०२ ई० में प्रतापगढ़ जनपद के बण्डा (गड़वारा बाजार) में हुआ था। महात्मा गांधी द्वारा संचालित असहयोग आन्दोलन में आप सक्रिय रूप से भाग लेते थे। असहयोग आन्दोलन के दौरान आपको कारादण्ड का भी वरण करना पड़ा। अपने बम्बई प्रवास में पहिले मारवाड़ी पुस्तकालय में कार्य करने तथा बाद में कुछ समय तक अध्यापन करने के पश्चात् आप कलकत्ता आ गये। आपने अपने पत्रकार जीवन का आरम्भ प्रतापगढ़ से प्रकाशित होनेवाले मासिक पत्र 'पूर्णेन्दु' के सम्पादन से किया। कलकत्ता के हिन्दू पंच, विकास, सेवक, जागृति आदि पत्रों के प्रकाशन में आपका सक्रिय सहयोग रहा। सीमित साधनों में उत्कृष्ट विशेषांकों का प्रकाशन करना आपकी विलक्षणता रही। आपके सम्पादकत्व में प्रकाशित साहित्यिक पत्र 'काव्य कलाधर' का हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान था।

सफल पत्रकार होने के साथ ही आप कृति साहित्यकार भी थे। आपकी मौलिक रचनाओं में प्रेम का पागल, समाज की खोपड़ी, हीरे की चोरी, सचित्र महाभारत, कवियों की ठिठोली, उर्दू-हिन्दी गुलदस्ता, पत्र प्रभाकर, व्यापार प्रकाश, पाक प्रकाश, प्रकाश प्रमोद, वेंकटाचल माहात्म्य सार, पंचमेवा, आदि उल्लेखनीय हैं। आपने हिन्दी पुस्तक एजेन्सी के लिए, 'चार आना सिरीज' में कई बाल-जीवनियाँ भी लिखीं जिनमें स्वामी दयानन्द, स्वामी शंकराचार्य, महात्मा कबीर, सुभाषचन्द्र बोस, पं० जवाहरलाल नेहरू, पं० मोतीलाल नेहरू, चित्तरंजन दास, लोकमान्य तिलक, मीराबाई, स्वामी विवेकानन्द, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, वीर दुर्गादास राठौर, बाल नीति कथा, आदि प्रमुख हैं।

४० वर्ष की उम्र में ही १९४२ ई० में आपका निधन हो गया। ●

गिरीशचन्द्र त्रिपाठी

आप का जन्म बकेश्वर (इटावा) में हुआ। कलकत्ते से प्रकाशित होनेवाले प्रमुख हिन्दी दैनिक 'विश्वमित्र' से कई वर्षों तक आप सम्बद्ध रहे। 'सन्मार्ग' में भी प्रकाशन काल से २-३ वर्षों तक आप ने सहयोग किया। आप ने स्वतन्त्र रूप से साप्ताहिक-पत्र 'मनोरंजन' का भी प्रकाशन किया एवं कालान्तर में उसे दैनिक पत्र भी बना दिया, लेकिन दुर्भाग्यवश उसे बन्द करना पड़ा। ●

स्व. मनोहर मालवीय

आप का जन्म इलाहाबाद में हुआ था। हिन्दी, अंग्रेजी एवं उर्दू भाषाओं का आप को अच्छा ज्ञान था। दैनिक विश्वमित्र के तत्कालीन संस्थापक-संचालक मूलचन्द्र अग्रवाल के सानिध्य में आप दैनिक विश्वमित्र की कलकत्ता, पटना, कानपुर, बम्बई एवं दिल्ली शाखाओं में कई वर्षों तक कार्यरत रहे। लगभग चार वर्षों तक आप दैनिक सन्मार्ग के सम्पादक एवं व्यवस्थापक रहे।

तत्पश्चात् आप ने स्वतन्त्र रूप से लगभग दो वर्षों तक 'नवभारती' मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया।

आप बड़े ही स्वाभिमानी व्यक्ति थे। ख्यातिलब्ध साहित्यकारों, नेताओं एवं पूँजीपतियों से आप का घनिष्ठ सम्बन्ध था। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी में आप का आकस्मिक निधन हो गया। ●

श्रीराम पाण्डेय

आप का जन्म माधोपुर (गोपालगंज, बिहार) में १९१२ ई० में हुआ। आप के पिता पंडित उदितनारायण पाण्डेय थे।



१९३० ई० में आप अध्ययन छोड़कर 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन में सक्रिय हो गये, फलतः आप को कारावास के दण्ड का भी वरण करना पड़ा। बाद में प्रशासनिक कोप से बचने के लिए आप १९३२ ई० में कलकत्ता आ गये और दैनिक 'लोकमान्य' में सह-सम्पादक के रूप में पत्रकार जीवन का प्रारम्भ किया। १९३४ ई० में पटना से प्रकाशित होनेवाले साप्ताहिक 'योगी' के प्रकाशन में सहभागी बन कर आप सहायक के रूप में काम करने लगे। १९३८ ई० में आप पुनः कलकत्ता आये और 'लोकमान्य' (साप्ताहिक एवं दैनिक) के सम्पादक के रूप में चार वर्षों तक कार्य किया। मासिक विशाल भारत, दैनिक नवभारत टाइम्स, दैनिक विकास, साप्ताहिक आर्थिक जगत आदि कई पत्रों में भी आप ने कार्य किया। १९६७ ई० में आप पुनः पटना के साप्ताहिक 'योगी' के सम्पादक नियुक्त हुए।

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी की स्वास्थ्य सम्बन्धी पुस्तकों का दो वर्षों तक आप ने सम्पादन किया है। महाभारत के एकलव्य पर आप ने 'सप्त बाण' नामक एक काव्य की रचना की है। आप दो वर्षों तक 'बंग प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के प्रचार मन्त्री भी रहे हैं। ●

राजदेव सिंह 'कौशल'

आप का जन्म १ नवम्बर १९३० ई० को पहाड़ी पट्टी (जौनपुर) में हुआ। आप के पिता का नाम राम खेलावन सिंह था।



काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से बी. एस-सी. परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् आप ने आगरा विश्वविद्यालय से एम. ए. एवं कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी. एड. की उपाधि प्राप्त की। कुछ काल तक अध्यापक रहे, तत्पश्चात् वाणिज्य दूतावास (अमेरिका) में भी काम किया। फिर आप ने 'राजेन्द्र बन्धु प्रेस' की स्थापना की।

आप प्रकृति से कवि हृदय हैं। भोजपुरी और हिन्दी दोनों ही भाषाओं में आप ने काव्य रचना की है। आप की मौलिक

कृतियों में प्रमुख हैं – निदान (महाकाव्य), भोजपुरी पद्य एवं खड़ी बोली में गद्य (सचित्र), कथा गीत, चट्टान टूटती है, आँचरा क आस (भोजपुरी), दीप-दाह, उच्छवास शतक, आदि। आप ने श्रीमद्-भगवद्गीता का भोजपुरी में अनुवाद भी किया है। •

गीतेश शर्मा

आप का जन्म लखीसराय (मुंगेर) में ६ अगस्त १९३२ ई० में हुआ। आप के पिता पण्डित घनश्यामदास शर्मा थे।



अपने पत्रकार जीवन का प्रारम्भ आप ने दैनिक 'विश्वमित्र' से किया। सम्प्रति 'जन संसार' के प्रधान सम्पादक हैं। विश्व शान्ति एवं मैत्री आन्दोलनों में दो दशकों से सक्रिय हैं। विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों व गोष्ठियों में शामिल होने हेतु सम्पूर्ण भारत, बंगलादेश, यूरोप एवं अमेरिका आप को जाना पड़ा है। १९६७ ई० में कानून अवज्ञा आन्दोलन में कारावास वरण कर चुके हैं। सामाजिक कुरीतियों एवं अन्याय के विरुद्ध संघर्ष रत हैं।

आप कुशल वक्ता भी हैं। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के कलकत्ता केन्द्र से आप की वार्ताएँ कई बार प्रसारित हो चुकी हैं।

आपने कई पुस्तकें भी लिखी हैं, जिनमें प्रमुख हैं – शान्ति दूतों के साथ लेनिन के देश में, मानव जाति के स्वर्ग बल्गारिया में एवं हिमालय पर चढ़ाई, आदि। •

डा. हृदयेश मिश्र

आप का जन्म ९ अक्टूबर, १९३९ ई० को गुतवन (जौनपुर) में हुआ। आप के पिता पण्डित रामानन्त मिश्र वैद्य थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय से आप ने हिन्दी में बी. ए.



(आनर्स) तथा एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण कर 'पद्माकर के काव्य में अलंकार योजना' विषय पर पी-एच. डी. की उपाधि भी प्राप्त की। सम्प्रति सेठ आनन्दराम जयपुरिया कॉलेज में प्राध्यापक हैं।

आप की अनेक कहानियाँ एवं कविताएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। १९६५ ई० में 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' तथा 'वाणिज्यिक हिन्दी' ग्रन्थों के प्रकाशन में आप भी सह-सम्पादक रहे। १९६९ ई० में 'मेघे ढाका तारा' बंगला उपन्यास का आप ने हिन्दी अनुवाद किया। •

रतन शाह

आप का जन्म झुंझनूं (राजस्थान) में ३ मार्च १९४१ ई० को हुआ। मोहनलाल शाह के आप पुत्र हैं। आप एम० कॉम०, एल-एल० बी०, साहित्य-रत्न हैं। कलकत्ता ही आप का कार्यस्थल है।

आप रबड़ एवं प्लास्टिक व्यवसाय में संलग्न हैं, साथ ही सामाजिक एवं सांस्कृतिक



क्षेत्र में लगनशील कार्यकर्त्ता के रूप में जाने जाते हैं। राजस्थानी प्रचारिणी सभा के आप संस्थापक मन्त्री हैं। राजस्थानी को राजकीय भाषा के रूप में प्रतिष्ठित कराने के प्रबल आग्रही होने के कारण आप प्रायः राजस्थानी भाषा में ही भाषण देते हैं। आप अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के उपप्रधान मन्त्री तथा ज्ञान भारती बालिका विद्यालय के मानद मन्त्री हैं। समाज के भाषाई एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान हेतु प्रकाशित राजस्थानी पाक्षिक 'लाडेसर' का आपने सम्पादन-प्रकाशन किया। ●

डॉ. विद्याधर मिश्र

आप का जन्म १९४७ ई० को भगवानपुर गाँव (वाराणसी) में हुआ। आप के पिता रामबरन मिश्र थे। आगरा विश्वविद्यालय से एम० ए० तथा प्रयाग विश्वविद्यालय से डी० फिल० की उपाधियाँ आपने प्राप्त कीं।

पत्रकारिता एवं पाण्डुलिपियों के उद्धार में आप की विशेष रुचि है। आप 'नया विकल्प' त्रैमासिक का प्रकाशन एवं सह-



सम्पादन कर रहे हैं। साथ ही 'रामप्रताप रामायण' के सम्पादन में भी रत हैं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आप के साहित्यिक निबन्ध प्रकाशित होते रहते हैं। ●

प्रो. राम सकल सिंह

आप का जन्म १९०८ ई० में जमालपुर (बलिया) में हुआ। मिडिल तक शिक्षा प्राप्त कर जीविकोपार्जन हेतु आप १९२३ ई० में कलकत्ता आ गए। यहाँ एक आफिस में काम करते हुए श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय केन्द्र से 'विशारद' की परीक्षा



उत्तीर्ण की। १९२८ ई० में आप कलकत्ता कॉरपोरेशन के एक विद्यालय में शिक्षक हो गए। १९५२ ई० में आपने एम. ए. पास किया तथा विद्यासागर कालेज में हिन्दी के प्राध्यापक नियुक्त हुए। कुछ समय तक सिटी कालेज में भी आप प्राध्यापक रहे।

स्वतन्त्रता संघर्ष के दौरान आन्दोलनों में भाग लेकर आप १९३० एवं १९३३ ई० में गिरफ्तार हुए। १९४२ ई० में भारत छोड़ो आंदोलन के समय द्वाबा (बलिया) में राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना में सक्रिय सहयोग किया। फिरोज गांधी के सुझाव पर बलिया के राजबन्दियों के मुकदमों की पैरवी तथा परिवारवालों की सहायता के लिए 'बलिया मित्र मण्डल' के तत्वावधान में 'बलिया राजबन्दी सहायक समिति' बनी जिसके आप मंत्री मनोनीत हुए। १९५२ ई० से ही आप बड़ाबाजार कांग्रेस कमेटी के सक्रिय सदस्य हैं।

अनेकों सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं से आप घनिष्ठ रूप में सम्बद्ध हैं। बलिया मित्र मण्डल के आप कई वर्षों तक मंत्री रहे और विभिन्न दैवीय प्रकोपों में इसके माध्यम से आपने पीड़ितों की बहुविध सेवा की। अपने गाँव जमालपुर में अस्पताल, विद्यालय, बालिका विद्यालय, छात्रावास एवं डिग्री कालेज की स्थापना में आपकी विशेष भूमिका रही। इसी दौरान कलकत्ता के कालीघाट अंचल में भारतीय हिन्दी हाई स्कूल एवं जगदम्बा हाई स्कूल की स्थापना में भी आपका सक्रिय सहयोग रहा।

आपने दर्जनों स्कूली पुस्तकें भी लिखी हैं, जिनके प्रकाशन के लिए प्रेस और बिक्री के लिए दूकान भी खोली।

आपने स्वाधीनता सेनानी के नाम पर मिलनेवाली सरकारी पेंशन को लेने से अस्वीकार कर दिया, साथ ही ताम्र-पत्र भी नहीं लिया। •

मुनिचन्द भण्डारी

आप का जन्म १ जनवरी १९३६ ई० को श्री छोटीखाटू (नागौर) में हुआ। आपके पिता सौभागचन्द भण्डारी थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय से मई १९५५ ई० में स्नातक की उपाधि प्राप्त कर चार्टर्ड एकाउंटेंसी की परीक्षा भी उसी वर्ष नवम्बर में उत्तीर्ण की। १९७०-७१ ई० के लिए आप इन्स्टीच्यूट



आफ चार्टर्ड एकाउंटेंटस् आफ इंडिया के अध्यक्ष चुने गये। इसके पूर्व इसी संस्था की आंचलिक एव केन्द्रीय परिषद के आप दो-दो बार अध्यक्ष निर्वाचित हुए। सितम्बर १९७० ई० में सिंगापुर और क्वालालम्पुर में आयोजित एशियाई एवं प्रशान्त महासागरीय देशों के चार्टर्ड एकाउटेंटस् सम्मेलन में भारतीय शिष्ट मंडल के उपनेता के रूप में आपने प्रतिनिधित्व किया।

अखिल भारतीय संगठन 'भारत निर्माण', ग्राम सम्पर्क केन्द्र एवं फोरम फार सोशल रिसपान्सबिलिटिज आफ बिजनेस की स्थायी समिति के आप संयोजक हैं। आप अनेक सामाजिक संगठनों में भी सक्रिय रुचि लेते हैं। अनेक युवकों को नौकरी दिलवाने का आपको विशेष श्रेय है।

आपने कम्पनी कानून सम्बन्धी अनेक पुस्तकें भी लिखी हैं। आपने अनेकों पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया है, जिनमें प्रमुख हैं – भारत निर्माण पत्रिका, सिवल, फाइनेंस एंड कामर्स, फाइनेंस एंड सोसाइटी। इन्दिरा गांधी के प्रधान-मंत्रित्व काल के प्रथम ११ वर्षों में पश्चिम बंगाल की उपलब्धियों पर प्रकाशित पुस्तक का सम्पादन भी आपने किया है। •

स्व. योगध्यान मिश्र

आप का जन्म १७६५ ई० में कलकत्ता में हुआ। सारस्वत ब्राह्मण गुरुसहाय जेतली आप के पिता थे। संस्कृत भाषा, गणित शास्त्र, ज्योतिष विद्या तथा संगीत कला के आप निष्णात विद्वान थे। संस्कृत कालेज के आप प्राध्यापक थे।

हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए आप सतत् उद्यमी थे। इसी हेतु १८२९ ई० में आपने 'सार-सुधा निधि प्रेस' की स्थापना की। आधुनिक हिन्दी के आद्य-कथाकार लल्लू लाल मिश्र का 'प्रेमसागर' सर्वप्रथम आप के प्रेस से मुद्रित हुआ। कालान्तर में इसी प्रेस से आप के पुत्र सदानन्द मिश्र ने 'सार-सुधा निधि' दैनिक पत्र का प्रकाशन किया।

आप निर्भीक वक्ता तथा निस्पृह समाज-सेवी थे। कलकत्ता महानगर की धार्मिक तथा शैक्षणिक गोष्ठियों में आप की भूमिका प्रमुख रहती थी। जीवन की सांध्य वेला में संसार से विरक्त हो कर आप ने सन्यास ले लिया तथा ७० वर्ष की अवस्था में १८६५ ई० में नवद्वीप धाम में आप ने समाधि ले कर प्राण बिसर्जित कर दिए।

उद्भट विद्वान तथा आद्य हिन्दी प्रचारक के रूप में आप स्मरणीय रहेंगे। •

स्व. केशव प्रसाद खत्री

इस शताब्दी के प्रारम्भ में हिन्दी के धार्मिक नाटक पारसी नाटक कम्पनियों द्वारा खेले जाते थे। उस समय महिला पात्रों (जिस में सती स्त्रियाँ भी शामिल थीं) की भूमिका वेश्याएँ ही करती थीं, क्योंकि उस समय किसी भद्र महिला द्वारा नाट्याभिनय की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। सुप्रसिद्ध स्वातन्त्र्य सेनानी तथा समाजसेवी पद्मराज जैन 'रानीवाले' ने इसके विरुद्ध आन्दोलन छेड़ दिया क्योंकि वेश्याओं के बाजारु अभिनय का समाज पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता था। फलतः हिन्दी नाट्य परिषद की स्थापना की गई, जिसमें मेधावी छात्रों को सतियों का अभिनय करने का प्रशिक्षण दिया गया।

महिला पात्रों के अभिनय में आप बहुत दक्ष थे। आप के सजीव एवं भाव-प्रवण अभिनय को देख कर दर्शक आप को सचमुच नारी ही समझते थे।

अपने कुशल नाट्याभिनय के लिए आप स्मरणीय रहेंगे। •

गोपाल दिनमणि

आप का जन्म राजस्थान में हुआ। स्नातक की उपाधि प्राप्त कर आप कलकत्ता महानगर में कागज के व्यवसाय में संलग्न हैं।



आप सरल प्रकृति तथा मिलनसार व्यक्ति हैं। सामाजिक कार्यों में आप की रुचि है। फतेहपुर अनाथ विद्यालय की कार्यकारिणी के आप सदस्य हैं।

आप संवेदनशील तथा लोकप्रिय कवि हैं। आप की कविताएँ सुललित, भाव-प्रवण तथा सामयिक होती हैं। •

स्व. रघुनाथ प्रसाद सिंहानिया

आप प्रतिष्ठित वस्त्र व्यवसायी घराने में उत्पन्न हुए। उच्च शिक्षा प्राप्त कर वणिक होते हुए भी आप सारस्वत कर्म में प्रवृत्त हुए।

राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति के अनुसन्धान हेतु आप आजीवन प्रयत्नशील रहे। आप ने राजस्थान का चप्पा-चप्पा छान मारा तथा डिंगल साहित्य का उद्धार किया। आप का ग्रन्थ-संग्रह इतना विशाल तथा व्यापक था कि किसी भी अन्य श्रेष्ठ पुस्तकालय से उसकी तुलना हो सकती थी। 'भारत में मारवाड़ी समाज का इतिहास' आप की महत्वपूर्ण कृति है। बंगला भाषा से हिन्दी में अनेक श्रेष्ठ ग्रन्थ आप ने अनूदित किए, पर उन पर अपना नाम नहीं दिया।

राजपूत शैली के दुर्लभ चित्रों का बहुत महत्वपूर्ण संग्रह आप ने किया था। विश्व कवि रवीन्द्र नाथ टैगोर को आप नें राजस्थानी गौरव पर काव्य रचना की प्रेरणा दी तथा सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता डॉ० कालिदास नाग को आप ने सम्पूर्ण राजस्थान का परिभ्रमण करवाया। राजस्थान विकास मंडल, देवालय संरक्षण समिति, हिमालय संरक्षण मोर्चा आदि संस्थाओं के आप सहयोगी थे।

राजस्थान स्वधर्म, गौड़ीय, पद्मावती पुरवाल, आदि विभिन्न पत्रिकाओं का आप ने सम्पादन किया। राजस्थान प्रेस की आप ने स्थापना की।

राजस्थानी संस्कृति के अप्रतिम अन्वेषक के रूप में आप समादृत रहेंगे। ●

स्व. जगत नारायण शुक्ल

आप बड़े विद्वान व्यक्ति थे और हिन्दी में प्राय लेख लिखा करते थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पर आप कविताएँ भी लिखते थे।

सामाजिक क्षेत्र में भी सेवा संस्थाओं में आप की अभिरुचि थी। बड़ाबाजार क्षेत्र के निवासी आप की बहुत इज्जत करते थे और 'दादाजी' के उपनाम से सम्बोधित करते थे।

●

इन्द्र दूगड़

आप का जन्म १९१८ ई० में जियागंज (मुर्शिदाबाद) में हुआ। हीराचन्द दूगड़ आप के पिता थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय से वाणिज्य शास्त्र में स्नातक की उपाधि प्राप्त कर आप ने चित्रकार के रूप में जीवनारम्भ किया। प्रख्यात चित्रकार आचार्य नन्दलाल बोस को आप अपना गुरु (प्रेरक) मानते हैं।



वर्तमान में आप भारतवर्ष के अग्रणी चित्रकार हैं, विशेष कर वाटर कलर में आप को कमाल हासिल है। आप के चित्रों की प्रदर्शनी न केवल प्रमुख भारतीय नगरों में वरन् १९४६ ई० में यूनेस्को के तत्वावधान में पेरिस तथा १९६४ ई० में पश्चिमी जर्मनी के विभिन्न नगरों की कला दीर्घा में भी लग चुकी है। संसद भवन तथा कलकत्ता के श्वेताम्बर जैन मन्दिरों की दीवारों को अभिचित्रित करने का दायित्व भी आप को सौंपा गया। रामगढ़, जयपुर तथा अमृतसर के कांग्रेस अधिवेशनों में आप के चित्र सजाए गए।

चित्रकला में अपनी निष्ठा तथा सर्जनात्मकता के लिए आप विख्यात हैं। ●

स्व. बजरंगलाल लोहिया

आप का जन्म फतेहपुर (राजस्थान) में हुआ था। अपनी स्वाध्याय - मनन तथा

अनुसन्धानी प्रवृत्ति से आपने विभिन्न विषयों का फतेहपुर पुस्तकालय में गम्भीर अध्ययन किया था।

कालान्तर में आप कलकत्ता आ कर बस गए। यहाँ पर बड़ाबाजार लाइब्रेरी, श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, आदि पुस्तकालयों को श्रेष्ठ पुस्तकों के चयन में आप ने विशेष सहयोग दिया। साथ ही अदम्य उत्साह तथा अथक परिश्रम से आप ने अलभ्य ग्रन्थों एवं उत्कृष्ट साहित्यिक पुस्तकों का संग्रह किया और उन्हें फतेहपुर लाइब्रेरी को भेजा, जिससे कि वह पुस्तकालय समस्त राजस्थान में सर्वोपरि हो गया।

अपने विद्या-व्यसन तथा पुस्तकालय-अनुराग के लिए आप सुविख्यात रहेंगे। ●

कस्तूर चन्द ललवानी

आप का जन्म २२ जनवरी १९२१ ई० को राजशाही (सम्प्रति बांगला देश) में हुआ। रावतमल ललवानी आप के पिता थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय से आप ने



इकानामिक्स में एम. ए. की उपाधि प्राप्त की है। आई. टी. आई. (खड़गपुर) के 'मानविकी एवं समाज विज्ञान' विभाग के आप अध्यक्ष रह चुके हैं। पश्चिमी यूरोप एवं अमेरिका की आपने यात्रा की है। १९८० ई० में अम्सटर्डम (हालैंड) में आयोजित 'लीगल साइंस' की दूसरी अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस में आप ने भारत का प्रतिनिधित्व किया।

आप अर्थशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान हैं। अर्थ शास्त्र, समाज विज्ञान तथा व्यवसाय विषयक कई महत्वपूर्ण ग्रन्थ आपने लिखे हैं।

आप श्वेताम्बर जैन धर्मावलम्बी हैं। आप ने अनेक प्राचीन जैन तत्व-ग्रन्थों का अनुवाद किया है, यथा – भगवती सूत्र (३ खण्ड), दशवैकालिक सूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र, कल्प सूत्र आदि। भगवान महावीर का जीवन और शिक्षाएँ भी आप ने अंग्रेजी में लिखीं हैं।

आप उद्भट विद्वान तथा लगनशील शोधकर्त्ता हैं। ●

स्व. ईश्वरी प्रसाद वर्मा

आप बड़े मेधावी एवं विलक्षण चित्रकार तो थे ही, साथ में हिन्दू दर्शन के प्रकाण्ड पण्डित भी। उस समय ब्रिटिश भारत का सर्वोच्च न्यायालय कलकत्ता में था। उसके प्रधान न्यायाधीश सर जान उडरफ प्रायः आप के घर जा कर हिन्दू दर्शन के बारे में अपनी जिज्ञासा शांत करते थे। आप के चित्रों की ख्याति तब लन्दन तक में थी।

यशस्वी चित्रकार के रूप में आप सदा स्मरणीय रहेंगे। ●

स्व. रामेश्वर प्रसाद वर्मा

यशस्वी चित्रकार ईश्वरी प्रसाद वर्मा के आप पुत्र थे। उपन्यास-सम्राट मुंशी प्रेमचन्द के कथा संग्रह 'सप्त सरोज', 'प्रेम प्रचीसी' और 'प्रेम पूर्णिमा' के आवरण-चित्र आप की ही कृतियाँ थीं, जिन की प्रशंसा प्रख्यात बंगला कथा-सम्राट शरत् बाबू ने भी मुक्त कण्ठ से की।

अल्पायु में ही आप का निधन हो गया था। ●

गणेश ललवानी

आप का जन्म १२ दिसम्बर १६२३ ई० को राजशाही (बांगला देश) में हुआ। रावतमल ललवानी आप के पिता थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय से आप ने बंगला साहित्य में एम. ए. की उपाधि प्राप्त की।



बंगला, अंग्रेजी तथा हिन्दी भाषाओं पर आप का समान अधिकार है। जैन भवन द्वारा प्रकाशित तीन पत्रों – जैन जर्नल (अंग्रेजी), श्रमण (बंगला) तथा तित्यचर (हिन्दी) के आप सम्पादक हैं।

आप कृति साहित्यकार भी हैं। आप की प्रमुख रचनाएँ हैं – वर्द्धमान महावीर, सातरी जैन तीर्थ तथा अतिमुक्त। इनमें से कथा-प्रधान 'अतिमुक्त' की प्रशंसा सुप्रसिद्ध भाषा-वैज्ञानिक सुनीति कुमार चाटुर्ज्या ने भी की।

आप ने कतिपय हिन्दी ग्रन्थों का बंगला और अंग्रेजी में अनुवाद किया है। श्रमण संस्कृतिर कविता, भूया, निर्ग्रन्थ तथा भीड़े भरा चोख – आप की अनुवादित पुस्तकें हैं।

आप के रचित अनेक जैन धर्म विषयक नाटक मंचस्थ हो चुके हैं। आप के चित्रों की प्रदर्शनी एकेडमी आफ फाइन आर्टस् में लग चुकी है।

आप बहुमुखी प्रतिभाशाली बुद्धिजीवी व्यक्ति हैं। ●

श्यामानन्द जालान

आप का जन्म १३ जनवरी १६३४ ई० को कलकत्ता में हुआ। सुप्रसिद्ध समाजसेवी तथा राजनेता ईश्वर दास जालान आप के पिता थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी.कॉम., एल-एल. बी. की उपाधि प्राप्त कर आप ने कलकत्ता उच्च न्यायालय से एटर्नी-एट-लॉ की परीक्षा उत्तीर्ण की। सम्प्रति आप अग्रणी सालिसीटर के रूप में कार्यरत हैं।

आधुनिक हिन्दी रंगमंच को कलकत्ता महानगर में व्यावसायिक रूप प्रदान करने में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। सिद्धहस्त अभिनय तथा विलक्षण निर्देशन के लिए आप प्रख्यात हैं। पश्चिम जर्मनी की यात्रा कर आपने वहाँ की नाट्य-शैली का गूढ़ अध्ययन किया। शुतुरमुर्ग, एवं इन्द्रजीत, आधे-अधूरे, हम हिन्दुस्तानी हैं, सखाराम बाइंडर, छपते-छपते, आदि आप की बहुचर्चित प्रस्तुतियाँ हैं। आप के नाटकों का मंचन देश के अनेक महानगरों में सफलता-पूर्वक हो चुका है। १६७६ ई० में 'संगीत नाटक अकादमी' ने आप को 'सर्वश्रेष्ठ निर्देशक' की उपाधि से अलंकृत किया। आप अनामिका के अध्यक्ष व मंत्री, अनामिका कला संगम के निदेशक तथा पदातिक के संस्थापक रह चुके हैं।

अग्रणी प्रयोगधर्मा नाट्य-निर्देशक के रूप में आप सुविख्यात हैं। ●

डॉ. शारदा फतेहपुरिया

आप का जन्म १ जुलाई १६३७ ई० को भादरा (हरियाणा) में हुआ। बद्री प्रसाद बायवाला की आप पुत्री हैं। आप का विवाह प्रसिद्ध व्यवसायी गोविन्द प्रसाद फतेहपुरिया से हुआ है। कलकत्ता विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान में एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण कर आप ने मानसिक अवरोधन विषय में पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की।

बड़ाबाजार के कार्यकर्त्ता –

बाल मनोविज्ञान से सम्बन्धित विभिन्न जटिल समस्याओं के ऊपर शोध में आप सतत् उद्यमी हैं। अलकेन्दु बोधि निकेतन तथा मनोविज्ञान अनुसन्धान ब्यूरो में आप कार्य कर चुकी हैं। मानसिक रूप से विकृत बालकों के समुचित विकास के लिए 'मनोविकास केन्द्र' नामक विद्यालय की आप संस्थापक-निदेशक हैं। इसके अतिरिक्त संवेगी व्यवहार सम्बन्धी समस्या के साथ संवेगात्मक विकृत बालकों के लिए एक आउटडोर क्लिनिक का आप संचालन कर रही हैं।

आप विदुषी मनोवैज्ञानिक तथा कर्मठ समाजसेविका हैं। ●

प्रेम वाजपेयी

आप का जन्म १५ अगस्त १९२५ ई० को कलकत्ते में हुआ। प्रसिद्ध पत्रकार पं० प्रताप नारायण वाजपेयी के आप पुत्र हैं। कलकत्ता विश्वविद्यालय से आप ने वाणिज्य में स्नातक की उपाधि प्राप्त की।



अपने पत्रकार जीवन का प्रशिक्षण आप ने दैनिक 'लोकमान्य' में रह कर प्राप्त किया। राजनीतिक तथा आर्थिक समस्याओं पर सटीक टिप्पणी करना आप की विशेषता है। सम्प्रति आप 'आर्थिक जगत्' पत्र के प्रबन्ध सम्पादक के रूप में अपने पिता के सहायक हैं।

आप निर्भीक तथा प्रबुद्ध पत्रकार हैं। ●

स्व. मदनमोहन सिंहानिया

आप का जन्म १९११ ई० में रघुनाथपुर (पुरुलिया) में हुआ। कलकत्ता विश्वविद्यालय से वाणिज्य शास्त्र में स्नातकीय उपाधि प्राप्त कर आप अपनी प्रतिभा एवं कर्मठता से अग्रणी उद्योगपति बन गए।

तरुणावस्था से ही सांस्कृतिक तथा सार्वजनिक कार्यों में आप का अनुराग था। अखिल बंगाल छात्र संघ के आप सचिव चुने गए और नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में आप ने काम किया। मेदिनीपुर तथा रघुनाथपुर में पड़े सूखे के दौरान आप ने राहत सेवा कार्य किया। आप आयुर्वेदिक चिकित्सा भी किया करते थे।

आप बहुभाषाविद् थे। आप की यह दृढ़ मान्यता थी कि देशी एवं विदेशी सभी भाषाओं की जननी संस्कृत है। निखिल बंग सेवा समिति ने आप को अप्रैल १९७५ ई० में 'भाषा तत्व विशारद' की उपाधि से सम्मानित किया। एशियाटिक सोसाइटी के आप आजीवन सदस्य थे।

१८ मार्च १९८२ ई० को कलकत्ता में आप का देहावसान हुआ। आप विद्वान तथा सेवाभावी व्यक्ति थे ●

श्रीचन्द रामपुरिया

आप का जन्म फाल्गुन बदी ८ सम्वत् १९६५ को सुजानगढ़ (चुरु) में हुआ। पूनम चन्द रामपुरिया आप के पिता थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी. कॉम., एल-एल. बी. की उपाधि प्राप्त कर आप वकालत में संलग्न हैं। सम्प्रति आप अग्रणी आय कर सलाहकार हैं।

सामाजिक तथा जातीय उत्थान में आप की अभिरुचि है। आप जैन विश्व भारती के कुलपति तथा जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी विद्यालय के सचिव हैं। जैन धर्म के प्रचार-

प्रसार में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए आप जैन विद्या मनीषी तथा ओसवाल नवयुवक संघ द्वारा सम्मानित किए जा चुके हैं।

साहित्य तथा पत्रकारिता में आप का अनुराग है। 'ओसवाल नवयुवक' तथा 'जैन भारती' के आप सम्पादक रह चुके हैं। जैन धर्म पर आप ने प्रायः २ दर्जन पुस्तकें लिखी हैं। बाल्मीकि रामायण तथा महात्मा गांधी की सूक्तियों के संग्रह भी आप ने सम्पादित किए हैं। आप की कुछ पुस्तकें अंग्रेजी में भी हैं।

आप धर्मनिष्ठ एवं सर्जनात्मक साहित्यकार हैं। •

लाल बहादुर सिंह

आप का जन्म १५ जनवरी १९३४ ई० को बलुआ (सारन) में हुआ है। कलकत्ता विश्वविद्यालय से आप ने हिन्दी में एम. ए. की उपाधि प्राप्त की। दीर्घकाल से आप सेंट लारेंस स्कूल में हिन्दी के अध्यापक हैं।



बंगीय हिन्दी परिषद के माध्यम से हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आप दीर्घ कालावधि से संलग्न हैं। वर्त्तमान में आप परिषद के प्रधान सचिव हैं। परिषद के साहित्यिक आयोजनों में आप की विशेष भूमिका रहती है। परिषद द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका के आप प्रबन्ध सम्पादक हैं।

गांधी शताब्दी ग्रन्थ के सम्पादन तथा अन्य अनेक ग्रन्थों के प्रकाशन में आप ने सक्रिय योगदान किया। आप कर्मठ तथा प्रबुद्ध साहित्यसेवी हैं। •

भँवर लाल नाहटा

आप का जन्म आश्विन कृष्णा १२ सं० १९६८ को नाहटों की गवाड़ (बीकानेर) में हुआ। भैरूंदान नाहटा आप के पिता थे। स्वाध्याय एवं मनन से आप ने विभिन्न भारतीय भाषाओं, भाषा विज्ञान तथा पुरातत्व में प्रकाण्ड ज्ञान अर्जित किया है।

आप श्वेताम्बर जैन धर्मावलम्बी हैं। प्रसिद्ध अन्वेषक विद्वान अगरचन्द नाहटा के साथ आप ने जैन धर्म पर अनेक पुस्तकें लिखी अथवा सम्पादित की हैं। आप की कुछ महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं—जैसलमेर के कलापूर्ण जैन मन्दिर, द्रव्य परीक्षा, हम्मीरायण, पद्मिनी चरित्र, बानगी (राजस्थानी भाषा), आदि। श्री जिनदत्त सूरी सेवा संघ का मुखपत्र दीर्घ काल से आप के सम्पादन में प्रकाशित हो रहा है।

आप तत्व-मर्मज्ञ तथा अनुसन्धानी व्यक्ति हैं। •

सखा बोरड़

आप का जन्म लाडनूं (राजस्थान) में हुआ। कलकत्ता विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में एम. ए. की उपाधि प्राप्त कर आपने एल-एल. बी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। कलकत्ता उच्च न्यायालय में अधिवक्ता के रूप में आप कार्यरत रहे। सम्प्रति प्रसिद्ध औद्योगिक समूह 'कानोड़िया उद्योग' के आप प्रमुख अधिकारी हैं।

भारतीय दर्शन तथा संस्कृति का आप को गहन अध्ययन है। अनुसन्धान तथा बेबाक आलोचना आप की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। सेक्स एवं नैतिकता की आप की धारणा

यथार्थ तथा मौलिक चिन्तन पर आधारित है। फलतः प्राचीन धर्म तथा संस्कृति पर आप के आलोचनात्मक निबन्ध उग्र एवं विवादास्पद होते हैं।

आप अन्वेषी व्यक्ति तथा यथार्थवादी आलोचक हैं। ●

वासुदेव पोद्दार

आप का जन्म १४ जून १९३४ ई० को कलकत्ता में हुआ। बजरंग लाल पोद्दार आप के पिता थे। स्नातक स्तर तक शिक्षा प्राप्त कर आप लेखन में प्रवृत्त हुए। सम्प्रति 'काव्य-प्रस्थ प्रकाशन' के आप संचालक हैं।



आप का अध्ययन विशद् तथा बहुमुखी है। गहन अनुसंधान के बाद आप ने दो महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे – 'रामायण-महाभारत का काल-प्रवाह' एवं 'काल-पुरुष'। आप के लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं तथा स्मृति-ग्रन्थों में प्रकाशित होते रहते हैं। वर्त्तमान में आप 'पराविद्या' तथा 'अंतरिक्ष एवं मानव इतिहास' विषयों पर शोधपूर्ण ग्रन्थ रचना में संलग्न हैं।

आप कवि एवं वक्ता के रूप में भी विख्यात हैं। संस्कृत भाषा तथा दर्शन-शास्त्र पर आप का पूर्ण अधिकार है।

अपनी अनुसन्धान-प्रवृत्ति तथा पांडित्य के लिए आप समादृत हैं। ●

गंगादास झंवर

आप शेयर बाजार में उद्योग रत हैं। माहेश्वरी समाज के उत्थान हेतु आप जागरुक हैं। भारतीय दर्शन, विशेष कर रामचरित मानस के आप सुविवेचक हैं।

शास्त्रीय संगीत में आप का प्रबल अनुराग है। प्रतिभाशाली नवोदित संगीतज्ञों को आप प्रश्रय देते हैं। वाद्य-यन्त्रों के आप कुशल पारखी तथा स्वयं एक सिद्ध-हस्त संगीतज्ञ भी हैं। ●

प्रीतम खन्ना

आप का जन्म ८ सितम्बर १९३५ ई० को कलकत्ता में हुआ। ईश्वर सिंह खन्ना के आप पुत्र हैं। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से आप ने बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की है। सम्प्रति आप स्वतन्त्र व्यवसाय में संलग्न हैं।

आप की नाट्य-साहित्य में अभिरुचि है। वृत्त चित्र के आप अच्छे वाचक हैं। आकाशवाणी के कलकत्ता केन्द्र में हिन्दी विभाग से आप दीर्घ काल से सम्बद्ध हैं। आप की रचनाएँ आकाशवाणी से प्रसारित होती रहती हैं। ●

डॉ. शम्भुनाथ

आप का जन्म २१ मई १९४८ ई० को देवघर (बिहार) में हुआ। डी. पी. साव के आप पुत्र हैं। कलकत्ता विश्वविद्यालय से आप ने एम. ए., पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। सम्प्रति कलकत्ता विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में आप व्याख्याता हैं।

प्रगतिशील साहित्यिक संस्थाओं से आप सम्बद्ध हैं। आप स्वयं कृती साहित्यकार तथा आलोचक हैं। 'ऐसा होने के विरुद्ध' (कहानी संग्रह) तथा 'दिनकर–कुछ पुनर्विचार' आप की मौलिक रचनाएं हैं। आलोचना में आप की उल्लेखनीय कृतियां

हैं – 'मिथक और आधुनिक कविता' तथा 'कथा शिल्पी प्रेमचन्द'। 'साहित्य और जन संघर्ष' तथा 'मिथक और भाषा' का आप ने सम्पादन किया है। आपकी रचनाएं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं।

आप जनवादी तथा सर्जनात्मक बुद्धि-जीवी हैं। ●

पद्मावती झुनझुनवाला उर्फ शबनम

आप का जन्म बम्बई में हुआ। गोविन्द लाल पित्ती की आप पुत्री हैं। सीनियर केम्ब्रिज की परीक्षा उत्तीर्ण कर आप ने स्वाध्याय से संस्कृत भाषा का भी अध्ययन-मनन किया है।



भक्ति साहित्य पर अनुसन्धान में आप की प्रवृत्ति है। आप की प्रथम महत्वपूर्ण कृति 'मीरा – एक अध्ययन' है। उत्तर प्रदेश शासन आप के काव्यात्मक जीवन-वृत्त 'चन्द्र सखी' को पुरस्कृत कर चुका है। आप की नवीनतम कृति 'मीरा – व्यक्तित्व एवं कृतित्व' बनारस में तथा सम्पादित ग्रन्थ 'करपात्री स्वामी के प्रवचनों का संग्रह' कलकत्ता में प्रकाशोन्मुख हैं। आप के निबंध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

आप विदुषी तथा अन्वेषक रमणी हैं। ●

कुमार बृजेन्द्र

आप का जन्म ७ जनवरी १९५५ ई० को रामनगर (बलिया) में हुआ। वासुदेव उपाध्याय के आप पुत्र हैं। कलकत्ता विश्व-विद्यालय से आपने बी. कॉम., एल-एल. बी. की उपाधि प्राप्त की है।

आप यथार्थवादी कवि हैं। सामयिक घटनाओं का आम जनता के जीवन पर जो प्रभाव पड़ता है – वही आप की कविताओं की विषय-वस्तु है। ●

सीताराम शर्मा

आप का जन्म १३ अगस्त १९४६ ई० को कलानौर (हरियाणा) में हुआ। द्वारका दास शर्मा के आप पुत्र हैं। कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी. कॉम., एल-एल. बी. की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर आप ने एम. बी. ए. की उपाधि प्राप्त की। वर्त्तमान में आप स्वतन्त्र पत्रकार के रूप में कार्य रत रहे हैं।



१९६४ ई० में आप के पत्रकार जीवन का प्रारम्भ 'विचार-प्रवाह' (मासिक) के सह-सम्पादक के रूप में हुआ। कालान्तर में 'जन संसार' (साप्ताहिक) से आप सम्बद्ध

रहे। वर्त्तमान में आंग्ल भाषा में प्रकाशित 'कैलडस्ट' (साप्ताहिक) में आप कार्यरत हैं।

छात्रावस्था मे ही सामाजिक तथा सार्वजनिक सेवा कार्यों में आप की रुचि है। राजस्थान ब्राह्मण संघ तथा मारवाड़ी सम्मेलन की कार्यकारिणी के आप सदस्य हैं। सम्मेलन द्वारा आयोजित स्वतन्त्रता सेनानी समारोह के आप संयोजक रह चुके हैं।

आप गृह मन्त्रालय के अन्तर्गत राष्ट्रीय एकता 'स्टडी ग्रूप' के प्रधान सचिव तथा दक्षिण पूर्व रेल उपभोक्ता सलाहकार समिति के सदस्य रह चुके हैं। आप भारत-संयुक्त राष्ट्र संघ संस्था के प्रधान सचिव तथा भारत-हंगरी मैत्री संगठन के मन्त्री भी रहे। विभिन्न यूरोपीय देशों की सद्भावना यात्रा पर आप जा चुके हैं।

आप प्रतिभाशाली तथा कर्मठ पत्रकार हैं। ●

राजेन्द्र उपाध्याय

आप का जन्म २० जून १९५८ ई० को सैलाना (रतलाम) में हुआ। डॉ० एम. एल. उपाध्याय के आप पुत्र हैं। शिमला विश्व-विद्यालय से बी.ए. तथा कलकत्ता विश्व विद्यालय से एल-एल.बी. की परीक्षा उत्तीर्ण कर आप हिन्दी साहित्य के स्नातकोत्तर अध्ययन में संलग्न हैं।

आप कवि एवं लेखक हैं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आप की कविताएं एवं समसामयिक लेख प्रकाशित होते रहते हैं। कलकत्ता विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की पत्रिका का आप सम्पादन कर रहे हैं। अफ्रेशियाई लेखक संघ में आप ने हिन्दी भाषा का प्रतिनिधित्व किया। कलकत्ता महानगर की सांस्कृतिक तथा साहित्यिक संस्थाओं से आप सम्बद्ध हैं। ●

राजीव नयन

आप का जन्म २ मार्च १९४० ई० को रामनगर (बलिया) में हुआ। सूरज राम आप के पिता थे। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से इण्टरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण कर आप ने कलकत्ता महानगर में पत्रकार जीवन का प्रारम्भ किया।



सर्वप्रथम तरुण प्रेस में आप अंग्रेजी लेखों एवं समाचारों के हिन्दी अनुवादक पद पर रहे। तत्पश्चात् दैनिक सन्मार्ग के सम्पादकीय विभाग से आप सम्बद्ध हो गए। आप के लेख विभिन्न दैनिक तथा मासिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। कई महत्वपूर्ण स्मारिकाओं का भी आप ने सम्पादन किया। प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्पादन में भी आप की विशेष भूमिका रही है।

गैर-राजनैतिक मजदूर संगठनों में आप की रुचि है। वर्त्तमान में सन्मार्ग कर्मचारी संघ के आप कोषाध्यक्ष हैं।

आप उत्साही एवं कर्मठ पत्रकार हैं। ●

ओम प्रकाश शाह

आप का जन्म ८ दिसम्बर १९४१ ई० को हुआ। आप ने बी. कॉम. एल-एल. बी. की उपाधि प्राप्त कर चार्टर्ड एकाउन्टेंसी की परीक्षा उत्तीर्ण की है। कुछ काल तक सेंट जेवियर्स कालेज में आप व्याख्याता रहे।

सम्प्रति चार्टर्ड एकाउन्टेंट तथा प्रबंध सलाह-कार के रूप में आप कार्यरत हैं। कलकत्ता चेम्बर आफ कामर्स, कलकत्ता मैनेजमेण्ट एसोसियेशन तथा एसोसियेशन आफ कम्पनी सेक्रेटरीज के आप सदस्य हैं।



महानगर की विभिन्न सार्वजनिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक संस्थाओं से आप सम्बद्ध हैं। सम्प्रति १९८२-'८३ ई० के लिए लायन्स क्लब्स इण्टरनेशनल डिस्ट्रिक्ट ३२२-बी के आप डिस्ट्रिक्ट गवर्नर निर्वाचित हुए हैं। सेंट जान एम्बुलेंस तथा इण्डियन रेडक्रास के भी आप उत्साही सदस्य हैं।

पत्रकारिता जगत् में आप का महत्वपूर्ण योगदान है। अखिल भारतीय संवाद पत्र सम्पादक सम्मेलन की स्थायी समिति, प्रेस परिषद तथा एडवरटाईजिंग क्लब के आप सदस्य हैं। इंस्टीच्यूट आफ करेंट अफेयर्स के तत्वावधान में आप सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों पर चर्चाएँ आयोजित करते रहते हैं।

आप उत्साही समाजसेवी तथा कर्मठ पत्रकार हैं। •

स्व. हीरालाल मेहरोत्रा

आप का जन्म १९०३ ई० को हुआ। आप वस्त्र व्यवसायी थे। कालान्तर में १९६० ई० में आप ने महात्मा गांधी रोड पर किताबों की प्रसिद्ध दूकान 'ज्ञान भारती' स्थापित की।

देश के स्वाधीनता संग्राम में आप ने सक्रिय योग दिया। उस समय राष्ट्र-कवि पं० माधव शुक्ल के निर्देशन में हिन्दी नाट्य परिषद जनसाधारण में देशभक्ति का प्रचार



कर रही थी। मास्टर खादिम हुसैन उसमें संगीत एवं हारमोनियम सिखाते थे। आप ने उनसे शास्त्रीय संगीत तथा नृत्यकला का प्रशिक्षण प्राप्त किया। परिषद के नाटकों में आप अभिनय तो करते ही थे, यन्त्र-वादन भी करने लगे। दो नाटकों में आप ने स्त्री पात्रों की भूमिका निबाही। शीघ्र ही आप पं० माधव शुक्ल के घनिष्ठ सहयोगी बन कर परिषद की व्यवस्था में सहयोग करने लगे।

अंग्रेजी शासन ने परिषद पर जनता में क्रांति फैलाने का आरोप लगाया। आप को भी परिषद के अन्य कार्यकर्त्ताओं के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। आपने निर्भयता-पूर्वक अपने परिजनों व मित्रों का आह्वान किया कि वे अंग्रेजों से न डरें और देश-सेवा में जुटे रहें।

लोकहित में आप सामाजिक कार्यों में भाग लेते रहते थे। किसी गरीब की लड़की का विवाह हो या असहाय विधवा के जीवन-निर्वाह का प्रश्न – आप यथासम्भव आर्थिक सहायता करते थे।

१९६० ई० में आप का निधन हुआ। अपने नाट्यानुराग तथा देशप्रेम के लिए आप याद किए जाएंगे। •

दीनानाथ कश्यप

आप का जन्म १५ जुलाई १९१० ई० को नारोवाल (सम्प्रति पाकिस्तान) में हुआ। गोविन्दराम कश्यप आप के पिता थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण कर आप सारस्वत खत्री विद्यालय में अध्यापन में प्रवृत्त हुए। कालान्तर में हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय के आप व्यवस्थापक बन गए।



स्वाध्याय एवं मनन से आप ने उर्दू एवं अंग्रेजी साहित्य में विशेष अधिकार अर्जित किया है। खलील जिब्रान की कविताओं का आप ने हिन्दी में अनुवाद किया है। डच भाषा में ब्राजील की कवियत्री द्वारा महात्मा गांधी को दी गई श्रद्धांजलि का आपने हिन्दी में छन्दबद्ध अनुवाद किया है। आप के लेख तथा अनुवाद पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

आप की अध्यात्म तथा तन्त्र शास्त्र के अध्ययन में रुचि है। रामकृष्ण परमहंस की जन्म शताब्दी के समारोह में अर्थ-संग्रह कर आप ने सहयोग किया। मातृसंघ की कार्य-कारिणी के आप सदस्य हैं।

आप सफल अनुवादक तथा सेवानिष्ठ व्यक्ति हैं। •

श्रीनिवास शास्त्री

आप का जन्म भाद्रपद शुक्ला १० सम्वत् १९७१ को लाम्बी (खेतड़ी) में हुआ। व्याकरण केशरी पं० नवरंग राय शास्त्री आप के पिता थे। प्रारंभ से ही आप कुशाग्र एवं कर्मठ विद्यार्थी रहे। कालान्तर में संस्कृत शास्त्री, आयुर्वेद एवं आयुर्वेदाचार्य की उपाधि प्राप्त कर आप ने बी. ए., साहित्य-रत्न एवं डी. एन. टी. की परीक्षाएँ भी उत्तीर्ण कीं। १९५३ ई० में आप कलकत्ता आ गए तथा



अमहर्स्ट स्टीट स्थित श्री विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी हास्पिटल में रसायनशाला तथा आउटडोर की व्यवस्था सँभाली। १९६८ ई० में आप ने अपना औषधालय स्थापित कर स्वतन्त्र रूप से चिकित्सा आरंभ कर दी।

स्वाधीनता संग्राम के दौरान बीकानेर में निर्मल कुमार सुराणा ने आप के सहयोग से कांग्रेस की स्थापना की। आप उसके सभापति बने। कालक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आप निष्ठावान सदस्य बन गए। कुछ समय तक आप मण्डल कार्यवाह रहे। आपात्काल में संघ पर दमनकारी प्रतिबन्ध लगने पर आप गिरफ्तार भी हुए।

आप संस्कृत साहित्य के उद्भट विद्वान तथा कृती साहित्यकार हैं। १५ वर्ष की आयु में ही विष्णु सहस्रनाम को आप ने छन्दबद्ध किया एवं २० वर्ष की उम्र में अपना प्रसिद्ध

उपन्यास 'चन्द्र महीपति' लिखा, जिस पर उत्तर प्रदेश शासन ने २०००) का सर्वोच्च पुरस्कार तथा राजस्थान सरकार ने ७५०) का विशेष पुरस्कार प्रदान किए। १९६८ ई० में आप की पुस्तक 'सूर्यप्रभ किंवा वैभव पिचाश:' प्रकाशित हुई, जिस पर राजस्थान सरकार ने २५००) तथा उत्तर प्रदेश शासन ने १०००) का गंगानाथ पुरस्कार दिए।

आप निष्णात चिकित्सक तथा कृती रचनाकार हैं। ●

राम प्रसाद मिश्र

आप का जन्म ५ जनवरी १९१६ ई० को कोहरा खुर्द (गोरखपुर) में हुआ। घुपई मिश्र आप के पिता थे। अध्ययन हेतु आप कलकत्ता आ गए। प्रवेशिका परीक्षा उत्तीर्ण कर आप श्री सारस्वत खत्री विद्यालय में अध्यापक हो गए। कालान्तर में कलकत्ता



विश्वविद्यालय से आप ने बी. ए. की उपाधि प्राप्त की। ए. बी. टी. ए. की बड़ाबाजार उपसमिति के आप अध्यक्ष रह चुके हैं एवं इसके विविध आन्दोलनों में सक्रिय भाग भी लेते रहे हैं।

स्वाधीनता संग्राम में आपने सक्रिय भाग लिया। कांग्रेस (संगठन) दल की ४२ नं० वार्ड शाखा के आप मंत्री रह चुके हैं।

कतिपय स्थानीय समाचार - पत्रों से सह - सम्पादक के रूप में आप ने सहयोग किया। ऐनी बेसेन्ट की प्रसिद्ध पुस्तक 'थाट पावर', डॉ० एस. के. दास की पुस्तक 'केस रिकार्ड' तथा 'होम्योपैथिक रिफ्रेशर कोर्स' का आप ने हिन्दी में अनुवाद किया है।

तीर्थ - यात्रियों की सेवा तथा होम्योपैथिक चिकित्सा में आप की रुचि है। ●

काशीनाथ मिश्र

आप का जन्म २१ नवम्बर १९१९ ई० को अहरौरा गाँव (मिर्जापुर) में हुआ। पं० जनार्दन मिश्र आप के पिता थे। काशी विश्वविद्यालय से बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण कर आप ने साहित्य रत्न, साहित्याचार्य एवं ज्योतिष विशारद की उपाधि प्राप्त कीं।



पत्रकारिता का प्रशिक्षण आपने सुप्रसिद्ध सम्पादकाचार्य बाबूराव विष्णु पराड़कर एवं भूतपूर्व केन्द्रीय गृह-मंत्री कमलापति त्रिपाठी के सानिध्य में बनारस में ही प्राप्त किया। फिर बनारस से प्रकाशित आज व संसार पत्रों में काम किया। कालान्तर में आप दैनिक विश्वमित्र (कलकत्ता), नवभारत टाइम्स (बंबई), धर्मयुग, नवनीत, शंकर (कलकत्ता), समाज विकास आदि पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादन विभाग से सम्बद्ध रह चुके हैं। सम्प्रति आप दैनिक विश्वमित्र के दिल्ली स्थित संवाददाता हैं।

आप बहुभाषाविद् तथा कृती साहित्यकार हैं। आपने अन्य भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठ रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद किया

तथा मौलिक कहानियाँ भी लिखीं। 'सम्पूर्ण गीता चित्रांकन' की अभिनव योजना के पाण्डुलिपि निर्देशन में आप संलग्न हैं।

१९४२ ई० के 'करो या मरो' आन्दोलन में भाग ले कर आप जेल भी गए। विधवा विवाह सहायक संघ तथा पर्दा प्रथा उन्मूलन समिति के आप सक्रिय सदस्य हैं।

आप अनुभवी पत्रकार तथा सर्जनात्मक रचयिता हैं। ●

कृष्णचन्द्र अग्रवाल

आप का जन्म १९२१ ई० में कृष्णाष्टमी को कलकत्ता में हुआ। दैनिक विश्वमित्र के संस्थापक मूलचन्द अग्रवाल आप के पिता थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी. ए. की उपाधि प्राप्त कर आप विश्वमित्र प्रकाशन समूह का संचालन संभालने लगे।



आप प्रारंभ से ही महात्मा गांधी के अनन्य श्रद्धालु रहे हैं। फिर भी आप की पत्रकारिता नीति सभी दलों के लिए निष्पक्ष भाव से समीक्षात्मक है। अपने पत्र के माध्यम से समाज-सुधार के आन्दोलनों में आप ने सदैव सक्रिय योग दिया। आप बाल-विवाह तथा पर्दा-प्रथा के कट्टर विरोधी हैं। अन्तर्जातीय विवाह के आप पक्षधर हैं एवं अपने परिवार में उस पर अमल भी किया है।

बड़ाबाजार अंचल की सामाजिक, सांस्कृतिक तथा सार्वजनिक संस्थाएं अपने विभिन्न आयोजनों में आप को विशेष रूप से आमन्त्रित करती हैं। आप स्वयं भी प्रकृति से उदार तथा गुणग्राही हैं। जरुरतमंद एवं मेधावी साहित्यकारों की आप यथासम्भव मदद करते हैं।

आप कृती साहित्यकार भी हैं। आप की रचनाएं आप के पत्रों में प्रायः प्रकाशित होती रहती हैं।

आप प्रबुद्ध समाजसेवी तथा ध्येयनिष्ठ पत्रकार हैं। ●

त्रिलोचन झा

आप का जन्म कार्त्तिक कृष्णा ८ बंगला संवत् १३२७ को धोघरडीहा (मधुबनी) में हुआ। पं० उमानाथ झा आप के पिता थे। आप ने मध्यमा तथा साहित्य-शास्त्री की परीक्षाएं उत्तीर्ण की हैं। वर्त्तमान में आप विशुद्धानन्द हास्पिटल में सेवारत हैं।

स्वाधीनता संघर्ष में १९४२ ई० के 'करो या मरो' आन्दोलन में आप ने संगीत के माध्यम से जनजागरण का कार्य किया। आप मूलतः नाट्य एवं रेडियो कलाकार हैं। पूर्वांचल भारत में आप ने हिन्दी, बंगला, भोजपुरी एवं राजस्थानी नाटकों के प्रदर्शन में भाग लिया। हिन्दी नाटकों में अभिनेत्री सीतादेवी के साथ आप की जोड़ी लोकप्रिय रही। भागलपुर में रेडियो नाटकों में भी आप ने भाग लिया। ●

रामखिलावन त्रिपाठी 'रुक्म'

आप का जन्म ८ जुलाई १९२७ ई० को बिलबई गाँव (बांदा) में हुआ। शिवदर्शन लाल त्रिपाठी आप के पिता थे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन (प्रयाग) की प्रथमा परीक्षा उत्तीर्ण कर आप पत्रकारिता एवं लेखन की ओर प्रवृत्त हुए।

मासिक पत्रों – राजश्री, गल्प भारती तथा पागल ; एवं हिन्दी सिने साप्ताहिक – स्क्रीन के आप सम्पादक रह चुके हैं। कुछ काल तक कलकत्ता से प्रकाशित नवभारत



टाइम्स में आप ने काम किया। वर्त्तमान में दैनिक सन्मार्ग के सम्पादकीय विभाग से आप सम्बद्ध हैं। कपूत कलकतिया के उपनाम से आप ने प्रायः ७०० व्यंग्य कविताएँ सन्मार्ग के लिए लिखीं हैं। आप ने प्रायः ४ दर्जन बालोपयोगी उपन्यास भी लिखे हैं। आप का सामाजिक नाटक 'अलका' प्रकाशित तथा मंचस्थ हो चुका है। आप ने अनेक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें प्रमुख हैं – रोशनी और रोशनी, अनचाही प्यास, अंगूरी, बर्फ की आग, मेरे दुश्मन मेरे मीत (सभी सामाजिक उपन्यास) तथा नीली रोशनी (जासूसी उपन्यास)।

सामाजिक सुधार के लिए आप प्रतिबद्ध हैं। आप सुधारवादी नवयुवक संघ के उपाध्यक्ष एवं सिने आर्ट आफ इण्डिया के अध्यक्ष रह चुके हैं। वर्त्तमान में पूर्वांचल नागरिक समिति के आप मानद सदस्य हैं।

आप जागरुक पत्रकार तथा सर्जनात्मक साहित्यकार हैं। •

निर्मला शर्मा (तालवार)

आप का जन्म १३ जुलाई १९२८ ई० को जोधपुर (राजस्थान) में हुआ। आप ने राजस्थान विश्वविद्यालय से दर्शन शास्त्र तथा कलकत्ता विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में एम. ए. की उपाधि प्राप्त की। सम्प्रति



आप लोरेटो कालेज में हिन्दी विभाग की अध्यक्षा हैं।

आप सुदीर्घकाल से बंगीय हिन्दी परिषद की निष्ठावान सदस्या हैं। आचार्य ललिता प्रसाद सुकुल के निधन के बाद १९५९ ई० से १९६८ ई० तक आप ने परिषद का सुचारु रूप से संचालन किया। 'जन भारती' पत्रिका के विभिन्न महत्वपूर्ण अंक – हिमालय, प्रेमचन्द, निराला, रवीन्द्र आदि आप के सम्पादन में निकल चुके हैं। आप के विभिन्न लेख एवं कहानियाँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

आप विदुषी तथा कर्मठ रमणी हैं। •

डॉ. शिवनारायण खन्ना

आप का जन्म १८ नवम्बर १९३४ ई० को इटावा (उत्तर प्रदेश) में हुआ है। हृदय नारायण खन्ना आप के पिता थे। आगरा विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में एम. ए. की उपाधि प्राप्त कर आपने कलकत्ता विश्वविद्यालय से पुस्तकालय विज्ञान में स्नातक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में द्वितीय स्थान सहित उत्तीर्ण की है। हिन्दी साहित्य